ॐ

श्री तीर्थंकर अर्चना

(वर्तमान चौबीसी पूजन)

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति : श्री तीर्थंकर अर्चना
(वर्तमान चौबीसी पूजन)
आशीर्वाद : संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित
आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार : अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजना : बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण : पावन वर्षायोग २०२०
आवृति : ११०० प्रतियाँ
लागत मूल्य : ५०/-
प्रकाशक : श्री जैनोदय विद्या समूह
प्राप्ति स्थान : **संजीव कुमार जैन**
2/251 सुहाग नगर, फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क–9412811798,9412623916,
9425128817
मुद्रक : विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

स्व. श्री पदमचंद जैन की पुण्य स्मृति में
श्रीमती महेन्द्रा जैन
श्री चक्रेशकुमार–श्रीमती ममता जैन
श्री पीयूष–श्रीमती नीतेश जैन
श्री वैभव–श्रीमती मनीषा जैन
शुभंकर, आदित्य, हितंकर, काव्या जैन, खरौआ परिवार
फिरोजाबाद (उ.प्र.)

अन्तर्भाव

श्री तीर्थंकर अर्चना (वर्तमान चौबीसी पूजन) यह कृति अत्यंत उपयोगी कृति है जो कि संतशिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक, कविहृदय शिष्य मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज के द्वारा तैयार की गई है। जिसका संकलन एवं संयोजन करके अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस कृति में देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति-पूजा करने का एक नया सोपान तैयार किया गया है। प्रभु भक्ति और गुणगान आगमानुकूल अत्यंत सरल भाषा एवं सारभूत शैली में प्रस्तुत किया गया है जिसके माध्यम से सभी भक्तगण नवीन भावों के साथ भाव-विभोर होकर प्रभु की भक्ति-पूजन एवं गुणगाान तथा स्तुति कर सकें।

मुनिश्री की लगभग १०० कृतियाँ हैं जिनमें विधान-पूजा, कहानी, आरती, भजन, नाटक, मुक्तक, कविताएँ आदि सम्मिलित हैं। आपके विधानों में चारों अनुयोगों के विषय समावेश हैं। पूजन करते समय ऐसा लगता है कि हम भगवान की भक्ति करने के साथ-साथ स्वाध्याय कर रहे हों। ऐसा प्रतीत होता है कि जो बातें यहाँ कही गईं हैं वे सब बातें हमारे आस-पास के वातावरण में समाविष्ट हैं। सिद्धान्त की बात को भी बड़ी ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। चौबीस तीर्थंकरों की पूजाओं में जयमाला यद्यपि थोड़ी बड़ी जरूर लगेंगी लेकिन उनमें तीर्थंकरों के जीवन-चारित्र को समाहित करने का प्रयास किया गया है। लोगों का यह कहना है कि इस जिनवाणी से पूजन करते समय ऐसा लगता है कि हम अपनी ही बात को भगवान से कह रहे हैं तथा अपनत्व भाव झलकता है।

मेरे संयोजना करने में मुद्रण आदि की जो कुछ भी त्रुटियाँ रह गईं हों तो क्षमायाचना पूर्वक निवेदन करता हूँ कि पाठकगण उन्हें आगमानुसार समझकर धर्मध्यान करें। जिन्होंने इस कृति के प्रचार-प्रसार में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से किसी भी माध्यम से सहयोग किया है वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इस जिनवाणी के माध्यम से सभी लाभ लें इसी भावना के साथ गुरुदेव और मुनि श्री के चरणों में नमन...।

बा. ब्र. संजय, मुरैना

विषय-सूची

विषय	पृ.क्र.
१. मंगल मंत्र-मंगल भावना	५
२. श्री नवदेवता पूजन	६
३. श्री चौबीसी पूजन	११
४. कुण्डलपुर बड़ेबाबा पूजन	१६
५. श्री वृषभनाथ पूजन	२२
६. श्री अजितनाथ पूजन	२९
७. श्री शम्भवनाथ पूजन	३५
८. श्री अभिनन्दननाथ पूजन	४१
९. श्री सुमतिनाथ पूजन	४८
१०. श्री पद्मप्रभ पूजन	५४
११. श्री सुपार्श्वनाथ पूजन	६१
१२. श्री चन्द्रप्रभ पूजन	६७
१३. श्री सुविधिनाथ पूजन	७२
१४. श्री शीतलनाथ पूजन	७८
१५. श्री श्रेयांसनाथ पूजन	८४
१६. श्री वासुपूज्य पूजन	९०
१७. श्री विमलनाथ पूजन	९७
१८. श्री अनंतनाथ पूजन	१०४
१९. श्री धर्मनाथ पूजन	११०
२०. श्री शांतिनाथ पूजन	११६
२१. श्री कुंथुनाथ पूजन	१२४
२२. श्री अरनाथ पूजन	१३०
२३. श्री मल्लिनाथ पूजन	१३६
२४. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन	१४३
२५. श्री नमिनाथ पूजन	१४८
२६. श्री नेमिनाथ पूजन	१५४
२७. श्री पार्श्वनाथ पूजन	१६२
२८. श्री महावीर पूजन	१६८
२९. श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली पूजन	१७६
३०. श्री शांति-कुंथु-अरनाथ पूजन	१८०
३१. पंच बालयति तीर्थंकर पूजन	१८५
३२. माहार्घ्य-शान्तिपाठ-विसर्जन	१९०

नित्य पूजन खण्ड

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहन्ताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नवदेवेभ्यो नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद-विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चौबीसी पूजन

(मात्रिक सवैया)

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय - चौबीसी पूजनवत्)

हम लाए प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने॥
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

चंदन सम प्रभु के धाम, चंदन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चंदन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जो दे दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिनको पुंज धरें॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो॥
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

आतम पुद्गल का बन्ध, सारे द्वन्द्व करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को॥
हम फल लाए जिनद्वार, निज के रागी हो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

वर्तमान में गर्भ के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में जन्म के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में तपों के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में ज्ञान के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में मोक्ष के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।
जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोऽस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाएँ मिलें निज मुक्ति सों॥
भव चक्र निवारी, परिग्रह हारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शम्भव सम्भव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥ १॥
जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।
जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥२॥
जय सुविधिनाथ दें सुविधिनाँव, जय शीतल प्रभु दें आत्मछाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश, जय वासुपूज्य ब्रह्मा-विलास॥३॥
जय विमलनाथ हो चित बसंत, जयजय अनन्त प्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शान्तिप्रदाता शान्तिनाथ॥४॥
जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्ति यान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥५॥

जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय ऋद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥६॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो॥
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥
प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जाएँ।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गाएँ॥

(सोरठा)

भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

छोटा भले हो
दर्पण मिले साफ
खुद को देखो

कुण्डलपुर बड़ेबाबा पूजन

स्थापना (सवैया मात्रिक छन्द-२१ मात्रा)

(ज्ञानोदय)

हे सुखकारी! अतिशयकारी, पूज्य बड़ेबाबा सुखकार।
कुण्डलपुर पर्वत पर शोभित, जिन्हें पूजते सुर-नर-नार॥
पूजा को हम द्रव्य सँजोकर, करते आह्वानन नत माथ।
हृदय कमल के उच्चासन पर, आन विराजो मेरे नाथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः हे वृषभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बाह्य मैल से देह मलिन है, उसको जल से सब धोते।
देह सजाकर सब खुश हैं पर, कर्म रोग से सब रोते॥
जनम जरा मृति राग द्वेष को, धोने को हम सब आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, शुचि जल पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

क्रोध आग है महा भयङ्कर, जिसमें जलते संसारी।
आतम वैभव जला उसी में, दुखी भटकते नर नारी॥
तन मन आतम शीतल करने, सभी ताप हरने आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, चंदन पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

धन बल सत्ता रूप सम्पदा, पा करके जड़ की माया।
नश्वर जीवन में भूले हम, अक्षय आतम ना ध्याया॥
तजकर दुखद जगत पद सारे, प्रभु जैसे बनने आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, अक्षत पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् ...।

सब रोगों में महारोग है, कामदेव जिसको कहते।
जिसके रोगी भव-भव भटकें, सब दुख संकट वे सहते॥
तीन लोक के इस राजा पर, विजय प्राप्त करने आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, पुष्प समर्पण को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं...।

क्षुधा रोग के कारण हम सब, पाप बन्ध करते जाते।
इसकी औषध करने को हम, भक्ष्याभक्ष्य भखे जाते॥
रोग निरन्तर बढ़ता जाता, इसे नाशने अब आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, शुभ नैवेद्य भेंट लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं यें बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह तिमिर के कारण जग में, चारों ओर अँधेरा है।
महाबली इस राजा का ही, सारे जग में डेरा है॥
ज्ञान-दीप के प्रभा पुञ्ज को, देख मोह तम नश जाए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, दीपक पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

अच्छे बुरे सभी कर्मों ने, हमको बाँधा इस जग में।
सब जल जाता ये ना जलते, सुख-दुख देते पग-पग में॥
धूप सुगन्धी तव-पद-रज से, कर्माष्टक झट जल जाए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, धूप चढ़ाने को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

फल की इच्छा से इस जग के , हमने काम किए सारे ।
पाए खुशी क्षणिक फल पाकर, दुखी हुये जब हम हारे॥
दुखी जगत के सब फल तजकर, मोक्ष महाफल मन भाये।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, शुभ फल पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय मोक्षमहाफल-प्राप्तये फलं...।

शुचि जल चंदन अक्षत लाए, शुद्ध पुष्प नैवेद्य लिए।
दीप धूप नाना फल मिश्रित, श्रेष्ठ अर्घ्य हम भेंट किए॥
अर्घ्य चढ़ाने वाले भविजन, अनर्घपद आतम पाए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, अर्घ्य चढ़ाने को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

दूज कृष्ण आषाढ़ को, कुण्डलपुर के नाथ।
वसे गर्भ मरुमात के, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गल-मण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र कृष्ण नवमी तिथी, कुण्डलपुर के नाथ।
जन्मे नाभिराय के, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में मुनि बने, कुण्डलपुर के नाथ।
नग्न दिगम्बर रूप को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, कुण्डलपुर के नाथ।
जगतपूज्य ज्ञानी बने, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गल-मण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा चौदस माघ को, कुण्डलपुर के नाथ।
मोक्ष गए कैलाश से, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गल-मण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः।

जयमाला (दोहा)

नाथ बड़े बाबा बड़े, स्वामी परम दयाल।
भक्ति सहित गुणगान की, कथा करूँ जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

मध्यप्रदेश दमोह जिले में, कुण्डलपुर इक ग्राम रहा।
इसके दक्षिण में इक पर्वत, कुण्डलगिरि शुभधाम रहा॥
ऊपर नीचे जहाँ बहुत से, मन्दिर प्रतिमाएँ प्यारी।
बीचों-बीच बड़ेबाबा की, प्रतिमा है अतिशयकारी॥१॥
अतिशय की है कथा निराली, किंवदन्ति व्यापारी की।
ऐसे पर्वत पर प्रभु आए, खुशी प्रजा तब सारी थी ॥
पद्मासन प्रतिमा मनहारी, चर्चित देश विदेशों में।
तब औरंगजेब था आया, धर्म विरोधी भेषों में॥२॥
मूर्ति विरोधी उसने जैसे, घात लगायी बाबा पर।
दूध धार बह शहद-मक्खियाँ, देखा भागा वह डरकर॥
देखा अतिशय जब वह उसने, बना मूर्ति पूजक सच्चा।
नहीं मूर्तियाँ अब तोडूँगा, नियम लिया उसने अच्छा॥३॥

पन्ना का राजा बेघर था, राज्य हारकर वह अपना।
मन्दिर जीर्णोद्धार कराकर, पूर्ण हुआ उसका सपना॥
बहुत-बहुत है अतिशय प्यारे, श्रद्धा के आधार रहे।
नाथ अनाथों के हो प्रभु तुम, सबको भव से तार रहे॥४॥

चरण आपके तारणहारे, रोग शोक भय नाशक हैं।
इसीलिए तो तुमको ध्याते, सच्चे योगी साधक हैं॥
विद्यागुरुवर छोटेबाबा, पहली बार यहाँ आए।
मन्दिर छोटा सा देखा तो, बहुत बड़ा सब बनवाए॥५॥

उसमें बाबा जाएँ कैसे?, सभी ओर यह चर्चा थी।
किन्तु फूल सी उड़कर पहुँची, भक्ति-पुण्य गुरु अर्चा थी॥
बहुत बड़ा यह अतिशय देखा, किए विहार बड़ेबाबा।
श्रद्धालु लाखों दर्शक थे, संघ सहित छोटेबाबा॥६॥

छोटेबाबा ने उच्चासन, दिया बड़ेबाबा को ज्यों।
बड़ा संघ छोटेबाबा का, किया बड़ेबाबा ने त्यों॥
अट्ठावन बहिनों की दीक्षा, हुई आर्यिका श्रेष्ठ बनीं।
दोनों बाबा इक दूजे का, रखते हैं नित ध्यानधनीं॥७॥

ज्ञान-सिन्धु के शुभाशीष से, कुण्डलपुर जब गुरु आए।
कृपा बड़ेबाबा की पाकर, समवशरण सी छवि पाए॥
छोटेबाबा का सपना जो, हुआ समय पाकर सच्चा।
बहुत विरोधी होने पर भी, दिया उच्च आसन अच्छा॥८॥

जो भी आते द्वार आपके, मन वांछित फल पाते हैं।
उभय लोक के वैभव पाकर, मुक्ति रमा पा जाते हैं॥
सो मिलकर हम भक्त पुकारें, टेर सुनो अब तो बाबा।
'सुव्रत' धरकर तुमको पूजें, अपने सम कर लो बाबा॥९॥

(दोहा)

सद्गुण के भण्डार हैं, वृषभनाथ भगवान।
पूजा क्या ? जयमाल क्या ? मैं बालक नादान॥
फिर भी श्रद्धावश किया, पूजन वा जयमाल।
उसका फल बस यह मिले, छूटे भव जंजाल॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पूज्य बड़ेबाबा करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
सब कष्टों को मेट दो, वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

चौबीस तीर्थंकरों के नाम व चिह्न

वृषभनाथ का बैल चिह्न है, हाथी अजितनाथप्रभु का।
शम्भव प्रभु का घोड़ा प्यारा, बन्दर अभिनन्दनप्रभु का॥
सुमतिनाथ का चकवा पक्षी, पद्मप्रभू का लालकमल।
सुपार्श्वप्रभु का चिह्न साँथिया, चन्द्रप्रभू का चन्द्र विकल॥
मगर चिह्न प्रभु पुष्पदंत का, कल्पवृक्ष शीतलप्रभु का।
है गैंड़ा श्रेयांसनाथ का, भैंसा वासुपूज्यप्रभु का॥
विमलनाथ का सुन्दर शूकर, अनन्त जिनवर का सेही।
धर्मनाथ का वज्रदण्ड अरु, शान्तिनाथ का हिरण सही॥
कुन्थुनाथ का बकरा प्यारा, मछली अरनाथप्रभु का।
मल्लिनाथ का चिह्न कलश है, कछुआ मुनिसुव्रतप्रभु का॥
श्वेतकमल नमिनाथ देव का, नेमिनाथ का शंख रहा।
पार्श्वनाथ का चिह्न सर्प अरु, वर्द्धमान का सिंह रहा॥

श्री वृषभनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

भूत भविष्यत् आज भी, आदिप्रभु का नाम।
खुशियाँ दे कमियाँ हरे, अतः नमन अविराम॥

(शुद्ध गीता)

जिन्हें सुर नर सभी पूजें, जिन्हें ऋषि संत ध्याते हैं।
जिन्हें मन में वसा करके, भगत भव पार जाते हैं॥
जिन्होंने एक झटके में, कथा संसार की त्यागी।
उन्हीं की अर्चना करने, विनत हम हैं चरण रागी॥
मरुदेवी के नन्दन वो, वही नाभि के लाला हैं।
प्रथम जिनका मिला दर्शन, जिन्होंने धर्म पाला है॥
पतित भव्यों के जो स्वामी, जिन्होंने कर्म तोड़े हैं।
उन्हीं की वन्दना करने, भगत ने हाथ जोड़े हैं॥

(दोहा)

आदि ब्रह्म आदीश हैं, आदिनाथ भगवान्।
हृदय हमारे आइए, हम पूजें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सभी मानव यहाँ रोगी, दुखी संसार के जल से।
करो नीरोग हम सबको, तुम्हें हम पूजते जल से॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जलाता ताप भव का फिर, नमक भी घाव पर छिड़के।

तुम्हारी भक्ति का चंदन, हरे भव ताप बढ़-चढ़ के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं...।

सभी संसार के पद तो, दिए आपद घुमाते हैं।
मिटें आपद बनें अक्षय, तुम्हें तंदुल चढ़ाते हैं॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

सुगंधी काम की पाके, भ्रमर बन मर रहे प्राणी।
तुम्हारे चरण का सौरभ, हरे दुर्वेदना-कामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सभी पापों की जड़ रसना, रिसाने की तमन्ना है।
तुम्हें नैवेद्य कर अर्पण, हमें तुमसा ही बनना है॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अँधेरा टिक नहीं सकता, तुम्हारा नाम सुनकर के।
करो रोशन हमारा मन, उतारें आरती झुक के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जलाएँ धूप कर्मों की, चढ़ाएँ धूप जो स्वामी।
वही चमकें वही महकें, वसो जिसके हृदय स्वामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

विषैले फल सभी जग के, सुधा कह खा रहे हम तो।
प्रभु! विष वेदना हर लो, चढ़ा हम फल रहे तुमको॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवीं भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, 'जिन' से है अनुराग॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण चौदस दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

आदिनाथ भगवान् की, महिमा अपरंपार।
पूजे जो धर ध्यान वह, राग-द्वेष से पार॥

(ज्ञानोदय)

वृषभदेव या आदिदेव जो, ब्रह्मदेव पुरुदेव रहे।
मरुदेवी या नाभिराय सुत, प्रथमदेव जिनदेव कहे॥
जिनके सहस्त्रनाम हुए जो, आदि प्रवर्तक कहलाए।
ऐसे पहले तीर्थंकर के, गुण गाने हम भी आए॥ १॥
वृषभनाथ दसवें भव में नृप, रहे महाबल विद्याधर।
एक माह जब उम्र शेष तब, नन्दीश्वर का उत्सव कर॥
बाइस दिन की कर सल्लेखन, प्रथम स्वर्ग ललितांग हुए।
धर्मसहित ललितांग मरण कर,वज्रजंघ प्रिय पुत्र हुए॥ २॥
वज्रजंघ श्रीमति रानी ने, दो चारण मुनि सत्कारे।

जो उनके ही अंतिम सुत थे, दिए पूजकर आहारे ॥
इसी समय चारों मंत्री भी, नकुल व्याघ्र वानर शूकर।
मुनि से सुनकर जनम कथा सब, खुश थे मुनि चरणा छूकर॥ ३॥
आप आठवें भव तीर्थंकर, बन जब मोक्ष विराजेंगे।
तब श्रीमति श्रेयांस बनेगी, आठों भी शिव पाएंगे॥
वज्रजंघ श्रीमति इक रात्रि, दम घुटने से मरण किए।
पात्रदान से भोगभूमि में, दोनों आर्या आर्य हुए॥ ४॥
पात्रदान के अनुमोदन से, वहीं चार उत्पन्न हुए।
पात्रदान की महिमा सुनकर, हम सब भक्त प्रसन्न हुए॥
आर्य गया ऐशान स्वर्ग में, देव हुआ श्रीधर नामी।
उसी स्वर्ग में चारों जन्मे, उसी स्वर्ग आर्या जन्मी॥ ५॥
श्रीधर हुआ सुविधि केशव फिर, वज्रनाभि चक्रेश हुआ।
आठों जीव वहीं फिर जन्मे, श्रीमति तब धनदेव हुआ॥
वज्रनाभि मुनि बन गुरु पद में, भावनाएँ सोलह भाए।
तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, सुर सर्वार्थसिद्धि पाए॥ ६॥
तज सर्वार्थसिद्धि सुर आलय, वह अहमिन्द्र यहाँ आए।
भरत क्षेत्र के अंतिम कुलकर, नाभिराय सुत बन भाए॥
हुण्डा अवसर्पिणी काल में, माँ को सोलह स्वप्न दिए।
रत्नवृष्टि देवों ने की तब, नगर अयोध्या जन्म लिए॥ ७॥
तीन लोक के जीवों को तब, मिली शान्ति केवल पल भर।
इन्द्राज्ञा से शचि ने तब ही, मरुदेवी को मूर्च्छित कर॥
लिया गोद में ज्यों जिन बालक, तब सम्यग्दर्शन पाके।
दिए इन्द्र को भावी भगवन्, 'पुण्यफला' के गुण गाके॥ ८॥

ऐरावत हाथी पर लेकर, चला इन्द्र सौधर्म वहाँ।
सुमेरु पर्वत पाण्डुक वन में, मणिमय पाण्डुकशिला जहाँ॥
एक हजार आठ कलशों में, क्षीर सिन्धु का जल भर के।
किया जन्म अभिषेक वहाँ पर, पूर्व दिशा में मुख करके॥ ९॥
फिर सौधर्म इन्द्र ताण्डव कर, 'वृषभ' नाम रक्खा उनका।
हुआ सुनन्दा यशस्वती से, विवाह बन्धन फिर जिनका॥
ब्राह्मी भरत सहित सौ सुत को, यशस्वती ने फिर जन्मा।
और सुन्दरी बाहुबली को, सुनो! सुनन्दा ने जन्मा॥ १०॥
ब्राह्मी तथा सुन्दरी को दे, अंक तथा लिपि विद्याएँ।
पुत्र भरत वा बाहुबली को, दी बाकी सब शिक्षाएँ॥
वर्णाश्रम षट्कर्म बनाकर, पूज्य जिनालय बनवाए।
पिता राज्य अभिषेक करा के, तुमको राजा बनवाए॥ ११॥
नीलांजना अप्सरा का जब, नृत्य देख वैराग्य हुआ।
दिया भरत को राज्य तथा फिर, लौकान्तिक आगमन हुआ॥
देवों ने वैराग्य सराहा, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ।
बैठ सुदर्शन नाम पालकी, सिद्धार्थक वन गमन हुआ॥ १२॥
अहो! नमः सिद्धेभ्यः कहकर, पंचमुष्टि केशलौंच किए।
संग चार हजार राजा के, जिन दीक्षा ले धन्य हुए॥
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तब, छह माहों का योग धरा।
मरीचि ने मत कपिल बनाया, सभी भ्रष्ट थे हाल बुरा॥ १३॥
अन्तराय जब हुआ वर्ष भर, तो श्रेयांस सोम राया।
अक्षय तृतीया को इक्षु रस, देकर दानतीर्थ पाया॥
पंचाश्चर्य हुए दाता घर, सबने जय-जयघोष किए।

एक हजार वर्ष तप करके, घातिकर्म प्रभु नाश दिए॥ १४॥
समवसरण में तीर्थंकर प्रभु, केवलज्ञानी धरम दिए।
रत्न त्याग तब प्रथम भरत जी, जिन अर्चन कर नमन किए॥
भव्य पुण्य से विहार करके, धर्मचक्र को चला दिया।
फिर कैलाश धाम पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिया॥ १५॥
काल दोष से समय पूर्व में, लेकर जन्म मोक्ष पाए।
करके उत्सव भक्त आपकी, पदवी पाने ललचाए॥
हम भी नाथ! आपके गुण गा, मना रहे आनन्द अहो।
रागद्वेष भी मंद हुआ है, मुखर भक्ति का छन्द प्रभो॥ १६॥
हे स्वामी! बस नाम आपका, हरता संकट द्वन्द्व यहाँ।
हरे दुराग्रह संग्रह परिग्रह, दे चैतन्यानन्द महा॥
पर स्वार्थी तव नाम बाँधते, गुरु ग्रह के परिहारों से।
वे क्या जाने गुरु ग्रह टलता, बस तेरे जयकारों से॥ १७॥
गुण गाने का मात्र प्रयोजन, आपस में वात्सल्य फले।
तत्त्व स्वरूप विचारें सब जन, राग-द्वेष की शल्य टले॥
'विद्या-सुव्रत' सब स्वीकारें, रहे सभी का मन चंगा।
विश्व शान्ति हो, सभी मुक्त हों, बहती रहे धर्म गंगा॥ १८॥

(दोहा)

आदिनाथ भगवान् सम, उतरे कार्मिक भार।
यह पाने वरदान हम, बोलें जय जयकार॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

आदिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, आदिनाथ जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

श्री अजितनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अजितनाथ भगवान् को, मन मंदिर में धार।
करें भक्ति आराधना, सुखी बने संसार॥

(हरिगीतिका)

दूजे जिनेश्वर प्रभु अजितजी, नाथ! भक्तों के रहे।
काया सुनहरी सी चमकती, स्वर्ग के त्यागी रहे॥
हो मोह शत्रु के विजेता, धर्म के नेता रहे।
हम भी बनें रिपु कर्मजेता, मोक्ष पर ललचा रहे॥

(दोहा)

अजितनाथ तीर्थेश का, हाथी चिह्न महान्।
जिनकी अर्चा हम करें, हाथ जोड़ धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं....)

मिथ्यात्व के विष नीर से तो, हम सदा मरते रहे।
फिर जन्म मृत्यु की व्यथाएँ, रोज हम सहते रहे॥
सम्यक्त्व श्रद्धा जल मिले भव, -रोग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

क्या मूल्य चंदन का रहा जब, चरण चंदन पा गए।
फिर भी करें हम अर्चना तो, शरण प्रभु की आ गए॥

हमको मिले निर्मल चिदातम, ताप का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पर्याय पुद्गल की विनश्वर, में फँसा अज्ञान है।
जिन भक्ति से शिव मुक्ति हो, इस भक्त का अरमान है॥
उज्ज्वल धवल अक्षत चढ़ा, भव चक्र का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कामांध से व्याकुल हमें तो, गालियाँ पल-पल मिलीं।
ना भक्ति की कलियाँ खिलीं ना, मुक्ति की गलियाँ मिलीं॥
चारित्र से चेतन सजे अब, काम का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

तन की तनिक सी भूख से हम, रात-दिन व्याकुल हुए।
कब भूख मन की दूर हो यह, सोच हम आकुल हुए॥
संयम मिले नैवेद्य अर्पण, से क्षुधा परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मिथ्या मोह तम से, रो रही है आतमा।
साँची क्रिया प्रभु अर्चना, खोयी कहाँ परमातमा॥
जिन-दीप से निज-दीप उजले, मोह का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

हम आज तक तो जल न पाए, किन्तु फिर भी जल रहे।
रत्नत्रयों के बिन तपस्या, ज्ञान तप निष्फल रहे॥

अब धूप खे जिन रूप पाएँ, कर्म का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

क्या राग के क्या द्वेष के क्या, मोह के फल मिल रहे।
भूले तुम्हें भूले हमें हम, हाय! किस काबिल रहे॥
जिन-भक्ति फल वैराग्य पाएँ, राग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

पर के कभी कर्त्ता बने, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान के ऊँचे हिमालय, पर वसे ऊँचे तने॥
कैसे चढ़ायें अर्घ्य स्वामी, अर्चना कैसे करें।
हे जिन! करो तुम भक्त निज सम, प्रार्थना इससे करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्णा ज्येष्ठ अमास को, छोड़ा विजय विमान।
विजया माँ के गर्भ में, वसे अजित भगवान्॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण-अमावस्यायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला दशमी माघ को, जन्मे अजितकुमार।
जितशत्रु के आँगने, जय-जय हो त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला नवमी माघ को, तजे अजित दुख धाम।
संत बने अंतरमुखी, सुर-नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला पौष को, पाकर केवलज्ञान।
अजित बने भगवन अजित, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ल पंचमी चैत्र को, मधुवन से कर ध्यान।
गए अजितप्रभु मोक्ष को, जिन को नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल पंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अजितजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अजितनाथ प्रभु की कथा, भक्त सुनाएँ आज।
कर्मशत्रु को जीतने, दो चरणों का राज॥

(ज्ञानोदय)

वत्स देश का नगर सुसीमा, वहाँ विमलवाहन राजा।
सुन्दर चतुर गुणी उत्साही, करे धर्ममय हित काजा॥
सदा धर्म से पुण्य, पुण्य से, अर्थ भोग हो प्राप्त यहाँ।
इसीलिए वह जैनधर्म का, धर्मात्मा हो गया अहा॥ १॥

किसी समय वह हो वैरागी, रत्नत्रय धर संत बना।
जिनदीक्षा ले आत्म ज्ञानमय, निर्मोही निर्ग्रन्थ बना॥
तीव्र तपस्या करके उसने, ग्यारह अंगों को जाना।
भावनाएँ फिर सोलह भाकर, तीर्थंकर का पद बाँधा॥ २॥

और अन्त में णमोकार को, जप-जप समाधिमरण किया।
विजय अनुत्तर स्वर्ग पहुँचकर, स्वर्ग सुखों को वरण किया॥
पन्द्रह माहों तक देवों ने, दिव्य रत्न सुर बरसाये।

फिर सोलह सपनों को देकर, सुर से भू पर प्रभु आए॥ ३॥
जन्म समय सौधर्म इन्द्र ने, मेरु पर अभिषेक किया।
अजितनाथ शुभ नामकरण कर, न्यारा ताण्डव नृत्य किया॥
जन्म हुआ तो बन्धु वर्ग भी, रिपुओं पर जय विजय किए।
सभी शत्रुओं पर जय पाकर, अजितनाथ साम्राज्य किए॥ ४॥
आयु बहत्तर लाख पूर्व की, देह सुनहरी सी पाई।
साढ़े चार सौ धनुष ऊँचाई, सुख सामग्री सब पाई॥
कभी महल की छत पर बैठे, उल्कापात तभी देखा।
भव-भोगों से विरक्त हो तब, फिर वैराग्य पाठ सीखा॥ ५॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, तब वैराग्य सराहा था।
जिससे प्रभु ने जूठन जैसा, राज्य पाठ सब त्यागा था॥
किया राज्य-अभिषेक पुत्र का, उसे राज्य अपना सौंपे।
बैठ सुप्रभा शिविका पर फिर, स्वयं सहेतुक वन पहुँचे॥ ६॥
नमः नमः सिद्धेभ्यः कह कर, सप्तपर्ण तरु तल में जा।
एक हजार राजाओं के सह, नियम लिया फिर बेला का॥
जिनदीक्षा ली साँयकाल में, ज्ञान मनःपर्यय पाया।
ब्रह्मा नृप ने प्रथम दान दे, पंचाश्चर्य पुण्य पाया॥ ७॥
मौन रहे छद्मस्थ काल में, बारह बरस तपस्या की।
केवलज्ञानी धर्मात्मा बन, हर ली कर्म समस्या भी॥
समवसरण में दिव्य देशना, देकर धर्मघोष की जय।
अंतर बाहर का वैभव पा, चमत्कार पाया अतिशय॥ ८॥
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, अजित नाम सार्थक करके।
एक माह तक योग निरोध कर, सारे कर्म नष्ट करके॥

प्रातः प्रतिमायोग धार कर, मोक्ष पधारे स्वामी जी।
अजितनाथ सम हम बन जाएँ, अतः करें प्रणमामि जी॥ ९॥
अजितनाथप्रभु के शासन में, सगर चक्रवर्ती जन्मा।
जिसके साठ हजार पुत्र थे, सुन्दर गुणी महा धन्या॥
शुद्ध वंश के पुत्र पिता के, आज्ञाकारी भी होते।
अतः पिता की आज्ञा से वे, धर्म कार्य से अघ धोते॥ १०॥
भरत चक्रवर्ती से निर्मित, श्री कैलाश शिखर पर जो।
रत्नों के चौबीस जिनालय, अरिहंतों के मंदिर वो॥
चारों ओर उसी पर्वत के, परिखा कर गंगा भर दी।
दण्डरत्न से कार्य पूर्ण कर, जिनशासन की जय कर दी॥ ११॥
पुत्रों के मरने की झूठी, खबर सगर ने जब पाई।
भागीरथ को राज्य दिया तब, जिनदीक्षा फिर अपनायी॥
उधर पिता के मुनि बनने की, खबर मिली जब पुत्रों को।
तो पुत्रों ने जिनदीक्षा ले, धारा शुभ चारित्रों को॥ १२॥
पिता पुत्र सम्मेदशिखर से, मोक्ष पधारे तप करके।
और यहाँ भागीरथ राजा, बने संत सब तज करके॥
ध्यानी मुनि भागीरथ जी के, चरण पखारे इन्द्र महान्।
वह जलधारा गंगा पहुँची, तब से गंगा तीर्थ समान॥ १३॥
भागीरथ गंगा के तट से, तप करके निर्वाण गए।
सुनकर कथा धर्म की हम सब, जिन-गंगा पहचान गए॥
सुनो! एक सौ सत्तर पद जो, तीर्थंकर के बतलाए।
अजितनाथ के शासन में वो, भरे जिनागम गुण गाए॥ १४॥
द्वितीय होकर अद्वितीय जो, अजितनाथ भगवान् हुए।

जिनका नाम अकेला सुनकर, भक्तों के कल्याण हुए॥
फिर भी गुरु ग्रह बाधा हरने, अज्ञानी प्राणी डोलें।
ग्रह क्या? मृत्युंजय बनते जो, अजितनाथ की जय बोलें॥ १५॥

शक्ति भक्ति क्या?भुक्ति मुक्ति क्या?, हमको इसका ज्ञान नहीं।
राग द्वेष क्या, मोह पाप क्या, इसकी भी पहचान नहीं॥
किन्तु आप सम चिदानन्द को, 'सुव्रत' पाने ललचाए।
अतः अर्चना की गंगा में, अवगाहन करने आए॥ १६॥

(दोहा)

अजितनाथ को पूजकर, करें प्रार्थना आज।
कर्म शत्रु पर जय मिले, मिले मोक्ष साम्राज्य॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अजितनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अजितनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री शम्भवनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

तन से तो दूरी रही, मन से नहिं प्रभु दूर।
दूरी मजबूरी मिटे, यों हो कृपा जरूर॥

(ज्ञानोदय)

शम्भवप्रभु के पद पंकज में, हमने शीश झुकाया है।
भाग्योदय पुण्योदय अब हो, यही भाव मन आया है॥

काल अनन्त गंवाया हमने, शाम सबेरे नित टेरा।
विसराओ ना देर लगाओ, दो डेरा हर लो फेरा॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(अडिल्ल)

मिथ्यामल को सम्यग्दर्शन धार दो।
अर्पित नीर हमें भव तीर उतार दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

ताप तनावों वाला हमसे दूर हो।
अर्पित चंदन हमको छाँव जरूर दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

यहाँ आप सम शाश्वत अक्षय कौन हैं।
पुंज चढ़ाके भक्त आपके मौन हैं॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

विषय चाह से आत्म दाह हो रोज ही।
पुष्प चढ़ाएँ निज का खिले सरोज भी॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भेद-ज्ञान बिन क्षुधा रोग का दुख बढ़े।
मिले दवा नैवेद्य चढ़ाने हम खड़े॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह घटा बस ज्ञान सूर्य से हारती।
मिले ज्ञान रवि अतः करें हम आरती॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

द्रव्य भाव नो कर्म हरें चिद्रूप को।
कर्म जलाने चढ़ा रहे हम धूप को॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

त्याग पाप-फल जिनवर की जय बोलिए।
फल अर्पण कर द्वार मोक्ष का खोलिए॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

(ज्ञानोदय)

अपनों ने तो बस ठुकराया, लेकिन सद्गुरु अपनाये।
सद्गुरु ने ज्यों अपनाया तो, शरण आपकी हम पाए॥
अर्घ्य चढ़ा विश्वास दिलाएँ, अगर हमें अपनाओगे।
शम्भवप्रभु अपने बाजू में, जल्दी हमको पाओगे॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, तज ग्रैवेयक स्थान।
गर्भ सुसेना के वसे, प्रभु शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन-शुक्ल-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे शम्भवनाथ।
जितारि नृप के आँगने, पर्व किए सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-शुक्ल-पूर्णिमायां जन्म-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

मगशिर शुक्ला पूर्णिमा, राग आग सब छोड़।
पंथ धार निर्ग्रन्थ प्रभु, जिन्हें नमन कर जोड़॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल-पूर्णिमायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्णा चौथ में, पाकर केवलज्ञान।
श्रावस्ती के लाल को, नमन करें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-कृष्ण-चतुर्थ्यां केवलज्ञान-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल छठ को प्रभु, पाए मोक्ष महीश।
धवलकूट सम्मेदगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शम्भवजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (सोरठा)

शम्भवप्रभु जिनराज, विश्वकार्य सम्भव करो।
गुण गाएँ हम आज, निज स्वभाव में अब धरो॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी कृपा दया को पाकर, कार्य असम्भव सम्भव हो।
जिनके नाम मात्र माला से, शुद्ध भावमय आतम हो॥
जिनके चरणा-चरण प्राप्त कर, मिलती इच्छित वस्तु हो।
उन शम्भवप्रभु के गुण गाएँ, बारम्बार नमोऽस्तु हो ॥१॥

एक विमलवाहन राजा था, वह ऐसा करके चिंतन।
यह संसारी जीव मृत्यु के, बीच खोजता है जीवन॥
मोहकर्म के विकट उदय से, यमराजों के दाँतों में।
फँसकर भी बचना नहिं चाहे, धिक्! धिक्! मिथ्या बातों में॥२॥

सीमित आयु को यह प्राणी, शरण माँगता कण-कण में।
यह मत उसको यम के मुख में, पहुँचा देता क्षण-क्षण में॥
हाय! हाय! अज्ञानी चेतन, फिर भी ना वैराग्य धरे।
दुखवर्धक भव-चक्र भ्रमण के, कर्तव्यों से राग करे ॥३॥

तृष्णा की संतप्त धूप से, आकुल व्याकुल होकर के।
विषय भोग की जीर्ण नदी के, तट की छाया पा करके॥
विषय भोग की करे सुरक्षा, और स्वयं को नष्ट करे।
अतः अनन्तानन्त भवों में, शुद्धातम को भ्रष्ट करे ॥४॥

यह चिंतन कर विरक्त हो फिर, मोक्षमार्ग स्वीकार किया।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥
फिर संन्यास क्रिया से तन तज, ग्रैवेयक अहमिन्द्र बने।
स्वर्ग त्याग शम्भव नृप बनकर, मेघ देख वैराग्य धरे ॥५॥

नर तन में यम नर्तन करके, नर तन का ही नाश करे।
प्रथम दगा दे दाग बाद में, इस पर ना विश्वास करे॥

तन से राग भोग नीरस जो, मूरख उन्हें सरस समझें।
यह संसार असार जानकर, ज्ञानी इन्हें तजें सुलझें ॥६॥
निज वैभव रत्नत्रय पाकर, जिन वैभव को पा जाओ।
आप स्वयं यमराज बनो तो, मृत्युंजय बन सुख पाओ॥
सार सार का सार ग्रहण हो, लौकान्तिक यों वचन कहे।
फिर सिद्धार्थ पालकी में प्रभु, बैठे वन को गमन करे ॥७॥
दीक्षित होकर बने स्वयंभू, ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा।
सुरेन्द्रदत्त को प्रथम दान का, मिला पुण्य सौभाग्य अहा॥
चौदह वय छद्मस्थ गुजारी, बेलामय निज ध्यान लगा।
चार घातिया जड़ें उखाड़ीं, पाया केवलज्ञान महा ॥८॥
देवों ने कैवल्य महोत्सव, खूब मनाया नाच बजा।
अनन्तचतुष्टय धारी प्रभु का, समवसरण फिर खूब सजा॥
जिसकी ज्योति 'जिन' से होती, 'जिन' के मोती चित् खोती।
जिन महिमा में गद्-गद् जिनकी, आतम रोती दुख धोती ॥९॥
ऐसे शम्भवप्रभु ने सुन लो, चन्द्र तिरस्कृत कर डाले।
राहू केतु शनि कृष्ण शुक्ल के, पक्ष बहिष्कृत कर डाले॥
और अंत में एक माह जब, आयु कर्म अवशिष्ट रहा।
गिरि सम्मेदशिखर पर धारा, प्रतिमायोग विशिष्ट रहा ॥१०॥
जन्म शाम को मोक्ष शाम को, पाए नन्तकाल विश्राम।
कार्य असम्भव सम्भव करने, भक्त मुक्ति को करें प्रणाम॥
मिले चिदातम निज शुद्धातम, अगर कृपा हो तेरी नाथ।
अतः भक्ति का रचा उपक्रम, रहे हमारे सिर पर हाथ ॥११॥
पर जिन महिमा जो नहिं जानें, जिन्हें आप पर नहिं विश्वास।

यहाँ-वहाँ सिर फोड़ें भटकें, करके अपना सत्यानाश॥
गुरुग्रह का वस करें निवारण, नाथ!आपका भजकर नाम।
वे क्या जानें शम्भव प्रभु जो, दें भव सुख भी दें निर्वाण ॥१२॥
सभी समस्याओं को हमने, बड़ा अभी तक मान लिया।
अतः समस्याओं ने हमको, चैन छीन दुख दान दिया॥
लेकिन शम्भवनाथ बड़े हैं, 'सुव्रत' ने पहचान लिया।
बड़ी समस्या कभी न हो सो,जिनपद का सम्मान किया ॥१३॥

(दोहा)

अश्व चिह्नमय शोभते, जिनवर शम्भवनाथ।
विश्व समस्या दूर हो, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शम्भवप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शम्भवप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अभिनन्दन प्रभु की यहाँ, गूँजी जय-जयकार।
पूजन के पहले करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(सखी)

हे परम पूज्य प्रभुवर जी! श्री अभिनन्दन जिनवर जी!
तुम हो देवन के देवा, हो भक्तों के शिवपुर भी॥

तुमने गुण वन्दन करने, चंचल मन-बंदर छोड़ा।
फिर ले रत्नत्रय घोड़ा, जग का आक्रन्दन तोड़ा॥
हम हैं संसारी प्राणी, भव-आक्रन्दन में चीखें।
क्या वन्दन नन्दन होता, यह पाठ कभी न सीखें॥
फिर भी अब उमड़ी भक्ति, सो पुलकित-पुलकित होके।
हम आज रचाएँ पूजा, बस भक्त आपके होके॥
कर्मों के बन्धन सारे, जग-आक्रन्दन दुखियारे।
सब संकट विकट समस्या, हर विघ्न कष्ट के नारे॥
बस नाम आपका सुनके, निर्बन्ध बने सब साथी।
तब ही अभिनन्दन प्रभु के, हम भक्त बने बाराती॥

(दोहा)

मन वृन्दावन में वसो, अभिनन्दन भगवान्।
भक्ति छाँव में चेतना, पाए चित्-विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जिनसे हमको दुख होते, वो बीज रोग के बोते।
हम उनको अपना मानें, जिनसे तो चेतन रोते॥
यह मिथ्या बुद्धि हरण को, दो शुद्ध आत्म जल स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

हम राग-द्वेष ज्वाला से, संतप्त हुए पल-पल में।
फिर चाह दाह से जलकर, मिल बैठे भव दल-दल में॥
अब शीतल चंदन जैसा, ज्ञानामृत गुण दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अब तक हमने जो पाया, कर तू-तू मैं-मैं उसमें।
जग क्षणभंगुर ना समझा, सब क्षत-विक्षत है जिसमें॥
अब शाश्वत अक्षत बनने, जिन रूप मिले बस स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब काम शील धन लूटे, हम मौन खड़े शरमाएँ।
तब लुटे-पिटे निर्बल हो, जिन ब्रह्म देख खिल जाएँ॥
हैं भक्ति-पुष्प प्रभु अर्पित, संयम सौरभ दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर द्रव्यों के सब व्यंजन, चखकर बीमार हुए हम।
निज आत्म सौख्य क्या होता, यह चख न सकी ये आतम॥
नैवेद्य करें हम अर्पण, जिन वचन दवा दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मोह आँधी से, प्रभु भक्ति-दीप बुझ जाता।
फिर ज्ञान-ज्योति बिन आतम, परतत्त्व प्रशंसा गाता॥
जन तजने जिन बनने को, जिन भक्ति दीप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों से बँधकर चेतन, हा! बिलख-बिलख कर विसरे।
जिन-रूप सहारा लेकर, चारित्र धारकर निखरे॥
यह भक्ति धूप है अर्पण, शुभ ध्यान धूप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

हम अशुभ पाप दुख करके, शुभ पुण्य कर्म सुख चाहें।
सो सुख नहिं हो दुख हो फिर, नहिं मिले मोक्ष की राहें॥
हमें अपने पास बुलाकर, निज परिणति फल दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

पर परिणति के लालच में, अनमोल रत्न ना समझे।
जिन दर्श आपके कर हम, अनमोल आत्म को समझे॥
गर कृपा आपकी हो तो, वह प्राप्त करें हम स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

शुक्ला छट वैशाख को, विजय स्वर्ग तज पाए।
सिद्धार्था के गर्भ में, अभिनन्दन प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ शुक्ल बारस जहाँ, जन्मे नन्दननाथ।
पिता स्वयंवर के यहाँ, किए पर्व सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

द्वादश शुक्ला माघ में, बन्धन क्रन्दन छोड़।
दीक्षा ले नन्दन जिन्हें, वन्दन हो सिर मोड़॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष शुक्ल चौदस मिली, निज निधि केवलराज।
जय हो अभिनन्दन विभो, नमन आपको आज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठी शुक्ल वैशाख को, गए मोक्ष के धाम।
नन्दनप्रभु गिरिराज को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

सत्य वचन से सिद्ध जो, अभिनन्दन जिनराज।
आनंदित नत हो कहें, जयमाला हम आज॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी जीवन रेखा टूटे, मुरझायी हो जीव लता।
घोर उदासी के बादल में, जिनको जाए मौत सता॥
रोग कष्ट से जो व्याकुल वो, भजकर अभिनन्दन प्रभु नाम।
हों मृत्युंजय सुन्दर सुखिया, अतः नमोऽस्तु हो अविराम॥ १॥

एक महाबल सुन्दर राजा, धन-वैभव जिसका भारी।
चारों वर्णों का भी रक्षक, न्याय पुण्य गुण यश धारी॥
बहुत काल भोगों में गुजरा, किन्तु तृप्त जब नहीं हुआ।
तो वैराग्य धार मुनि बनकर, शाश्वत आतम रूप छुआ॥ २॥

सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बन्ध किया।
अगले भव में अभिनन्दन प्रभु, बनने का अनुबन्ध किया॥
तजकर देह अनुत्तर पहुँचा, जहाँ भोग स्वीकार किए।
फिर जिन-भक्ति सहित सुर तजकर, धरती पर अवतार लिए॥ ३॥

माँ ने सोलह स्वप्न देखकर, जिनवर को सिर टेक दिया।
जन्म त्रिलोकीनाथ लिए जब, इन्द्रों ने अभिषेक किया॥
नाम आपका अभिनन्दन रख, लगा टक टकी ताक रहे।

बना हजारों, नयन भुजाएँ, करके ताण्डव नाँच रहे॥ ४॥
कुमारकाल दशा गुजरी तो, राज्य तुम्हीं को पिता दिए।
तुम्हीं राज्य उपभोग करो फिर, पिता स्वयं वैराग्य लिए॥
राजा बनकर राज्य प्रजा को, सुखी गुणी सम्पन्न किया।
तभी आपको बनते मिटते, मेघ महल ने खिन्न किया॥ ५॥
विनाशीक भोगों का वैभव, नष्ट हमें भी कर देगा।
पला-पुसा यह शरीर हमको, नगर-नारि सम तज देगा॥
हुए विरागी तो लौकान्तिक, देवों ने आ पूजा की।
बैठ हस्तचित्रा शिविका में, वन में जा जिन-दीक्षा ली॥ ६॥
ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, गए अयोध्या अगले दिन।
इन्द्रदत्त राजा ने विधिवत्, किया भक्ति से पड़गाहन॥
निरंतराय आहार हुए तो, नभ में जय-जय देव कहें।
अहो! दान यह अहो! पात्र यह, दाता को भी धन्य कहें॥ ७॥
मन्द-मन्द महकी वायु फिर, रत्न पुष्प नभ से बरसे।
ढोल नगाड़े नभ में गूँजे, जिससे भू-अम्बर हर्षे॥
खाद्य वस्तु अक्षीण यही तो, पंचाश्चर्य कहे जय-जय।
वर्ष अठारह मौन धारकर, बिता दिया छद्मस्थ समय॥ ८॥
दीक्षावन में असन वृक्ष के, नीचे आतम ध्यान हुआ।
बेला लेकर साँयकाल में, प्रभु को केवलज्ञान हुआ॥
दिव्य अर्चना कर देवों ने, समवसरण फिर सजा दिया।
जिस पर कमलासीन आपने, बिगुल धर्म का बजा दिया॥ ९॥
धर्मवृष्टि कर आर्यखण्ड का, प्रभु ने कण-कण शुद्ध किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किया॥

प्रातःकाल बहुत मुनियों के, साथ परमपद प्राप्त किया।
सिद्ध बने लोकाग्र विराजे, जीवन मरण समाप्त किया॥ १०॥
भक्ति सहित अभिनन्दन प्रभु का, इन्द्रों ने गुणगान किया।
मना मोक्षकल्याणक सादर, स्वर्ग लोक प्रस्थान किया॥
ऐसे वृषभनाथ जिनवर के, वंशज अभिनन्दन स्वामी।
निश्चयनय व्यवहार धर्ममय, मुक्त जिन्हें हम प्रणमामि॥ ११॥
ऐसे अभिनन्दन जिनवर जी, भव का वैभव हरण करें।
खुद निर्भय भय हरें हमारा, हम तो सादर चरण पड़ें॥
इनको गुरुग्रह तक सीमित कर, हो जाता है पाप महान्।
जिनका केवल सुमरण करना, ऋद्धि-सिद्धि दे हर वरदान॥
अब तक हमने की मनमानी, बात आपकी ना मानी।
नादानी से मुक्ति रिसानी, मिली कृपा ना वरदानी॥
अब तो स्वामी क्षमादान दो, दया कृपा करुणा कर दो।
विनाशीक से अविनाशी कर, 'सुव्रत' की झोली भर दो॥ १३॥

(दोहा)

शोभित बन्दर चिह्नमय, प्रभु अभिनन्दननाथ।
दिव्य भव्य गुण पा सकें, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अभिनन्दनस्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अभिनन्दन जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री सुमतिनाथ पूजन

स्थापना (लय : माता तू दया करके...)

हे! पंचम तीर्थंकर! जड़बुद्धि कुमति हर्त्ता।
हे! सुमतिनाथ! भर्ता, हे! सुमति ज्योति कर्त्ता॥
हे! मंगलमय मंगल, हे! तारणतरण जहाज।
सबको तारो तुम तो, हमने भी दी आवाज॥
हे! जिनवर जी अर्जी, मंजूर तुरत कर लो।
भव में डूबे हमको, दे शरण पार कर दो॥
उपकार न भूलेंगे, मन से तो छूलेंगे।
निज सहज रूप पाने, श्रद्धा से पूजेंगे॥

(सोरठा)

सुमति-सुमति दातार, सुमतिनाथ भगवान् हो।
आओ मन के द्वार, हरो भ्रमण अज्ञान को॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

हम निर्मल शुद्धातम, यह तत्त्व नहीं समझे।
तो राग-द्वेष करके, दुःख संकट में उलझे॥
अब जन्म पहेली को, सुलझाने वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जग की शीतलता से, ना प्यास ताप नशते।
ना ज्ञानामृत मिलता, बस भव-भव में तपते॥
संताप मिटाने को, जिन-चंदन वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कोल्हू के बैलों सम, भव चक्रों में खोये।
हम धर्मचक्र भूले, तो फूट-फूट रोये॥
अब अखण्ड आतम को, पाने जिन-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

तज शूल असंयम के, संयम के फूल खिलें।
जीवन फूलों सा हो, जिन पद की धूल मिले॥
अब काम घाव भरने, ब्रह्म-औषध वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सुख पाने को आकुल, -व्याकुल दुख को तजने।
पर भाव नहीं बनते, अपने प्रभु को भजने॥
बिन भक्ति मुक्ति कैसे, सो भक्ति की वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यह पुद्गल की ज्योति, अन्तर को छुए न भले।
पर आरती कर इनसे, आतम का दीप जले॥
अब अन्तस् तम हरने, जिन ज्योतित वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

भव अंगारों से हम, तपके झुलसे जलते।
पर कर्म तनिक न तपे, हम हाथ रहे मलते॥
अब कर्म जलाने को, अध्यातम वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पुद्गल का विकृत रस, आतम में जहर भरे।
जिसको केवल चख के, प्राणी बेमौत मरे ॥
अब मृत्युंजय बनने, जिन-करुणा वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हे नाथ! अभी तक हम, तुम जैसे नहीं हुए।
ना दुख के बन्ध झड़े, ना आतम रूप छुए॥
ना आतम से तन के, रिश्ते-नाते तोड़े।
दर-दर तो भटके पर, ना हाथ तुम्हें जोड़े ॥
अब कृपा आपकी पा, यह अर्घ्य चढ़ाएंगे।
विश्वास यही हमको, तुम सम बन जाएंगे॥
निज शरण बुलाके अब, शाश्वत निज-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण शुक्ला दूज को, त्याग जयंत विमान।
मात मंगला गर्भ में, वसे सुमति भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चैत्र शुक्ल ग्यारस लिए, सुमतिनाथ प्रभु जन्म।
पिता मेघरथ के यहाँ, जन्मोत्सव की धूम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवीं शुक्ल वैशाख को, तजे अयोध्या धाम।
सुमतिनाथ तप से सजे, हम सब करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला चैत्र को, पाए पद अरिहंत।
ज्ञानोत्सव में गूँजती, जय-जय सुमति महंत॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल एकादशी, मोक्ष महोत्सव सार।
भक्त सुमतिप्रभु को, करें नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शम्भवजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (सोरठा)

सुमतिनाथ भगवान्, जो अविनाशी धन दिए।
बुद्धि-वृद्धि दो दान, अतः नमन पूजन किए॥

(ज्ञानोदय)

जिन्हें बुद्धि ने छोड़ दिया है, जिनकी बुद्धि कुबुद्धि हुई।
जिनकी है जड़बुद्धि धरम में, या दुर्बुद्धि कर्म में हुई॥
बुद्धि-वृद्धि को जो जन चाहें, जो खोजे सद्बुद्धि विजय।
शीश झुकाकर सुमति प्रभु की, वे बोलें मन से जय-जय॥ १॥

जिनने प्रभु की जय-जय बोली, उनके बुद्धि विकार नशे।
नाम कथा करने वालों के, उजड़े घर भी शीघ्र वसे॥
दर्शन पूजन का क्या कहना, भक्त जनों के मजे-मजे।
जगरथ तज उनके विद्यारथ, मोक्षपुरी को सजे-सजे॥ २॥

इक राजा रतिषेण नाम का, कला तथा विद्या स्वामी।

काम भोग की कुछ न कमी थी, अरिहन्तों का अनुगामी॥
अर्जन रक्षण वर्धन व्यय से, धर्म अर्थ सेवन करता।
लीलापूर्वक राज्य पालकर, मन में यों चिन्तन करता॥ ३॥
पर्यायों की भव भँवरों में, अपना आतम फँसा रहा।
दुर्जन्मों के दुर्मरणों के, साँपों से यह डँसा गया॥
कौन करे कल्याण जीव का, कैसे पथ सुख-शान्ति मिले।
अर्थ काम संसार बढ़ाता, इनसे तो दुख दर्द मिले॥ ४॥
घर में रहकर धर्म कर्म में, होती रहती पाप कथा।
हिंसा सहित धर्म से फिर क्या?, मिट सकती है व्यथा कथा॥
पाप रहित मुनि धर्म मात्र ही, शाश्वत सुख दे आतम को।
ऐसा उत्तम फल का दाता, यही हुआ चिन्तन हमको॥ ५॥
राज्य सौंप अतिरथ बेटे को, खुद ने ले ली जिनदीक्षा।
ममता त्यागी समता धर ली, मोह-शत्रु जय की इच्छा॥
जीव मात्र का मंगल हो जब, ऐसे भावों को साधे।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद को बाँधे॥ ६॥
अंत समय संन्यासमरण कर, वैजयन्त अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग कर भरतक्षेत्र में, वृषभ वंश उत्पन्न हुए॥
नगर अयोध्या में जन्मोत्सव, करके सुमति नाम रक्खा।
इन्द्रों ने स्वर्णिम तन प्रभु को, पूज पुण्य पाया पक्का॥ ७॥
कुमारकाल दशा गुजरी तो, सुमतिनाथ को राज्य मिला।
आर्त्तध्यान बिन रौद्रध्यान बिन, सभी प्रजा का भाग्य खिला॥
दिव्य राज भोगों को भोगा, भव से शीघ्र विरक्त हुए।
सुमति नाम को सार्थक करने, निज हित में अनुरक्त हुए॥ ८॥

मैं तो ज्ञानी कहलाता हूँ, अहित क्रिया कैसे कर लूँ।
अल्प सुखों को त्याग आज ही, शुभ वैराग्य हृदय धर लूँ॥
यदि सम्यक् वैराग्य न हो तो, सम्यक ज्ञान न मिल सकता।
जब तक सम्यग्ज्ञान न तब तक, निज स्वरूप न खिल सकता॥९॥
निज स्वरूप में लीन न जब तक, तब तक क्या सुख पाओगे।
अतः सुखार्थी बन वैरागी, वरना फिर पछताओगे॥
तब लौकान्तिक देवों ने आ, कर दी हाँ-हाँ अनुमोदन।
अभय पालकी में फिर बैठे, चले सहेतुक वन भगवन्॥ १०॥
इक हजार राजाओं के सह, बेला मय मुनि दीक्षा ली।
ज्ञान-मनःपर्यय झट प्रकटा, पद्मराज के भिक्षा ली॥
बीस वर्ष छद्मस्थ बिताकर, बेला मय ध्यानस्थ हुए।
केवलज्ञानी संत हुए तो, ज्ञानोत्सव मय भक्त हुए॥११॥
आप अठारह क्षेत्रों में फिर, कर विहार कल्याण किए।
आत्मा को परमात्मा बनने, बनो महात्मा ज्ञान दिए॥
मासिक योगनिरोध किया फिर, प्रतिमायोग ध्यान ध्याया।
अविचल कूट सम्मेदशिखर से, संध्या मोक्ष महल पाया॥१२॥
ऐसे सुमतिनाथ भगवन् के, दर्शन कर गुण गाने में।
चारों धामों का सुख मिलता, सादर शीश झुकाने में॥
दुनियाँ में वो शान्ति कहाँ जो, शान्ति शरण में आने में।
जीने में वो मजा कहाँ जो, मजा यहाँ मर जाने में॥ १३॥
जिनप्रभु को बस गुरु ग्रह नाशक, जो माने वे अज्ञानी।
सुमतिनाथ का नाम अकेला, हर ले सभी परेशानी॥
हर संकट के कंटक हर लो, खुशियों की दे दो कलियाँ।

'सुव्रत' तुम सम बनने माँगें, मोक्ष महल सुख की गलियाँ॥१४॥

(दोहा)

जिन का चकवा चिह्न है, पञ्चम जो जिनराज।
सुमति नाम जिनका उन्हें, नमस्कार हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

सुमतिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुमतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री पद्मप्रभ पूजन

स्थापना (वसंततिलका)

हे! पद्मनाथ परमेश जिनेश स्वामी।
तीर्थेश षष्टम विभो कमलेश नामी॥
संसार में कमल-सम बनके विरागी।
चैतन्य रूप चखते बन वीतरागी॥
चारित्र के परम पूजित हो विहारी।
सारे विभाव दुख संकट के निवारी॥
वैराग्य के सुरथ पै हमको बिठाओ।
संन्यास दे हृदय में जिनदेव आओ॥
ये अर्चना हम करें प्रभु नाम लेके।
शुद्धात्म का वरण हो जिन जाप देके॥

दे दो हमें चरण की बस धूल थोड़ी।
सम्बन्ध हो मुकति से बन जाए जोड़ी॥

(दोहा)

पूज्य पद्मप्रभु देव जी, भक्त जनों के ईश।
सबको तो सब दो मगर, हमको दो आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

ये जन्म-मृत्यु भय चेतन को सताते।
डूबे स्वयं भव-समुद्र हमें डुबाते॥
श्रद्धान दो वरदहस्त समाधिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

संसार ताप तपते हमको तपाते।
चैतन्य के महल तो बिखरे हि जाते॥
दो जैन-तीर्थ सुधरे निज आत्म वास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

आज्ञा न देव गुरु शास्त्र जनों की मानी।
पाए न भोग जग के नहीं मोक्ष रानी॥
हो छत्र छाँव हम पै कह दो तथास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

तृष्णाएँ काम मृग की मिटतीं न स्वामी।
जो भोग भोग बनता दुठ और कामी॥

दुर्दर्प काम तज दो निज ब्रह्म वस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सारे हि रोग नशते जग औषधि से।
पै भूख रोग बढ़ता चरु औषधि से॥
एसी क्षुधा हरण को व्रत वृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

है मोह की हर किरण करती अँधेरे।
तो भी सभी जगह पै उसके वसेरे॥
वैराग्य ज्ञान मणि चेतन खोज ले तू।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सर्वत्र कर्मफल जीव चखे अकेले।
देते न साथ जगबन्धु गुरु न चेले॥
दो कर्म के हरण को जप ध्यान अस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

संसार वृक्ष कड़वे फल वो खिलाते।
खाके जिन्हें हम सदा मरते हि जाते॥
सम्यक्त्व संयम सुधामृत स्वाद ले तू।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अध्यात्म की शिखर की सबसे ऊँचाई।

शुद्धात्म धाम जिससे बस दे दिखाई॥
वो देवशास्त्र गुरु ही बस दान देते।
पूजा विधान विधि सो हम ठान लेते॥
ये नीर चंदन चढ़े जब द्रव्य-भावी।
तो ही विभाव नशते बनते स्वभावी॥
पाएँ स्वभाव निजभाव समृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

(दोहा)

इस अनन्त संसार में, पूज्य पद्मप्रभु नाथ।
कोई अपना है नहीं, अतः दीजिये साथ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

माघ कृष्ण छठ को तजे, ग्रैवेयक सुरसाज।
मातृ सुसीमा गर्भ में, बसे पद्म जिनराज॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, पद्मोत्सव की धूम।
धरणराज घर जन्म की, बजे बधाई झूम॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, तजे मोह संसार।
बने पद्म प्रभु संत जी, जिन्हें नमन शत बार॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल पूनम हुई, जग में पूज्य महान्।
घाति नशा प्रभु पद्म ने, पाया केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथ कृष्ण फाल्गुन हुई, पद्मप्रभु के नाम।
मोक्ष गए सम्मेद से, लाखों जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(वसंततिलका)

संसार में शरण हैं जिनदेव साँचे।
ध्या के सदाचरण भक्त मयूर नाँचे॥
सर्वस्य पाप विधि बन्धन को नशाते।
सो भक्त भक्तिमय हो गुणमाल गाते॥

(ज्ञानोदय)

जिनके रिश्ते नाते छूटे, भाग्य कमल भी मुरझाये।
दूर हुए जो प्रभु से प्राणी, बहुत बुरे दिन भी आए॥
घोर निराशा के अँधियारे, जिनके जीवन में होते।
वही पद्मप्रभु को ध्याकर के, बोलो कौन कहाँ रोते॥ १॥
आओ उनकी कथा वाँच लें, जो वचनों को शुद्ध करें।
जिनके पथ पर चलने वाले, भक्त स्वयं को सिद्ध करें॥
नगर सुसीमा के अपराजित, राजा सार्थक नाम धरे।
अंतरंग बहिरंग शत्रु को, जीत दया के काम करे॥ २॥
राजभोग को भोग बाद में, चिन्तन कर गंभीर हुए।
क्षण भंगुर नश्वर जग माया, पुद्गल कर्म शरीर हुए॥
चिदानन्द का वैभव पाने, राज्य पुत्र को सौंप दिया।
जिनदीक्षा को वन जा खुद को, प्रभु चरणों में सौंप दिया॥३॥
कठिन साधना तूफानी कर, जैनधर्म का नाद किया।

सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥
अन्त समय में कर सल्लेखन, ग्रैवेयक अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग नृप अपराजित के, पुत्र कमल सम पद्म हुए॥४॥
जन्म हुआ ज्यों हर्ष हुआ त्यों, मोह शोक का अन्त हुआ।
वैर विरोध काँपकर भागें, घर-घर पर्व बसंत हुआ॥
इन्द्रों ने फिर न्हवन कराके, पूज्य पद्मप्रभ नाम रखा।
पर्व जन्म कल्याणक करके, पुण्य भक्ति को खूब चखा॥५॥
जिन बालक बन पालक ऐसे, कौन करे वर्णन उसका।
वो सौभाग्य नहीं पा सकता, अल्प भाग्य होगा जिसका॥
हाथी की दुर्दशा श्रवण कर, पूर्व भवों का ज्ञान हुआ।
तत्त्व स्वरूप जानकर खुद को, खुद पर खेद महान् हुआ॥६॥
यहाँ कौन-सा पदार्थ ऐसा, जिसको मैंने छुआ नहीं।
देखा सूँघा खाया ना हो, जिसको मैंने सुना नहीं॥
अभिलाषा के इस सागर को, पूर्ण कौन भर पाया है।
भोग सर्प ने तन वामी में, रहकर विष फैलाया है॥ ७॥
फिर भी मोह उसी से करके, आत्म धर्म को भुला दिया।
पापों को ही धर्म मानकर, शाश्वत चेतन सुला दिया॥
जिन्हें हुआ वैराग्य उन्हीं के, लौकान्तिक सुर में सुर गा।
बेला सहित लिए जिनदीक्षा, सजे मनोहर वन में जा॥८॥
ज्ञान मनःपर्यय फिर पाया, फिर चर्या की दिन अगले।
पाँच वृत्तियों से भोजन कर, सोमदत्त को पुण्य मिले॥
गुप्ति समिति अनुप्रेक्षा करके, परिषहजय चारित्र धरा।
संवर तप से किए निर्जरा, छह माहों का मौन धरा॥ ९॥

जब छद्मस्थ दशा गुजरी तो, केवलज्ञानी संत बने।
नर इन्द्रों ने सुर इन्द्रों ने, पूजा जब भगवन्त बने॥
सुनो! एक सौ दस गणधर से, समवसरण भी खूब भरा।
जिसमें कमलासन पर प्रभु का, निज चैतन्य रूप निखरा॥१०॥
दिव्य देशना देकर खुद को, साबित सच्चा आप्त किया।
मासिक योग निरोध धारकर, अहा! मोक्ष को प्राप्त किया॥
श्रीसम्मेदशिखर का पावन, पूजित मोहनकूट हुआ।
मना मोक्षकल्याणक प्रभु का, अपना दिल अभिभूत हुआ॥११॥
ऐसे पद्मप्रभु की मूरत, बड़े पुण्य से पाई है।
पाप निर्जरा पुण्य प्राप्ति को, पूजा नित्य रचाई है॥
स्वामी आप वरों के दाता, हम आए वर पाने को।
छींटा दे दो ज्ञान कणों का, हमें होश में आने को॥१२॥
पद्मनाथ परमेश्वर प्रभु ने, राग-द्वेष को लाँघ लिया।
किन्तु रागियों ने ही उनको, राहु-केतु तक बाँध दिया॥
करें निवारण मात्र सूर्य ग्रह, प्रभु कमजोर नहीं इतने।
'सुव्रत' जिनका नाम मात्र सुन, मुक्तिरमा टेके घुटने॥१३॥

(बसंततिलका)

हैं नष्ट-भ्रष्ट सुर छन्द सभी ऋचाएँ,
एसी दशा गुण कथा किस भाँति गाएँ।
आशीष पा हम किए गुणगान थोड़ा,
दे दो क्षमा भगत् है अंजान मौंड़ा॥

(दोहा)

लाल कमल से शोभते, पद्मप्रभु जिनराज।
खिले कमल सम भक्त हम, अतः नमन हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पद्मप्रभ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पद्मप्रभ जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

श्री सुपार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

जिनवर नाथ सुपार्श्वजी, सप्तम सुन्दरदेव।
दर्शन पूजन को झुके, भक्तशीश स्वयमेव॥
(शार्दूलविक्रीडित) (लय : मङ्गलाष्टक)

अरिहन्तेश सुपार्श्वनाथ भगवन्, तीर्थेश स्वामी तुम्हीं।
हो सिद्धालय मोक्षरूप जग में, श्रद्धा सुधा हो तुम्हीं॥
सारा ये जग आपसे तर रहा, दे दो सहारा हमें।
भक्तों की बस नाँव पार कर दो, सो ही पुकारा तुम्हें॥
होगी पार न नाँव तो फिर सुनो, होगी तुम्हारी हँसी।
चाहो आप न आप पै जग हँसे, तो तार दो शीघ्र ही॥
आस्था रोज पुकारती प्रभु तुम्हें, जल्दी सुनो प्रार्थना।
श्रद्धा मंदिर में निवास कर लो, प्रारम्भ हो अर्चना॥
(सोरठा)

प्रभु सुपार्श्व जिनराज, आतम कली खिलाइए।
निज सम हमको आज, सुन्दर रूप दिलाइये॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जाना है जिनको सदैव अपना, माना उन्हीं को सगा।
सारे संकट रोग कष्ट दुख भी, पाए उन्हीं से दगा॥
ऐसा ही हम राग रोग तजने, ले नीर सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जो सांसारिक द्रव्य नश्वर रहे, देते सभी ताप वो।
प्राणीमात्र तपें जलें दुख सहें, त्यागें नहीं पाप को॥
ये वैभाविक भाव त्याग करने, ले गंध सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अज्ञानी हम तो रहे क्षय हुआ, खोदा कुआ स्वार्थ का।
पूरा जो कब है भरा कपट से, घोंटा गला आत्म का॥
दे दो आश्रय भक्त को चरण का, ले पुंज सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

पाता जो कुछ भोग का विषय वो, भाता हमें है नहीं।
भाता जो कुछ भोग का विषय वो, पाता कभी भी नहीं॥
ये इच्छा जल को मिले तप सुधा, ले पुष्प सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

बीता काल अनन्त रोग तन को, वो भूख ही मारती।
आत्मा की सुध हो गई अब जिसे, वो ही उसे तारती॥
आत्मा को चखने सभी भगत ले, नैवेद्य सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीये भूपर सूर्य चाँद नभ में, तारे करें आरती।
ये अज्ञान निशा नहीं हर सकें, जानें नहीं भारती॥
पाएँ ज्योति अनन्तज्ञान हम भी, ले दीप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

पापों की जड़ दौड़-धूप करके, बाँधे सदा गाठरी।
है विश्वास न दीप धूप फल पै, जो पुण्य की दे झड़ी॥
कर्मों का वन दग्ध हो चित खिले, ले धूप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

रंगीले फल विश्व के हम तजें, जो पुण्य के पाप के।
आत्मा की निज स्वानुभूति फल को, कैसे चखें ओ! सखे॥
वो हों प्राप्त हमें तभी फल भरी, ले थाल सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

है विश्वास हमें जिनेन्द्र तुम पै, पूजा इसी से करें।
गाएंगे हम आपके भजन भी, गाथा इसी से करें॥
पाएंगे हम छाँव भी चरण की, आस्था हमारी यही।
आएंगे हम मोक्ष के महल में, श्रद्धा हमारी यही॥
आशीर्वाद हमें यही बस मिले, छूटे न पूजा कभी।
दो आशीष हमें यही बस प्रभो!, टूटे न आस्था कभी॥
एसी छाँव कृपा करो बस विभो!, अक्षय्य श्रद्धा करें।
आत्मा शाश्वत भेंट अर्घ्य बन सके, विश्राम यात्रा करें॥

(दोहा)

सुपार्श्वप्रभु की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बनके पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

भाद्र शुक्ल छठ को तजे, मध्यम पद अहमिन्द्र।
पृथ्वी माँ के गर्भ में, वसे सुपार्श्व जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस हुई, झूम-झूम विख्यात।
सुप्रतिष्ठ घर आँगने, जन्मे सुपार्श्वनाथ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस शुक्ला ज्येष्ठ में, तजे-मोह संसार।
प्रभु सुपार्श्व मुनि बन गए, गूँजे जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी फाल्गुन कृष्ण में, लोकालोक दिखाए।
सुर-नर नाथ सुपार्श्व को, सादर शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फागुन कृष्ण में, प्रभु सुपार्श्व गए मोक्ष।
गिरिवर प्रभास कूटमय, हम तो देते धोक॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

आत्म शक्ति की व्यक्ति को, करें भक्ति हम लोग।
सुपार्श्वप्रभु के गीत गा, बने मुक्ति के योग॥

(ज्ञानोदय)

सुपार्श्वनाथ जिनराज आप हो, सुखसागर सुखअम्बर हो।
सुख के सूरज-चाँद सितारे, सुख के बादल भूधर हो॥
सुख की धरती सुख की वर्षा, तुम हो सुख की हरियाली।
सुखदाता सुख पुंज तुम्हीं हो, सुख की होली दीवाली॥१॥
सुख के रत्न खजाने तुम हो, सुख के तुम ही धाम रहे।
सुखानन्द तुम सुख शाश्वत हो, वीतराग विज्ञान रहे॥
तुम हो सुखिया हम तो दुखिया, कैसे तुमको पाएँ हम।
इसीलिए तो दर्शन करके, पूजा-पाठ रचाएँ हम॥ २॥
राज्य क्षेमपुर का इक राजा, नंदिषेण जो राज्य करे।
धर्म अर्थ अरु काम पुण्य से, बुद्धि पराक्रम प्राप्त करे॥
मोक्षमार्ग पर चलकर निज पर, जय करना उसकी इच्छा।
अतः पुत्र को राज्य दानकर, उसने ले ली मुनिदीक्षा॥३॥
तीर्थंकर पद कर्म बाँधकर, सल्लेखन कर सुर पाए।
मध्यम ग्रैवेयक की आयु, भोगी फिर भू पर आए॥
नगर बनारस में फिर जन्मे, जिनका नाम सुपार्श्व पड़ा।
जिनकी सेवा में जग वैभव, तव चरणों में आन खड़ा॥४॥
राज्य प्राप्त कर आठ तरह के, सुख पाए थे स्पर्शन के।
पाँच तरह के रसना वाले, नासा नयन कर्ण मन के॥

पंचेन्द्रिय विषयों को पाकर, आत्म नियंत्रण ना छोड़ा।
जब देखा था ऋतु परिवर्तन, तब मुनि बनने मन मोड़ा॥५॥
लौकान्तिक सुर गुण गाए तब, बैठ मनोगति शिविका में।
पहुँच सहेतुक वन में प्रभु ने, जिनदीक्षा ली संध्या में॥
साथ एक हजार राजा थे, बेला का था नियम लिया।
अगले दिन महेन्द्रदत्त ने, पड़गाहन कर दान दिया॥ ६॥
नौ वर्षी छद्मस्थ बिताए, फिर बेलामय ध्यान लगा।
गर्भ तिथी में गर्व हमें है, केवलज्ञानी हुए अहा॥
ज्ञानोत्सव फिर समवसरण में, जिन-बगिया के फूल झड़े।
जिसकी माला से भक्तों के, बन्धन कर्म समूल झड़े॥ ७॥
विहार रुचा न तो विहार तज, लोक शिखर पाने मचले।
मासिक योगनिरोध धारकर, सम्मेदाचल धाम चले॥
प्रभास कूट से कर्म हटाकर, प्रभु ने महा प्रयाण किया।
सूर्योदय में तब इन्द्रों ने, महा मोक्षकल्याण किया॥ ८॥
नाथ! आपने पापशत्रु को, बुद्धि-कला से मौन किया।
और बाद में मौन धारकर, करके युद्ध परास्त किया॥
समवसरण फिर मोक्षधाम पा, जैन धरम का मान रखा।
हम नजदीक आपके आए, हमने यह अरमान रखा॥ ९॥
जीव तत्त्व यह शुद्ध करा दो, अजीव हम से दूर करो।
हर लो आस्रव बन्ध द्वन्द्व सब, कर्म निर्जरा पूर्ण करो॥
द्रव्य भाव नो कर्म नशा दो, भक्तों को मत ठुकराओ।
शब्द छन्द पर ध्यान न देकर, करुणा कर अब अपनाओ॥१०॥
पास न अपने बुला सको तो, इतनी कृपा अवश्य करो।

आँखों से ना ओझल होना, सदा मनालय वास करो॥
श्वाँस-श्वाँस धड़कन-धड़कन से, दूर करो विभाव बदबू।
'सुव्रत' 'विद्या' के निजघट में, भर दो जिन-श्रद्धा खुशबू॥११॥

(सोरठा)

सुपार्श्वप्रभु दुखहार, जग को सुख के धाम हो।
क्या गाएँ गुणमाल, बारम्बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सुपार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुपार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री चन्द्रप्रभ पूजन

स्थापना (दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं॥
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हर्षे॥
नाथ! आपके जगह-जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शान्ति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं॥

यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत बरसाओ-ना।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ-ना॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बचपन खोया खेल-खेल में, गई जवानी भोगों में।
देख बुढ़ापा फक्-फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में॥
रागों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
जनम-मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता॥
तन-मन भव-संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चंदन के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे॥
पद आपद हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
सुख-सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे॥
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे॥
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें।
राहु-केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें॥
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
काय-कान्ति भी अद्‌भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धुआँ-धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं।
धुआँ-धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं॥
अष्ट कर्म का भव-वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगंधी अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
दुनियाँ के फल-फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे॥
जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आए चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गए, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अंध-बन्धमय लोक को, दिए दृष्टि जिनराज।
ऐसे चन्द्र जिनेश जी, करिये दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

अष्टम तीर्थंकर जो जग में, चन्द्रप्रभु भगवान् रहे।
अष्ट कर्म को हरने वाले, भक्तों की वे शान रहे॥
अतिशयकारी अतिशयधारी, उनकी महिमा हम गाएँ।

स्वर्ग सुखों में क्या रक्खा है, मोक्ष धर्म हम अपनाएँ॥ १॥
पहले भव में श्रीवर्मा जो, चार स्वप्न दे जन्म लिए।
जो जिनवर से तत्त्व ज्ञान ले, दीक्षा ले भव धन्य किए॥
फिर संन्यास मरण अपना के, पहले स्वर्ग सुरेश हुए।
स्वर्ग त्याग फिर आठ स्वप्न दे, अजितसेन चक्रेश हुए॥ २॥
फिर चक्री तप धार मरणकर, सोलहवे सुर रूप हुए।
सपना दे फिर स्वर्ग त्यागकर, पद्मनाभ सुत भूप हुए॥
पद्मनाथ वैराग्य धारकर, चउ आराधन संग लिए।
सोलहकारण भाय भावना, तीर्थंकर पद बन्ध किए॥ ३॥
अन्त समय कर मरण समाधी, वैजयन्त सुर इन्द्र हुए।
फिर सोलह सपने देकर के, चन्द्रपुरी के चन्द्र हुए॥
शुक्ल वर्ण में शुक्ल भाव में, बनकर राजा राज्य किया।
सब कुछ नश्वर जान समझ के, मोक्षमार्ग वैराग्य लिया॥ ४॥
घातिकर्म हर हुए केवली, अष्टकर्म हर सिद्ध बने।
ताराओं के बीच चाँद ज्यों, ऐसे जगत् प्रसिद्ध बने॥
नाथ! आपने सात-सात भव, कठिन तपस्या धारण की।
तब जाके सब कर्म नाश कर, मोक्ष सम्पदा वारण की॥ ५॥
हमें तपस्या से डर लगता, मोक्षमार्ग ना धर्म रुचे।
फिर कैसे भव तीर मिलेगा, कैसे जग में लाज बचे॥
भाग्य हमारा बिगड़ न जावे, एसी ज्योति जला दीजे।
सागर की लहरों जैसे ही, हमको भी अपना लीजे॥ ६॥
सब पर तुम करुणा बरसाते, हम पर भी बरसाओ ना।
सूर्य चाँद जो कर न सकें वो, ज्ञान प्रकाश दिलाओ ना॥

चाँद राहु से होता दागी, किन्तु आप बे-दाग रहे।
'सुव्रत' की अब अर्जी सुन लो, जो शिव सुख को माँग रहे॥ ७॥

(दोहा)

सार्थक चन्दा नाम है, हमको करो निहाल।
सादर हम सब गा रहे, चरणों की जयमाल॥
स्वार्थ रहित है प्रार्थना, आश रहित गुणगान।
मनोकामना पूर्ण हो, मिले यही वरदान॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री सुविधिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

पुष्पदंत जिनराज जी, रहे मुक्ति के धाम।
पूजन के पहले उन्हें, बारम्बार प्रणाम॥

(सखी)

हे! नवमें तीर्थंकर जी, हे! पुष्पदंत अरिहन्ता।
चैतन्यधाम के स्वामी, हे! परमपूज्य भगवन्ता॥
जो श्रमण संस्कृति के भी, संरक्षक संवाहक हैं।
जिनके श्री चरणों में हम, सादर नत मस्तक हैं॥
सर्वत्र आपका यश है, है महिमा खूब तुम्हारी।

तुम अतिशय खूब दिखाते, जय-जय हो नाथ तुम्हारी॥
जो जय-जय करे तुम्हारी, उसका हर बन्ध विलय हो।
फिर उसको क्या भय संकट, उसकी भी फिर जय-जय हो॥
बस इसी भावना से हम, जिन पूजन पाठ रचाते।
अब हृदय निलय में आओ, हम सादर तुम्हें बुलाते॥
हम दुखी उदास न होवें, कुछ ऐसा कर दो स्वामी।
हे! सुविधिनाथ परमेश्वर, तुमको सादर प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इस आतम ने मिथ्यामल, जबसे निज पर लिपटाये।
तो आतम तो ना झलका, पर जन्म-मृत्यु दुख पाए॥
अब जन्म-मृत्यु मिथ्या दुख, हो दूर नीर अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु एसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

रिश्ते नातों की ज्वाला, झुलसा देती हैं हमको।
फिर भी यह राग न हटता, क्या रोग लगा आतम को॥
यह राग-द्वेष की ज्वाला, हो दूर गंध अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु एसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पर में दुनियाँ तत्पर है, नहिं प्रभु की कोई लहर है।
नहिं अपनी कोई डगर है, यह सबसे बुरी खबर है॥
अब पर-पर की तत्परता, हो दूर पुञ्ज अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु एसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जो अंतस्-जय करता वह, अपना मन सुमन बनाता।
वह अंतस्-पुष्प खिला के, निज ब्रह्म बाग महकाता॥
अब व्यसन बुराई सब ही, हो दूर पुष्प अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु एसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हर वस्तु भोगकर डाली, पर तृप्ति कभी ना पाई।
नहिं आतम को चख पाए, नहिं पूजन पाठ रचाई॥
उपभोग-भोग के भव दुख, हो दूर चरु अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु एसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हे! नाथ जहाँ तुम जैसा, आदित्य न हो तो क्या हो।
साहित्य न हो तो क्या हो, राहित्य न हो तो क्या हो॥
भय घोर अंधेरा संकट, हो दूर दीप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु एसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों के खेल निराले, विधि लेख कौन वह टाले।
अब हम तो किसे पुकारें, जो हमको शीघ्र बचा ले॥
अब जेल खेल कर्मों का, हो दूर धूप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु एसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

ये मधुर सरस फल सबको, सुख बाँटे खुद सहके गम।
हम काश कहीं हों ऐसे, तो सार्थक हो जिन-पूजन॥
अब सुख-दुख की आकुलता, हो दूर सुफल अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु एसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जल फल आदिक का मिश्रण, यह सुन्दर अर्घ्य बनाके।
कई बार चढ़ाके लेकिन, अब तक कुछ भी ना पा के॥
हम आए हैं घबराके, क्या रह गई कमी हमारी।
क्यों दुखी परेशां हम हैं, क्यों मिली न मोक्ष सवारी॥
अब ऐसा अर्घ्य बना दो, अनमोल रहे जो सबसे।
हो कृपा कृपाकर अब तो, हम तुम्हें पुकारें कब से॥
अब सुनो प्रार्थना स्वामी, हम सबकी ओर निहारो।
हमें अपने पास बुलाके, चेतन का रूप सँभारो॥

(दोहा)

श्रद्धा से अर्पित करें, अर्घ्य झुकाकर शीश।
धर्म-धार टूटे नहीं, मिले यही आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

फागुन नवमी कृष्ण को, तजकर प्राणत स्वर्ग।
सुविधिनाथ प्रभु आ वसे, जयरामा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, जन्मोत्सव त्यौहार।
राजा श्री सुग्रीव के, आए सुविधि कुमार॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, कर परिग्रह की शाम।
सुविधि तपोत्सव से सजे, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला दूज को, सुविधि हरे अज्ञान।
समवसरण तब लग गया, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भाद्र अष्टमी शुक्ल को, सुविधि बने सिद्धीश।
मुक्त हुए सम्मेद से, जिन्हें झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुविधिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

सुविधि प्रभु अनुपम रहे, दें इच्छित वरदान।
शाश्वत गुण पाने करें, नमन भजन गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिन भगवन् ने विशाल निर्मल, पूज्य मोक्ष पथ चला दिया।
अनेक शिष्यों के भविष्य को, मोक्ष स्वरूपी बना दिया॥
मोक्षमार्ग विधि रूप हुए जो, सुविधि-प्रभु जी उन्हें कहें।
हम भी मोक्षमार्ग की उत्तम, विधि को पाने भक्ति करें॥ १॥
फूलों जैसी सुन्दर जिनकी, दन्त पंक्तियाँ लहरातीं।
जिससे अनुपम मुख की शोभा, भक्त जनों के मन भाती॥
जो भव महा मरुस्थल में तो, छायादार वृक्ष जैसे।
वही पूज्य प्रभु पुष्पदन्त हैं, उनको भूलें हम कैसे॥ २॥
जिनका तन अशान्त रहता हो, वाणी आकुल-व्याकुल हो।

सदाचार ना पलता जिनका, दुखिया जिनका संकुल हो॥
उपसर्गों से परीषहों से, जो हो जाते विचलित हों।
उन्हें मिले विधि सम्यक् यदि वे, सुविधि प्रभु के आश्रित हों॥ ३॥

महापद्म नामक राजा जो, गुणी प्रजा को सुखी किया।
जिनको देकर ज्ञान भूत हित, प्रभु ने अंतर्मुखी किया॥
जिनके उपदेशामृत को पी, राजा चिन्तन मग्न हुआ।
भव-भोगों से विरक्त होकर, मोक्षमार्ग संलग्न हुआ॥ ४॥

सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकरप्रकृति बाँधी।
और अन्त में समाधि धर कर, प्राणत सुर पदवी साधी॥
चले स्वर्ग से काकंदीपुर, राजा थे सुग्रीव जहाँ।
रही पट्टरानी जयरामा, हुआ आपका जन्म वहाँ॥ ५॥

इन्द्रों ने जन्मोत्सव करके, पुष्पदंत यह नाम रखा।
राज्य प्रेम पूर्वक भोगा फिर, जिनको उल्कापात दिखा॥
राजा को वैराग्य हुआ तो, लौकान्तिक ने पद पूजे।
सुमति पुत्र को राज्य सौंपकर, सूर्य प्रभा से वन पहुँचे॥ ६॥

पुष्पक वन में पुष्पदंत ने, पुष्पवृष्टिमय तप ओढ़ा।
पंचमुष्टि केशलौंच किए फिर, पंच पाप परिग्रह छोड़ा॥
पंच महाव्रत धार लिए तो, रूप दिगम्बर संत हुए।
पुष्पमित्र आहारदान से, जिनशासन जयवंत हुए॥ ७॥

चार वर्ष छद्मस्थ बिताकर, नागवृक्ष के नीचे जा।
केवलज्ञान प्राप्त कर डाला, सुरनर पर्व करें गा-गा॥
समवसरण का अचिन्त्य वैभव, अहा! दिव्यध्वनि की शोभा।
मुख्य अठासी गणधर के गुण, क्या इससे सुन्दर होगा॥ ८॥

विहार कर सम्मेदशिखर के, उच्च कूट सुप्रभ पर जा।
हजार मुनि के साथ शाम को, मोक्षमहल में वसे अहा!
किन्तु कठिन यह मोक्ष महापथ, हमको सरल बना डाला।
अंतरंग-बहिरंग नमन कर, जिनको शीश झुका डाला॥ ९॥

जय ऐसे प्रभु पुष्पदंत की, जय-जय से रज कर्म गली।
भूत डाकिनी ग्रह बाधा फिर, क्यों ना भागें ढूँढ गली॥
किन्तु शुक्र ग्रह शुक्र दिवस में, इन्हें बाँधते कुछ पागल।
सुनो! इन्हीं के नाम मात्र से, क्षण में हो मंगल-मंगल॥ १०॥

अब इतनी सी विनय आपसे, संकट उलझन दूर करो।
इतना अगर न कर सकते तो, हममें साहस धैर्य भरो॥
लाभ हानि सुख दुख सब सहके, लीन रहें प्रभु चरणों में।
पूजन पाठ तभी सार्थक जब, 'सुव्रत' हों शिव शरणों में॥ ११॥

(सोरठा)

पुष्पदंत भगवान्, मगर चिह्नमय शोभते।
हम करने कल्याण, सादर गुण गा पूजते॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पुष्पदंत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेट दो, पुष्पदंत जिनराज॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री शीतलनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

तीर्थंकर दसवे प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुए, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥
नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रन्दन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गाएँ।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जल जैसा अपना आतम पर, बना अवगुणी दुर्गति से।
शुद्ध और शीतल बन जाता, नाथ आपकी संगति से॥
प्रासुक जल का लिया सहारा, चेतन पावन हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चंदन के बस दो गुण समझो, सौरभ दे तन ताप हरे।
किन्तु आपकी जिनवाणी तो, भव-भव का संताप हरे॥
चंदन का अब लिया सहारा, चेतन शीतल हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

मुट्ठी बाँधे आते हम सब, हाथ पसारे जाना रे।
किन्तु बीच में पद-लालच में, हाथ रहा पछताना रे॥
तन्दुल का अब लिया सहारा, अक्षयपद को हम ध्याए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आकर्षक है खिला महकता, फूल नीम का कटुक रहा।
ऐसे ही है काम सुगंधी, जिसका फल जग भुगत रहा॥
पुष्प चढ़ा के शील-पुष्प से, मन की बगिया खिल जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भूख मिटी ना भोग मिटे ना, मिट-मिट गए सदा हम ही।
फिर भी भोगों को ना त्यागा, पाएँ इच्छा से कम ही॥
चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य आपको, ज्ञानामृत पर ललचाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अंधों को दिन-रात बराबर, मोही को यह जग वैसे।
नाथ! आपके ज्ञान दीप बिन, मिटे मोह का तम कैसे?
नेत्रों का पूरा उन्मीलन, करवा दो तम खो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो मंदिर महके, किन्तु सभी जग ना महके।
किन्तु आपके नाम मात्र से, भक्त जगत् आतम महके॥
धूप चढ़ाके कर्म जलाने, आतम महकाने आए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पुण्य कार्य करना ना चाहें, किन्तु पुण्य फल सब चाहें।

पाप कार्य सब करते हैं पर, पापों के फल ना चाहें॥
पाप त्यागकर पुण्य प्राप्ति को, थाल-थाल भर फल लाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

वसु द्रव्यों का लिया सहारा, गुण गाने की आशा से।
भाव भक्ति तो दिखा न सकते, टूटी-फूटी भाषा से॥
अर्घ्य भावमय छोटा सा पर, अनर्घपद मन में भाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

आरण नामक स्वर्ग लोक तज, चैत्र अष्टमी कृष्ण रही।
गर्भ सुनन्दा माँ का पाया, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व गर्भ कल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस जब आई, नगर भद्रपुर जन्म लिया।
दृढ़रथ महाराज का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व जन्म कल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस को त्यागा, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तप कल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।

तप कल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण चौदस की तिथि को, घातिकर्म सब नशा दिए।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किए॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अश्विन शुक्ल अष्टमी संध्या, पद्मासन से कर्म नशा।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, हम पाएँ सब यही दशा॥
अष्टकर्म का बन्धन सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

जग में क्या शीतल रहा, यही समझने बात।
जयमाला के नाम हम, ध्याएँ शीतलनाथ॥

(ज्ञानोदय)

दृढ़रथ पिता सुनन्दा माँ के, शीतलनाथ पुत्र प्यारे।
धर्म-कर्म विच्छेद हुआ तो, स्वर्ग लोक से अवतारे॥
नब्बे धनुष उच्च कंचन सा, तीर्थंकर तन प्राप्त किया।
अनुपम सुखदा पूज्य पिता का, पद पाकर के राज्य किया॥ १॥
वन विहार को कभी गए तो, हिम-पाला देखा वन में।
किन्तु क्षणिक वह नष्ट हुआ तो, जल्दी वैरागे मन में॥

क्षण-क्षण नश्वर देख जगत् को, मोह बन्ध तजने मचले।
राग-द्वेष आदिक दोषों को, शीघ्र त्यागने को निकले॥ २॥
दुखी और दुख, दुख के कारण, समझ इन्हें अब तजना है।
सुखी और सुख, सुख के कारण, समझ इन्हें अब भजना है॥
विषय भोग में यदि सुख होता, तो मैं सबसे बड़ा सुखी।
किन्तु मुझे संतोष तनिक ना, इनसे तो मैं हुआ दुखी॥ ३॥
विषय भोग से जो सुख माने, वह सुख मिथ्या है भ्राता।
ये ही सुखाभास चेतन को, भव गलियों में भटकाता॥
देह जेल में यथा बँधे ज्यों, पिंजड़े में पक्षी तोता।
बँधा हुआ खम्भे से हाथी, रोता सदा दुखी होता॥ ४॥
उदासीन जग से होना ही, साँचा सुख वह कहलाता।
मोह त्याग बिन वह साँचा सुख, कौन तपस्या बिन पाता?
राज्य भोग सब मोह त्यागकर, जल्दी दीक्षा ले डाली।
केवलज्ञान प्राप्त करने को, घातिकर्म रज हर डाली॥ ५॥
दोष अठारह नशा दिए तो, समवसरण में शोभित हो।
भक्तों के तारक तीर्थंकर, त्रय लोकों में पूजित हो॥
हे जिन सूरज! शीतलस्वामी, हमें भक्ति फल बस यह दो।
सम्यक् श्रद्धा रहे आप में, 'सुव्रत' को संबल यह दो॥ ६॥

(दोहा)

भक्ति वन्दना से खिले, शिव अंकुर वैराग्य।
हे जिन! शीतल छाँव में, पले बढ़े सौभाग्य॥
शीतल प्रभु को पूजकर, होते भक्त निहाल।
सही गलत को जानकर, छोड़ें जग जंजाल॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं ...।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)
ग्यारहवे तीर्थेश हैं, श्रेयांसनाथ भगवान्।
पूजन के पहले जिन्हें, नमोऽस्तु हो धर ध्यान॥
(मात्रिक सवैया)
प्रभु श्रेयांसनाथ जिनवर जी, मोक्षमहल शुद्धातम धाम।
विघ्न कष्ट बाधाएँ सारी, टिकें न सुनकर जिन का नाम॥
पूजन ध्यान जाप से जीवन, मंगलमय होते हर काम।
जिनके पथ पर चलकर आतम, भव भोगों को करें विराम॥
वैसे तो ऐसे जिनवर की, समा न सकती जग में शान।
किन्तु भक्त ने भक्ति महल में, जिन्हें पुकारा कर सम्मान॥
प्रेम द्वार से आओ! आओ!, करो चिदातम चित्-कल्याण।
चरणों में हैं भक्त समर्पित, और समर्पित तन मन प्राण॥
(दोहा)
निष्ठा से करते नमन, हाथ जोड़ नत माथ।
हृदय कमल पर आइए, हे प्रभु श्रेयांसनाथ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय : पाँचों मेरु असी...)

श्रद्धा-जल की देकर धार, मिले मुक्ति का आतम द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चंदन से करते सत्कार, आत्म शान्ति होवे उद्धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पुंज चढ़े हो हर्ष अपार, आत्म व्याधियाँ हों परिहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

पुष्पों सम निज खिले बहार, कामदेव का हो संहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिन सम निज का हो आहार, क्षुधारोग का तब प्रतिकार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

करें आरती दीप उजार, जड़ से आत्म हरें अँधयार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप गंध ले बहे वयार, जा पहुँचे मुक्ति के द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पूजें फल लेकर रसदार, सहकर नाशें कर्म प्रहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

आठों द्रव्य चढ़े मनहार, जिनसे आतम का त्यौहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

षष्ठी कृष्णा ज्येष्ठ को, तज सोलहवाँ स्वर्ग।
आए प्रभु श्रेयांस जी, माँ नन्दा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, प्रभु श्रेयांस अवतार।
विष्णु नृप घर आँगने, हो बधाई त्यौहार॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, राजा धर संन्यास।
ग्रन्थ त्याग निर्ग्रन्थ बन, जय-जय मुनि श्रेयांस॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा माघ अमास को, उपजा केवलज्ञान।
सुन-नर सब मिल पूजते, जय श्रेयांस भगवान्॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण-अमावस्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूनम श्रावण शुक्ल को, सम्मेदशिखर के धाम।
मोक्ष गए श्रेयांस प्रभु, सादर जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

जिनके आश्रय से हुए, भक्तों के कल्याण।
ऐसे प्रभु श्रेयांस का, नमन सहित गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके सारे आश्रय छूटे, सहायता भी मिले नहीं।
सुख-दुख में ना साथ मिले तो, हृदय कली भी खिले नहीं॥
महा निराशा जिनको घेरे, मेघ उदासी के छाएँ।
जिन्हें आश की किरण न दिखती, हो बेचैन व्यथा पाएँ॥ १॥

ऐसे में श्रेयांसनाथ की, अगर झलक भी मिल जाती।
तो प्रतिकूल अवस्थाएँ सब, झट अनुकूल बनीं जातीं॥
परम पूज्य श्रेयांसनाथ के, आश्रय के अभिलाषी जो।
भक्ति करें गुणगान करें वो, नमन करें संन्यासी को॥ २॥

एक नलिनप्रभ राजा था जो, ऋद्धि-सिद्धि मय धर्मात्मा।
जिनवर का सान्निध्य प्राप्तकर, बना संत उसका आत्मा॥
फिर तीर्थंकरप्रकृति बाँधकर, मृत्यु महोत्सव किया अहा।
सोलहवें सुर के पुष्पोत्तर, विमान में जा इन्द्र हुआ॥ ३॥

भोग-भोगकर नगर सिंहपुर, विष्णु-नन्दा पुत्र हुए।
तीन ज्ञान के धारी प्रभु के, जन्म समय आश्चर्य हुए॥
रोग-शोक-भय कष्ट मिटे सब, पापी जीव बने धर्मी।
पुष्पवृष्टि हो देव नृत्य हों, संतोषी हों षट्-कर्मी॥ ४॥

देवों ने जन्मोत्सव करके, पूज्य नाम श्रेयांस रखा।
तन के अवयव ऐसे बढ़ते, ज्यों चंदा हो बाल सखा॥
राज भोगकर इक दिन देखा, बसंत ऋतु का परिवर्तन।
भव भोगों से विरक्त होकर, श्रेयस्कर को सौंपा धन॥ ५॥

चले मनोहर वन तो शिविका, विमलप्रभा पर हुए सवार।
इक हजार राजाओं के सह, तप धारा हुई जय-जयकार॥
ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, दिए नन्द राजा आहार।
पंच-पंच आश्चर्य हुए तो, प्रथमदान मंगल उपहार॥ ६॥

दो वर्षी छद्मस्थ बिताए, फिर दीक्षा वन को पहुँचे।
बेला करके बने केवली, देव पर्व को आ पहुँचे॥
समवसरण फिर लगा जहाँ थे, सतहत्तर गणधर धारी।
कुल चौरासी हजार मुनि थे, बीस लाख आर्या न्यारी॥ ७॥

सुर-नर से उस भरी सभा को, ज्ञान दिया फिर वह छोड़े।
फिर सम्मेदशिखर पर मासिक, ध्यान किया बन्धन तोड़े॥
संकुलकूट हुआ पावन तब, प्रभु श्रेयांस मोक्ष पाए।
उसी तीर्थ में त्रिपृष्ठ नामक पहले नारायण आए॥ ८॥

अश्वग्रीव प्रतिनारायण भी, हुए विजय बलभद्र तभी।
इस प्रकार श्रेयांसनाथ को, भूल सके ना जगत् कभी॥
जिनके ज्ञान ध्यान यश वैभव, सब सीमाएँ लाँघ रहे।
फिर भी भगत उन्हें गुरु ग्रह के, परिहारों से बाँध रहे॥ ९॥

जिनके जन्म समय से अब तक, धर्म ध्वजा की हुई विजय।
''श्रेयांसि बहु विघ्नानि'' भी, सुन श्रेयांस नाम से क्षय॥
देख चराचर जग को भी जो, निज स्वरूप का स्वाद चखे।
जिनकी चरण धूल सिर धरकर, झट कर ले कल्याण सखे॥ १०॥

हम तो कब से शरण आपकी, अब तक ध्यान दिया क्यों ना।
माथा कब से झुका आपको, जिस पर हाथ रखा क्यों ना॥
यद्यपि आप विरागी हो प्रभु, राग मोह फिर खुद से क्यों?
आप पूर्ण हम अंश आपके, फिर मुख मोड़ा हमसे क्यों?॥ ११॥

द्रव्य-भाव-नोकर्म आपने, जैसे खुद के नशा दिए।
चिन्ता चिता नगर से न्यारा, नगर चेतना वसा लिए॥
उस चैतन्य धाम की हमको, शीघ्र छाँव दे दो स्वामी।
'सुव्रत' यह अर्जी लेकर के, चरणों में हैं प्रणमामि॥ १२॥

(सोरठा)

गेंड़ा जिनका चिह्न, श्रेयांसनाथ प्रभु नाम है।
हम पर रहो प्रसन्न, प्रभु को सदा प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

श्रेयांसनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, प्रभु श्रेयांस जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराज।
नमन करें हम तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

(ज्ञानोदय)

जिन चरणों में सारी दुनियाँ, श्रद्धा से नत मस्तक है।
उनके दर्शन पूजन को अब, भक्तों ने दी दस्तक है॥
इतनी शक्ति कहाँ है हम में, नाथ! आपको बुला सकें।
करें महोत्सव भाव भक्ति से, चरण अर्चना रचा सकें॥
फिर भी विरह वेदना से हम, तड़फें भर-भर के आहें।
कब आओगे? कब आओगे?, अखियाँ तकती प्रभु राहें॥
देहालय का मन मंदिर यह, आप बिना तो है शमशान।
आप पधारो इसमें तो यह, बन जाएगा मोक्ष महान्॥

(दोहा)

दोष कोश हम हैं प्रभो, दुनियाँ में मदहोश।
छींटा मारो ज्ञान का, आए हमको होश॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

केवल सुख की आशा में हम, जिनको अपना मान रखे।
उनसे दुख ही दुख पाते पर, उन्हें तनिक ना त्याग सके॥
जन्म मरण जो देते आए, क्या ये मिथ्या दल-मल है।
यदि है तो इनको धोने में, तेरा मात्र कृपाजल है॥
अंतर बाहर शुद्धि को, अर्पित यह जलधार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

कितना हमने सहन किया प्रभु, कब तक और सहन करना।
अब तो ढोया जाए न हमसे, कितना भार वहन करना॥
अनादिकाल से तपते आए, अब तो तपा नहीं जाता।
राग-द्वेष की इस ज्वाला को, अब तो सहा नहीं जाता॥
चंदन से वन्दन करें, हरो राग अंगार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कहीं मोह के गहरे गड्ढे, कहीं मान का उच्च शिखर।
कहीं राग माया का दल-दल, कहीं क्रोध का तीव्र जहर॥
ऐसे में जब राह न सूझे, कहो किसे तब ध्याना है?
शरण आपकी आ पहुँचे तो, और कहाँ अब जाना है?
शरण प्राप्ति को चरण में, अक्षत हैं तैयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

एक तरफ यह विश्व जहाँ पर, हल्दी मेंहदी में उलझा।
वहीं आपका ब्रह्म स्वरूपी, चेतन इनसे है सुलझा॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेंहदी, सचमुच तुम तो हो हीरा।
अगर आपकी छाँव मिले तो, हम अब्रह्म हरें पीड़ा॥

काम नाश को सौंपते, पुष्पों का उपहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी भोजनालय में जाकर, कभी औषधालय में जा।
ज्यों-ज्यों दवा कराई त्यों-त्यों, रोग बढ़े ज्यादा-ज्यादा॥
आप जिनालय में पहुँचे तो, स्वस्थ्य हुए सिद्धालय में।
भूख-प्यास से अब क्या हो जब, मस्त हुए तेरी जय में॥
क्षुधा रोग नैवेद्य से, कर पाएँ परिहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अँधेरा ऐसा छाया, हम भूले अपने घर को।
अब अपना अहसास हुआ है, जब से पूजा जिनवर को॥
ज्ञान-सूर्य को दीप दिखाना, यह उपचार नहीं होता।
दीप जलाए बिन भक्तों का, निज उद्धार नहीं होता॥
दीप जला आरति करें, नशे मोह अँधयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

दौड़-धूप कितनी की आखिर, अपना घर तो विखर गया।
दीप-धूप करने वालों का, घर मंदिर-सा निखर गया॥
कर्मों के आँधी तूफाँ में, धूप तपस्या की महके।
तो चेतन-गृह में आतम की, सोन-चिरैया भी चहके॥
धूप चढ़े तो कर्म का, होता है संहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

ज्यों रसदार फलों को कीड़े, नीरस निष्फल कटुक करें।
वैसे ही परभावों के फल, महामोक्ष को नष्ट करें॥
''पुण्य फला अरिहन्ता'' से कब, महामोक्ष फल दूर हुआ।
अतः फलों के गुच्छ चढ़ाने, भक्त-वर्ग मजबूर हुआ॥
महा मोक्षफल प्राप्ति को, अर्पित फल रसदार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट-कर्म हों कभी विरोधी, सहयोगी हों यदा-कदा।
लेकिन अष्टद्रव्य का मिश्रण, सहयोगी हो सदा-सदा॥
आत्म-द्रव्य सहयोगी करने, भक्तों का सहयोग करो।
अपने भक्तों को हे स्वामी!, अपने जैसा योग्य करो॥
तुम को तुम से माँगते, करो अर्घ्य स्वीकार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : बाजे कुल्डलपुर में बधाई...)

हुआ चम्पापुर में महोत्सव[२], कि स्वर्गों से देव आए[२],वासुपूज्यजी।
माँ ने सोलह सपने देखे[२], कि त्रिलोकीनाथ आए[२], वासु....
माँ जयावती हर्षायी[२], कि गर्भ में पूज्य आए[२], वासु....
आषाढ़ कृष्ण छठ आई[२], कि सुर नर गीत गाए[२] वासु....
कृष्णा छठ आषाढ़ को, महाशुक्र सुर त्याग।
जयावती के गर्भ में, वसे पूज्य जिनराज॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बाजे चम्पापुर में बधाई[२], कि नगरी में पूज्य जन्मे[२], वासु....
घड़ी जन्मोत्सव की पाई[२], कि त्रिलोक में आनन्द छाए[२], वासु....
अभिषेक हुआ मेरु पर[२], कि देव क्षीर जल लाए[२], वासु....
फागुन वदि चौदस आई[२], कि शचि सुर नर झूमें[२], वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फाल्गुन वदि चौदस आई[२], कि प्रभु हुए वैरागी[२], वासु....
लौकान्तिक देव पधारे[२], कि बने तप सहभागी[२], वासु....
फिर पुष्पाभा शिविका से[२], कि वन मनोहर पहुँचे[२], वासु....
झट नमः सिद्धेभ्य कहकर[२], कि केशलौंच किए त्यागी[२], वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गए, सादर जिन्हें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपो मङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब दूज माघ सुदि आई[२], कि घातिकर्म सब नाशे[२], वासु....
तब बने केवली स्वामी[२], कि लगा समवसरण प्यारा[२], वासु....
फिर खिरी दिव्यध्वनि मंगल[२],कि गूँजे जय-जयकारे[२], वासु....
बही तत्त्वज्ञान की धारा[२], कि धर्म ध्वजा फहराई[२], वासु....
दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भादों सुदि चौदस आई[२], कि कर्म सारे हर डाले[२], वासु....
हुई मुक्ति वधू नत नयना[२], कि वरमाला तुम्हें डाली[२], वासु....
हुई चम्पापुर से मुक्ति[२], कि पाँचों कल्याण हुए[२], वासु....
बाजे चम्पापुर शहनाई[२], कि प्रभु को मोक्ष हुआ[२], वासु....

भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनन्त चौदस साथ।
चम्पापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

दर्शन का अतिशय महा, रुचे नहीं संसार।
अतः कहें जयमाल हम, नत हो बारम्बार॥

(ज्ञानोदय)

बारहवें प्रभु वासुपूज्य हैं, बारह अंगों के दाता।
बारह सभासदों के स्वामी, बारह तपो अधिष्ठाता॥
बारह भावनाएँ भा करके, बारह विधि के बजा दिए।
सो बारह चक्री इन्द्रादिक, चरणों में सिर झुका दिए॥ १॥

जिन चरणों में महापुरुष भी, झुक-झुक शीश झुकाते हैं।
उन चरणों में झुक-झुक हम भी, अपना भाग्य जगाते हैं॥
इन्द्र पूज्य वसुपूज्य पुत्र हैं, वासुपूज्य तीर्थंकर जो।
जिनका नाम अकेला हर ले, संकट महाभयंकर जो॥ २॥

एक हुए पद्मोत्तर राजा, करें धर्ममय भू-पालन।
जिसने जिनवर के दर्शन कर, किया अर्चना और नमन॥
तब प्रभु से उपदेश प्राप्त कर, तत्त्वज्ञान उत्पन्न हुए।

राज्य सौंप धनमित्र पुत्र को, संयम धार प्रसन्न हुए॥ ३॥
तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, महाशुक्र में इन्द्र हुए।
भोग स्वर्गसुख सपने देकर, चम्पापुर में जन्म लिए॥
धर्म हुआ विच्छेद जहाँ पर, वहीं हुआ जन्मोत्सव था।
नगर शहर घर बजी बधाई, हुआ पूर्ण सुभिक्ष तब था॥ ४॥
कुमारकाल बिताकर प्रभु ने, नश्वर जग का चिंतन कर।
निज को सजा, सजा विधि को दें, तप धारा बेला कर कर॥
देवों ने तप कल्याणक कर, पुण्य कमाया मौके में।
अगले दिन फिर हुई पारणा, सुन्दर नृप के चौके में॥ ५॥
एक वर्ष छद्मस्थ बिताकर, कदम्ब तरुतल में थित हो।
घाति कर्म हर बने केवली, अतः सभी से पूजित हो॥
समवसरण में छ्यासठ गणधर, बहत्तर हजार मुनि ध्यानी।
अनगिन जन से भरे खचाखच, सभासदों के तुम स्वामी॥ ६॥
आर्यक्षेत्र में विहार करके, धर्मवृष्टि कर वापस आ।
एक हजार वर्ष तक रहकर, चम्पापुर में ध्यान लगा॥
रजतमालिका नदी किनारे, मंदरगिरि पर थित होकर।
साँयकाल में मोक्ष पधारे, बन्धन हर वंदित होकर॥ ७॥
ये ऐसे तीर्थंकर हैं जो, पहले बाल ब्रह्मचारी।
राज्य न भोगे और जिन्हें भी, रुची नहीं दुनियाँदारी॥
जिनके पाँच हुए कल्याणक, सबके सब चम्पापुर में।
जिनके ध्याता भक्त पहुँचते, देखो शीघ्र मोक्षपुर में॥ ८॥
जिनके शासन तीर्थकाल में, द्विपृष्ठ नामक नारायण।
तथा अचल बलभद्र हुए थे, थे तारक प्रतिनारायण॥

ऐसे वासुपूज्य प्रभु करते, नित कल्याण भक्त जन का।
मंगल ग्रह क्या मोह अमंगल, टले मिले फल पूजन का॥ ९॥
अतः हमें प्रभु वासुपूज्य को, निज आदर्श बनाना है।
ब्रह्मचर्य की कठिन साधना, प्रभु जैसी अपनाना है॥
चलकर जिनके महामार्ग पर, प्रभु प्रसाद को पाना है।
राग-द्वेष को मंद बनाकर, वीतरागता लाना है॥१०॥
मुक्तिवधू अब भायी तो फिर, शादी-व्याह रचाना क्यों?
मुक्तिवधू से मन लागा तो, मन अन्यत्र लगाना क्यों?
मुक्तिवधू से होए सगाई, पिछी-कमण्डल धारो तो।
सिद्धालय में हो वरमाला, वासुपूज्य को ध्यायो तो॥ ११॥

(सोरठा)

भैंसा जिनका चिह्न, वासुपूज्य वे नाथ हैं।
पाएं मुक्ति अभिन्न, अतः चरण में माथ हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

वासुपूज्य स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वासुपूज्य जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री विमलनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

विमलनाथ प्रभु नाम का, है अतिशय आशीष।
भक्त जगत् का भक्ति को, झुक जाता खुद शीश॥

(शंभु)

जय विमल प्रभो! जय विमल प्रभो!, जय विमल प्रभो! अतिशयकारी।
अब हृदय हमारे आओ प्रभु, तो हम भी हों मंगलकारी॥
जिस घट में तुमने वास किया, वह हृदय बना मुक्ति का घर।
कर्मों के बन्धन टूट पड़े, जिन-रस की धार बहे झर-झर॥
हे! निज चैतन्य विहारी जिनवर, हृदय हमारे आओ-ना।
जो द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, वो शुद्धातम दिलवाओ-ना॥
हम उस पदवी के अभिलाषी, जो पदवी तुमने पाई है।
इसलिए आज हे विमलराज!, यह अर्जी चरण लगाई है॥

(दोहा)

अर्जी सुनकर भक्त पर, करिये कृपा जरूर।
कल क्या हो सो भक्ति को, आज दास मजबूर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय : नन्दीश्वर श्री जिनधाम)

जल जैसा कंचन रूप, आतम का शोभे।
निर्मल सुख सिद्ध स्वरूप, अपना मन मोहे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

तपता जलता संसार, क्या शीतल जग में।
जिनवाणी छायादार, सो हम प्रभु पग में॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

भवसागर क्षार अपार, कौन खिवैया है।
जिन तारण तरण जहाज, भक्ति नैया है॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब खिलते चारित फूल, भक्त भ्रमर गूँजे।
हो काम व्यथा तब धूल, मुक्ति स्वयं पूजे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

निज का चखने को स्वाद, ले नैवेद्य खड़े।
जिनवर को करके याद, सादर चरण पड़े॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यह मोह करे जग व्याप्त, जीते कौन बली।
दो अंतर-ज्योति आप्त, भागे मोह-खली॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सब जले, जले ना कर्म, जो दुर्गन्धित हैं।
जब जले धूप दे धर्म, धर्मी वंदित हैं॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

फल भोगें तो दें! रोग, जिससे जग रोता।
फल अर्पण से सुख योग, निज कालुष धोता॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

(शंभु)

जब विमलप्रभु का नाम सुना तो, दर्शन की इच्छा जागी।
अब दर्शन करके मन नहिं माना, तो पूजन की लौ लागी॥
फिर पूजन से ये भाव बने कि, क्यों नहिं प्रभु सम बन जाएँ।
तो भाव भक्ति से अर्घ्य चढ़ा के, शीश झुका के गुण गाएँ॥
अनुकूल रहें प्रतिकूल रहें, अब हमको इसकी आश नहीं।
हम सुखी रहें या दुखी रहें, इसकी भी कोई प्यास नहीं॥
बस नाथ आपकी पद रज से, हम निज का निज शृंगार करें।
जिनभक्ति नैया पर चढ़कर, सब कुछ सह लें भव पार करें॥

(दोहा)

विमलप्रभु वरदान दो, नभ जैसे विस्तीर्ण।
सहनशील भू-सम बनें, सागर सम गंभीर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

दशमी कृष्णा ज्येष्ठ में, तजे स्वर्ग सहस्रार।
जय श्यामा के गर्भ में, वसे विमल भर्त्तार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथी शुक्ला माघ में, जन्मे विमल जिनेन्द्र।
कृतवर्मा गृह राज्य में, उत्सव करें सुरेन्द्र॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि दीक्षा धरे, छोड़े पर-संसार।
श्रमण संत विमलेश को, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी कृष्णा माघ में, पाए केवलज्ञान।
विमलेश्वर अरिहन्त को, नमस्कार धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आठें कृष्ण अषाढ़ को, विमल प्रभु को मोक्ष।
सम्मेदाचल से हुआ, जिनको सादर धोक॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

विगत दोष गुण कोष हैं, विमलनाथ जिनदेव।
शिव नेता को भक्त के, शीश झुके स्वयमेव॥

(ज्ञानोदय)

जिनके दर्पण जैसे निर्मल, ज्ञान लोक में जग झलके।
विश्व मलों को नाश चुके जो,उन्हें नमन हों पल-पल के॥

ऐसे विमलनाथ हम सबको, निर्मल कर दें मल हर के।
इसी लक्ष्य से जिनको पूजें, चरणों में माथा धर के॥ १॥
विमलप्रभु जैसे बनने को, विनय सुनो हे! विमलेश्वर!
नाथ! आपके पद पर चलने, कहें कहानी चित देकर॥
पद्मसेन इक धर्मी राजा, एक छत्र जो राज्य करे।
कल्पवृक्ष सम प्रजा जनों के, न्याय नीति से काज करे॥ २॥
तथा प्रजा भी राजाज्ञा को, पाल-पालकर पली-पुषी।
राजा को प्रभु मिले केवली, तब नमोऽस्तु की खुशी-खुशी॥
प्रभु से धर्म स्वरूप जानकर, अगली पर्याएँ जानी।
केवल दो भव जग में हैं सो, उसने तप की भी ठानी॥ ३॥
ऐसा पर्व मनाया उसने, जैसे कि तीर्थंकर हो।
पद्मनाभ को राज्य सौंपकर, निकला स्वयं दिगम्बर हो॥
ग्यारह अंगों का अध्ययन कर, प्रभु ने की चाँदी-चाँदी।
नामकर्म के योग्य पुण्यकर, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी॥ ४॥
चार-चार आराधन करके, अंत समय में मरण किए।
सहस्त्रार में सहस्त्रार की, इन्द्र विभूति वरण किए॥
जहाँ अठारह सागर उसकी, पूर्ण आयु थी भोगमयी।
चार हाथ ऊँचा तन उसका, जघन्य लेश्या शुक्लमयी॥ ५॥
वह आहार मानसिक करता, अणिमा-महिमा गुणवाला।
भोग-भोग चिरकाल स्वर्ग को, भूपर था आने वाला॥
तो काम्पिल्य नगर के राजा, कृतवर्मा की पटरानी।
जयश्यामा ने सोलह सपने, देख उन्हीं का फल जानी॥ ६॥
हुआ गर्भ कल्याणक तब ही, लहर खुशी की दौड़ी थी।

जयश्यामा ने पुत्र जन्म दे, अपनी राहें मोड़ीं थीं॥
देव जन्म-अभिषेक पूर्ण कर, नाम विमलवाहन रक्खे।
ताण्डव नृत्य इन्द्र ने करके, भक्ति रंग डाले पक्के॥ ७॥
कुमारकाल बिताकर प्रभु का, पर्व राज्य अभिषेक हुआ।
बर्फ-नगीना, देख विलीना, प्रभु को झट वैराग्य हुआ॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, प्रभु की हाँ में हाँ-हाँ की।
चले देवदत्ता शिविका से, बेलामय जिनदीक्षा ली॥ ८॥
नन्दनपुर के कनक-प्रभु तब, राजा ने पड़गाहन कर।
दे आहार दान सुख पाया, पंचाश्चर्य पुण्य पाकर॥
तीन वर्ष छद्मस्थ बिताकर, दीक्षावन में ध्यानी हो।
पूर्ण घातिया कर्म नशाए, पुजते केवलज्ञानी हो॥९॥
समवसरण में गंधकुटी में, सिंहासन कमलासन पर।
हुए विराजित जहाँ मेरु अरु, थे मंदर पचपन गणधर॥
विहार करके भव्य धान्य को, तुष्ट पुष्ट संतुष्ट किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, योग निरोध स्वरूप किया॥१०॥
आठ हजार छह सौ मुनियों सह, मोक्ष अष्टमी को पाया।
काल अष्टमी तब से जग में, पुजने लगी बनी माया॥
फिर सौधर्म इन्द्र ने आकर, अंतिम शुभ संस्कार किया।
ऐसे विमलनाथ को हमने, नमोऽस्तु बारम्बार किया॥ ११॥
बुद्धू को जो बुद्ध बना दें, शुद्ध करें अभिशापों से।
हमें बचा कर निर्मल कर दें, हिंसादिक सब पापों से॥
उनको बुध ग्रह तक सीमित कर, क्या? अज्ञान नहीं होगा।
मन से 'सुव्रत' जय तो बोलो, क्या? कल्याण नहीं होगा॥१२॥

(सोरठा)

सूकर जिनका चिह्न, विमलनाथ प्रभु नाम है।
सिद्ध बने हर काम, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

विमलनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, विमलनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री अनन्तनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अनन्तगुणी है आतमा, सर्वसुखी भरपूर।
अनन्तप्रभु उसके प्रभु, नमोऽस्तु जिन्हें जरूर॥

(हरिगीतिका)

प्रभु आपकी पद वन्दना से, शुद्धता से उर खिले।
हर कष्ट कटते भव-भवों के, पुण्य की पंक्ति मिले॥
पातक कटें गुण चिंतनों से, शीघ्र ही निज भान हो।
फिर आप जैसी शुद्ध निर्मल, चेतना का ज्ञान हो॥
हम आपके पथ पर चलें, पदवी मिले अरिहन्त की।
इससे रचाई अर्चना प्रभु, परमपूज्य अनन्त की॥
है प्रार्थना केवल हमारी, भक्ति नैया थाम लो।
मृत्यु महोत्सव हो हमारा, कण्ठ में प्रभु नाम हो॥

(दोहा)

अनन्त स्वामी को नमन, करें वन्दना आज।
भक्ति पुष्प हम, तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(पंचचामर/तोमर)

हमें मिली स्वजन्म से हि, मृत्यु की महा सजा।
मिला नहीं इलाज या, मिली नहीं यहाँ दवा॥
करें निजात्म को निरोग, नीर को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

अनादि से जले तपे, मिली सदा अशान्ति है।
कहाँ मिले जिनेन्द्र छाँव, आत्म रूप शान्ति है॥
करें निजात्म को सुशीत, शीत को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

विनाशवान ही हमें, मिला सदैव विश्व में।
दिखा स्वरूप आपका, मिले हमें भविष्य में॥
करें निजात्म अक्षयी, सुपुंज को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जिसे स्व-वीतरागता, जिनेश रूप भाएगा।
विकार का विभाव काम, तो विराम पाएगा॥
करें निजात्म को सुशील, पुष्प को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

शरीर है नहीं शरीफ, भूख प्यास से दुखी।
अपूर्ण कामना न ज्ञान, के बिना रहे सुखी॥
करें निजात्म पूर्ण तृप्त, कामना चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

महान् मोह की घटाएँ, आत्मकक्ष ढाँकती।
महारती जिनेन्द्र की, महान् मोह नाशती॥
भरें निजात्म ज्ञान से, सुदीप ये जलाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

लकीर हाथ की भरी, विभाव गंध कीच से।
निकालिए हमें अनन्त, कर्म-बन्ध बीच से॥
भरें निजात्म गंध से, सुगंध को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अनन्त जन्म लक्ष्य के, अभाव में गँवा दिए।
फलों भरी चिदात्म को, कषाय से जला दिए॥
मिले निजात्म आत्म को, फलात्म के चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अनन्त विश्व में फँसे, अनन्त राग-द्वेष से।
अनन्त कष्ट भोगते, अनन्त बार क्लेश से॥
अनन्त बार नर्क की, अनन्त बार स्वर्ग की।
अनन्त बार वेदना, अनन्त बार दर्द की॥

अनन्त बार की कथा, अनन्त बार छोड़ दी।
अनन्त तो मिले नहीं, अनन्त शर्त तोड़ दी॥
हमें अनन्तनाथजी, बुलाइये अनन्त में।
अनन्त-धर्म दीजिये, मिलाइये अनन्त में॥

(सोरठा)

मिले यही वरदान, अनन्तप्रभु भगवान् से।
अर्पित अर्घ्य महान्, वन्दन मन वच प्राण से॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

एकम् कार्तिक कृष्ण को, तज सोलह सुर इन्द्र।
जयश्यामा के गर्भ में, आए अनन्त जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्में बाल अनन्त।
सिंहसेन नृप के यहाँ, बाजे ढोल मृदंग॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी जन्म तिथि में हुआ, शुभ दीक्षा कल्याण।
स्वामी संत अनन्त को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा चैत्र अमास को, कर्म नशा ये चार।
बने अनन्त अरिहन्त जी, जिन्हें नमोऽस्तु बहुबार॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी ज्ञान तिथि में गए, मोक्ष, अनन्त ऋषीश।
सम्मेदाचल को नमन, मिले अनन्ताशीष॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

अनन्त गुण भण्डार हैं, प्रभु अनन्त भगवान।
अनन्त गुण पाने करें, बारम्बार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

जो कुछ नाथ! आपने चाहा, उसे आपने प्राप्त किया।
निजी वज्रपौरुष से स्वामी, भव का चक्र समाप्त किया॥
इतने-इतने उच्च उठे कि, लोकशिखर पर जा बैठे।
जो हम चाहें वो ना पाए, क्या हमसे तुम हो रूठे ?॥ १॥

सुख माँगा दुख पाया हमने, माँगा स्वर्ग, नरक पाया।
माँगी शान्ति मिली अशान्ति, माँगा अमृत विष पाया॥
धूप मिली जब माँगी छाया, माँगा धैर्य मिली माया।
माँगा पुण्य, पाप तब पाया, भक्त समझने ये आया॥ २॥

समझा दो जयश्यामा नन्दन!, सिंहसेन सुत समझा दो।
एक पद्मरथ राजा वाली, पुण्य-कथा भी बतला दो॥
एक दिवस वह सुने स्वयं प्रभ, जिनवर जी के दिव्य वचन।
जिनको सुनकर मन में गुनकर, छोड़ा राज्य पाठ यश धन॥३॥

राज्य पुत्र धनरथ को देकर, संयम धर आगम ध्याया।
तीर्थंकर प्रकृति को बाँधा, सल्लेखन कर सुर पाया॥
स्वर्ग त्याग कर नगर अयोध्या, सिंहसेन जयश्यामा के।
गर्भ जन्म कल्याणक उत्सव, सुर-रत्नों को वर्षा के॥ ४॥

बचपन गया बनें फिर राजा, देखा उल्कापात तभी।

बनें विरागी तो लौकांतिक, सुर अनुमोदन करे तभी॥
दीक्षा का आहार दान दे, विशाल राजा सुखी हुए।
दो छद्मस्थ वर्ष के गुजरे, केवलज्ञानी आत्म छुए॥ ५॥
जय आदिक पचास गणधर से, समवसरण की सभा भरी।
द्रव्य तत्त्व अध्यात्म शिखर की, प्यारी दिव्य-ध्वनि बिखरी॥
भव्य जनों को ज्ञान मार्ग दे, विहार करना छोड़ दिया।
तीर्थ स्वयंभूकूट शिखर पर, मासिक योग निरोध किया॥ ६॥
इकसठ सौ मुनियों को साथी, बना मोक्ष को पाया था।
शुभ अंतिम संस्कार सुरों ने, कर कल्याण मनाया था॥
जिनके नाम मात्र सुमरण से, अनन्त गुण यूँ ही मिलते।
उनको बुधग्रह तक सीमित कर, किसके खुशी बाग खिलते॥७॥
तब ही पुरुषोत्तम नारायण, फिर सुप्रभ बलभद्र हुए।
मधुसूदन प्रतिनारायण भी, इसी काल में हुए हुए॥
एसी श्री अनन्त जिनवर की, जय बोलो गुण गाओ तो।
फिर जो चाहो वो सब पाओ, इनकी शरणा आओ तो॥ ८॥
कर-कर याद आपकी बातें, रात-रात भर रोते हम।
भक्ति समर्पण का जल भरकर, पलकें अपनी धोते हम॥
माला फेरें करें अर्चना, बीज पुण्य का बोकर हम।
प्रभु 'सुव्रत' का भाग खिला दो, मस्त रहें खुश होकर हम॥९॥

(सोरठा)

सेही जिनका चिह्न, जो प्रभु अनन्तनाथ हैं।
वैभव मिले अनन्त, जिन चरणों में माथ हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अनन्तनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अनन्तनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री धर्मनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

धर्म सूर्य जब हो उदय, दिखता निज संन्यास।
धर्मनाथ को हो नमन, पाने ज्ञान प्रकाश॥

(गीतिका)

आप ही हो मात्र सुन्दर, आप ही अपने रहे।
आप ही हो मात्र साँचे, झूठ सब सपने रहे॥
आप तो लोकाग्र पर हो, भक्त क्यों हम दूर हैं।
चाहते हैं आपको पर, मिलन से मजबूर हैं॥
सात राजू उच्च स्वामी, वीतरागी नाथ हैं।
हम सरागी आप बिन तो, रोज-रोज अनाथ हैं॥
डोर श्रद्धा की हमारी, आप ही प्रभु थाम लो।
भाव भक्ति प्रार्थना सुन, भक्त पर कुछ ध्यान दो॥

(दोहा)

हृदय हमारे आइए, धर्मनाथ भगवान्।
सादर तुम्हें प्रणाम कर, करते पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

नीर श्रद्धा का लिया है, भक्ति के निज पात्र में।
ज्यों किया अर्पण तुम्हें तो, आत्म झलकी आप में॥
मैल मिथ्या पूर्ण धोने, जल हमें निज धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

क्रोध ज्वाला से जला है, प्राणियों का चित्-सदन।
इस सदन में आ विराजो तो, खिले आतम वतन॥
आतमा की शान्ति पाने, भक्त पर प्रभु छाँव हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

रत्न हीरे मोति आदिक, तो नहीं हैं पास में।
क्या चढ़ाएँ जो हमें भी, टेर लें प्रभु पास में॥
आतमा अक्षय बनाने, धर्म का पद धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आतमा की पुष्प बगिया, आप तो महका रहे।
पंखुड़ी इक दो उसी की, क्यों हमें तड़पा रहे॥
मद के विजेता बन सकें हम, आप सम निष्काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

राग का ही स्वाद जाना, वीतरागी ना हुए।
खूब पुद्गल को चखा पर, भक्ति रस को ना छुए॥
स्वाद आतम का चखें बस, धर्म रस विज्ञान दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

आज तक तो था अँधेरा, सूझता ना कुछ भला।
मोह की काली घटा में, धर्म का दीपक जला॥
आरती करके तुम्हारी, आतमा का भान हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

गंध खिलती आत्म की तो, कर्म कीड़े भागते।
धूप प्रभु को सौंपते तो, भाग्य अपने जागते॥
गंध से निज गंध पाने, धर्म का बस नाम लो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

आतमा क्वाँरी हमारी, भक्ति मण्डप रिक्त है।
आपकी नजरें पड़ें तो, मुक्ति वरता भक्त है॥
भक्ति मण्डप में पधारो, धर्म की फलमाल हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

देखने जग को दिखाने, अर्घ्य प्रभु को सौंपते।
धर्म बिन धर्मी कहा के, धर्म अपना झौंकते॥
हाय! दर्शन तज, प्रदर्शन, में फँसा संसार क्यों।
प्राप्त कर पर्याय दुर्लभ, कर रहा अपकार क्यों॥
धर्म को तज कर मिली है, शक्ति किसको बोलिए।
धर्म ही अंतिम शरण है, नयन अपने खोलिए॥
अर्घ्य श्रद्धा से चढ़ाएँ, धर्म से हर काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

तेरस सुदि वैशाख को, त्याग अनुत्तर स्वर्ग।
धर्म हुए कल्याणमय, पाए सुप्रभा गर्भ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लत्रयोदश्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुए नत माथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष पूर्णिमा को हरे, घातिकर्म संसार।
धर्म संत अरिहन्त को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्षधर्म प्रभु पाए।
सुदत्तकूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अधर्म से ऊँचे उठे, छुए धर्म निज धाम।
यथा धर्म धर्मेश को, सादर रोज प्रणाम॥
मूलस्तंभ जो धर्म के, दिए धर्म सुखदान।
ऐसे धर्म जिनेश का, भक्त करें गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय धर्मनाथ धर्मेश्वर, जय-जय धर्म-पिता दाता।
जय-जय धर्मप्रचारक धर्मी, जय-जय धर्म-गुरु धाता॥
जय-जय धर्मधुरंधर धीरा, धर्म धर्मपति विख्याता।
जय-जय धर्मतीर्थ के पालक, अपना कैसा है नाता॥ १॥

जैसे नीरज का सूरज से, शिशु का माता से जैसे।
जैसे जीवों का साँसों से, मछली का जल से जैसे॥
जैसे खुशबू का फूलों से, पक्षी का नभ से जैसे।
जैसे आत्म ज्ञान दर्शन हैं, भक्त और भगवन् वैसे॥ २॥

एक बड़े राजा दशरथ थे, भाग्य बुद्धि बल यशक्षेमी।
धर्म प्रजापालक कल्याणी, प्रकृति उत्सव सुख प्रेमी॥
एक बार बैशाख पूर्णिमा, उत्सव से उल्लास बढ़े।
तभी देखकर चन्द्रग्रहण को, राजा कहीं उदास खड़े॥ ३॥

बने विरागी संयम धरकर, प्रकृति बाँधी तीर्थंकर।
समाधि कर सर्वार्थसिद्धि में, बन अहमिन्द्र तजे सुरपुर॥
माता को सोलह सपने दे, गर्भ जन्म कल्याण हुए।
सुमेरु पर फिर स्वर्ण घटों से, क्षीर-नीर से न्हवन हुए॥ ४॥

कुमारकाल पूर्ण भोगा फिर, राज्य अभ्युदय प्राप्त हुआ।
इक दिन उल्कापात दिखा तो, राजा को वैराग्य हुआ॥
काया-माया नहीं हमारी, धर्म ज्ञान दर्शन अपने।
राज्य सुधर्म पुत्र को देकर, निकल पड़े तप से सजने॥ ५॥

हो आरूढ़ नागदत्ता से, चले शालवन दीक्षा ली।
ज्ञान मनःपर्यय उपजा फिर, अगले दिन मुनि भिक्षा ली॥

पाटलिपुत्र नगर के राजा, धन्यषेण तब धन्य हुए।
तभी प्रसिद्ध दानशासन के, पंचाश्चर्य प्रसन्न हुए॥ ६॥
एक वर्ष छदमस्थ बिताकर, सप्तच्छद तरुतल में जा।
बेला कर नक्षत्र पुष्य में, बने केवली लगी सभा॥
धर्मतीर्थ जो धर्म रहित था, किया धर्म दे अग्रेसर।
मुख्य आर्यिका रही सुव्रता, तेतालीस रहे गणधर॥ ७॥
धर्मदेशना धर्मध्वजा दे, किए विहार बंद स्वामी।
श्रीसम्मेदशिखर पर जाकर, बन बैठे मासिक ध्यानी॥
आठ शतक नौ मुनियों के सह, धर्मनाथ प्रभु मोक्ष गए।
रहा पुष्य नक्षत्र जहाँ पर, मोक्षपर्व सब पूज रहे॥ ८॥
दशरथ नृप दस-रथों सरीखे, धर्म धार जिन बुद्ध बने।
धर्मनाथ बन धर्म-युद्ध कर , पाप कर्म हर शुद्ध बने॥
धर्मनाथ का केवल सुमरण, उलझन कष्ट कर्म हर ले।
रे! चेतन अब तनिक सोचकर, मन में तनिक धर्म धर ले॥९॥
तब बलभद्र सुदर्शन जन्मे, और पुरुषसिंह नारायण।
मघवा सनतकुमार चक्री भी, मधुक्रीड प्रतिनारायण॥
वहीं सनतकुमार चक्री जो, देवों से भी सुन्दर थे।
धर्म धारकर पाप नाशकर, चले मोक्ष के मंदिर थे॥ १०॥
उनको बुधग्रह में क्यों बाँधो, जो भू नभ में बँध न सके।
सबसे ऊँचे धर्म हमारे, मोहपंथ पै चल न सके॥
अतः अपने अनन्य भक्त को, अपना धर्म दिला दो ना।
श्रद्धालय से सिद्धालय में, 'सुव्रत' को बुलवालो ना॥ ११॥

(सोरठा)

वज्रदण्ड जिन चिह्न, धर्मनाथ प्रभु नाम है।
पन्द्रहवें धर्मेश, बारम्बार प्रणाम है॥
जब तक मिले न धर्म, चरण शरण हो आपकी।
फिर हरकर हर कर्म, करें शुद्धि निज आत्म की॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

धर्मनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, धर्मनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

शान्तिप्रभु के पद-कमल, भक्त हृदय के प्राण।
द्रव्य भाव से भक्ति कर, हम तो करें प्रणाम॥

(मालती या लोलतरंग जैसा)

जब-जब याद तुम्हारी आई, तब-तब मन्दिर को हम दौड़े।
जब-जब मन्दिर को हम दौड़े, तब-तब दर्शन कर, कर जोड़े॥
जब-जब दर्शन कर, कर जोड़े, तब-तब पूजन पाठ रचाई।
जब-जब पूजन-पाठ रचाई, तब-तब याद विधान की आई॥
जब-जब याद विधान की आई, तब-तब शान्ति विधान रचाए।
जब-जब शान्ति विधान रचाए, तब-तब संकट दुख घबराए॥
जब-जब संकट दुख घबराए, तब-तब निज की शान्ति पाई।

जब-जब निज की शान्ति पाई, तब-तब याद तुम्हारी आई॥
शान्ति-प्रभु हमको मिले, जिनकी हमें तलाश।
आओ! आओ! मन वसो, करिये नहीं उदास॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जब-जब शान्ति प्रभु को भूले, तब-तब मिथ्या फलते फूले।
जब-जब मिथ्या फलते फूले, तब-तब जन्म मरण हम झेले॥
जैसे ही शान्ति को याद किया तो, निर्मल आतम सी झलकी है।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी जल की है॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जब-जब शान्ति का नाम लिया ना, तब-तब खूब उपद्रव होते।
जब-जब खूब उपद्रव होते, तब-तब चेतन के दिल रोते॥
जैसे ही शान्ति का नाम पुकारा, ज्वाला शीतल हुई चेतन की।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी चंदन की॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जब-जब शान्ति की माला न फेरी, तब-तब मन बंदर सा फिरता।
जब-जब मन बन्दर सा फिरता, तब-तब रूप दिगम्बर न रुचता॥
जैसे ही शान्ति की माला फेरी, मोक्ष महल सा निज में पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अक्षत पुञ्ज चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब-जब शान्ति का दर्शन न पाया, तब-तब निज की कली मुरझाई।
जब-जब निज की कली मुरझाई, तब-तब आतम खिलने न पाई॥
जैसे ही शान्ति का दर्शन पाया, दोष नशे हुई ब्रह्म गुलाला।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित पुष्पों की माला॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जब-जब ध्याया न शान्तिप्रभु को, तब-तब जीवन नीरस जैसा।
जब-जब जीवन नीरस जैसा, तब-तब आतम भूखा प्यासा॥
जैसे ही शान्ति का ध्यान लगाया, निज में निज का रस-सा आया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में ये नैवेद्य चढ़ाया॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जब-जब शान्ति की आरती न की, तब-तब जीवन में छाया अँधेरा।
जब-जब जीवन में छाया अँधेरा, तब-तब राही का बढ़ता है फेरा॥
जैसे ही शान्ति की ज्योति मिली तो, ज्ञान का सूर्य प्रकाशित पाया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में आकर दीप जलाया॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जब-जब शान्ति का पाठ किया ना, तब-तब कर्मों की बढ़ती कहानी।
जब-जब कर्मों की बढ़ती कहानी, तब-तब निज की विभूति विरानी॥
जैसे ही शान्ति का पाठ रचाया, कर्मों की कड़ियाँ चट-चट चटकीं।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में खेएँ धूप धूप-घट की॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जब-जब न पूजा शान्तिप्रभु को, तब-तब दुनियाँ हमसे रूठी।
जब-जब दुनियाँ हमसे रूठी, तब-तब जीने की आशा छूटी॥
जैसे ही शान्तिप्रभु को पूजा, आतम में परमातम सा पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में फल के गुच्छे चढ़ाए॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल...)

नमो-नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो[२]
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में[२]
चुपके-चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा....नमो....
एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में[२]
रत्न-वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में[२]
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा...नमो...

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : बाजे कुण्डलपुर...)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शान्ति जन्मे...शान्तिनाथजी
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शान्तिनाथ जी
सौधर्म शचि सह आए, कि अभिषेक मेरु पे करें... शान्तिनाथ जी
नृप विश्वसेन हर्षाए, कि जन्म कल्याणक है... शान्तिनाथ जी

(दोहा)

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा, झूठी दुनियाँ त्याग,
धार ले वैराग्य

जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पत्नि मित्र बन्धु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥
मोह मिथ्या नींद से अब, जाग रे चेतन जाग। धार ले वैराग्य।

(दोहा)

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना, तब तक मोह का अंध टले ना॥
जैसे ही मोह का अंध नशाए, केवलज्ञानी हों अरिहन्ता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शान्तिनाथ जिनन्दा॥

(दोहा)

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अरिहन्त को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥
कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥

(दोहा)

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

विघ्न हरण मंगलकरण, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनकी पूजन से मिले, वीतराग विज्ञान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्ति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥
वीतराग - सर्वज्ञ - हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाए रहते, अजब-गजब बलिहारी है॥ १॥
पिछले भव में रहे मेघरथ, राज-पाठ जिनने छोड़ा।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति का, नाम कर्म बन्धन जोड़ा॥
फिर प्रायोपगमन धारण कर, कर संन्यासमरण उत्तम।
काया तज अहमिन्द्र बने फिर, हस्तिनागपुर लिया जनम॥ २॥
विश्वसेन नृप ऐरा रानी, तुमको पाकर धन्य हुए।
गर्भ जन्म कल्याणक करके, सारे भक्त प्रसन्न हुए॥
शंख सिंह भेरी घण्टा से, जन्म सूचना पाकर के।
चार निकायों के देवों ने, पर्व मनाया आकर के॥ ३॥
गर्भ-भवन में शचि-इन्द्राणी, जाकर के माँ बालक को।
सुला दिया माया-निद्रा से, उठा लिया जिन-बालक को॥
सौंप दिया सौधर्म इन्द्र को, इन्द्र चले ऐरावत से।
सुमेरु पर जन्माभिषेक कर, नाम शान्तिनाथ रक्खे॥ ४॥
चक्र शंख सूरज चंदादिक, चिह्न सुनहरे थे तन में।
होकर कामदेव बारहवें, किन्तु रहे निज चेतन में॥

कुमारकाल बीत जाने पर, विश्वसेन निज राज्य दिए।
चौदह रत्न और नौ निधियाँ, प्रकट हुए जो भोग लिए॥ ५॥
शान्ति चक्रवर्ती ने इक दिन, दर्पण में दो मुख देखे।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तो, क्षणभंगुर वैभव फैंके॥
ज्यों घर तजने का सोचे तो, लौकान्तिक अनुमोदन पा।
राज्य दिया नारायण सुत को, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ॥ ६॥
तब सर्वार्थसिद्धि पालकी, से गृह तजने यतन किए।
सहस्त्र आम्रवन में दीक्षा ले, पंचमुष्ठि केशलौंच किए॥
शान्तिनाथ जब बने दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज पड़े।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तो, भक्ति पुण्य सब लूट चले॥ ७॥
मन्दिरपुर में सुमित्र राजा, दीक्षा का आहार दिए।
पंचाश्चर्य पुण्य पाया तो, सब ने जय-जयकार किए॥
सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर॥ ८॥
मासिक योगनिरोध धारकर, श्रीसम्मेदशिखर पर जा।
शुक्लध्यान से कर्म नशाकर, सिद्ध मोक्ष में बने अहा॥
जो श्रीषेण हुए राजा फिर, भोगभूमि में आर्य हुए।
देव हुए फिर विद्याधर जो, देव हुए बलभद्र हुए॥ ९॥
देव हुए वज्रायुध चक्री, फिर अहमिन्द्र मेघरथ बन।
मुनि सर्वार्थसिद्धि पहुँचे फिर, तीर्थंकर शान्ति भगवन्॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।
शान्तिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर॥ १०॥
कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।

शान्तिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शान्तिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, शान्तिप्रभु की बोलो जय॥११॥
कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाए।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाए?
किन्तु बाद में शान्तिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥ १२॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् का, ध्यान निरन्तर धारो तो।
होगा भला शान्ति भी होगी, बुध ग्रह में मत बाँधो तो॥
आज आद्य गुरु शान्तिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्ड-खण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥१३॥

(सोरठा)

हिरण चिह्न पहचान, शान्तिनाथ प्रभु नाम है।
त्रयपद मय भगवान्, बारम्बार प्रणाम है॥
पुण्य खरीदा आज, भक्ति मूल्य का दाम दें।
शान्तिनाथ जिनराज, स्वर्ग मोक्ष सुख धाम दें॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री कुन्थुनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

जीव-दया के स्तम्भ हैं, कुन्थुप्रभु जिननाथ।
करुणा के अवतार को, झुकें भक्त के माथ॥

(राज, १९-मात्रिक)

भक्ति से हम कर रहे जिन वन्दना।
द्रव्य लाए साथ करने अर्चना॥
आप कुन्थुनाथ प्यारे जिनवरम्।
आपने पाया स्वरूपी निज धरम्॥
आपको जिसने भी ध्याया ध्यान से।
विश्व ने पूजा उसे सम्मान से॥
कष्ट पीड़ा संकटों पर जय करे।
तोड़ कर के कर्मबन्धन क्षय करे॥
हम सफल मानव बनें धर्मात्मा।
आइए मन में यही है प्रार्थना॥
भक्ति से हम ...।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

पाप मिथ्या ने दिए जीवन मरण।
हमको साँची न मिली अब तक शरण॥
नीर के बदले हरो हर पाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

पा दशा प्रतिकूल हम ऊबे नहीं।
ज्ञान रस के कुण्ड में डूबे नहीं॥

चंदन के बदले हरो संताप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कौन क्या पाते दुखी इस राग से।
काँप कर क्यों भागते वैराग्य से॥
पुंज के बदले हरो भव-चाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आत्मा का फूल अब तक ना खिला।
पा लिया सब किन्तु कुछ भी ना मिला॥
पुष्प के बदले हरो रति-नाथ को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चख लिया पकवान हर इक कर्म का।
ना लिया रस आत्म का ना धर्म का॥
नैवेद्य के बदले हरो अभिशाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

आँखों के अंधे नयनसुख नाम है।
ऐसे ही मोही जनों का काम है॥
दीप के बदले हरो दुख-रात को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कस्तूरी नाभि में ले मृग भ्रम रहा।
गंध निज की पाने पर में रम रहा॥

गंध के बदले हरो विधि-पाक को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

है कृपा सबसे बड़ी जिनदेव की।
जो मिले पा के कृपा गुरुदेव की॥
सुफल के बदले पुकारें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

कुछ नहीं लाए चढ़ाने के लिए।
आए अपनी ही सुनाने के लिए॥
त्याग या अनुराग की इच्छा नहीं।
ली कभी चारित्र की दीक्षा नहीं॥
कोई भी आती नहीं सम्यक् कला।
अर्घ्य अर्पण के बिना क्या हो भला॥
इसलिए यह अर्घ्य सौपें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दशमी श्रावण कृष्ण को, सोलह स्वप्न दिखाए।
श्रीकान्ता के गर्भ में, कुन्थुनाथ प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रथम शुक्ल वैशाख को, जन्मे कुन्थुजिनेश।
सूर्यसेन के आँगने, बाजे ढोल विशेष॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में चक्र तज, कुन्थुप्रभु तप धार।
जय-जय जिनशासन हुआ, जिन्हें नमन बहु बार॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल की तीज में, पा कैवल्य सुवस्तु।
कुन्थुप्रभु अरिहन्त को, हम तो करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शिखर ज्ञानधरकूट से, मोक्ष कुन्थुप्रभु पाए।
मोक्ष जन्म तप साथ में, हम तो शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

कर्म हरण मुक्तिवरण, कुन्थुप्रभु के स्थान।
यूँ ही मिलते भक्त को, अतः करें गुणगान॥
चक्रवर्ति छठवे रहे, तेरहवे रतिनाथ।
सत्रहवे तीर्थेश की, करें भक्ति नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

साधारण निगोद को तजकर, दुर्लभ तन प्रत्येक धरें।
एकेन्द्री को तजकर मणिसम, दुर्लभ तन त्रस प्राप्त करें॥
त्रस तजकर पंचेन्द्रिय दुर्लभ, पशू नारकी सुर-बनना।
नार नपुंसक भव को तजकर, अति दुर्लभ है नर बनना॥ १॥

जन्म धारना उस भारत में, जहाँ अहिंसा कर्म पले।
देव-शास्त्र-गुरुओं की पूजा, श्रमण संस्कृति धर्म चले॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, बहे त्रिवेणी धरती पर।
ऐसे दुर्लभ दया धर्म को, बता रहे कुन्थु जिनवर॥ २॥
यही कुन्थुप्रभु पिछले भव थे, रिपु-विजयी सिंहरथ राजा।
तब ही उल्कापात देखकर, धर्मी बन गए मुनिराजा॥
कैसे हो कल्याण विश्व का, जब रोया यों अन्तर-मन।
इतनी बढ़ी विशुद्धि तब ही, शुद्ध हुआ सम्यग्दर्शन॥ ३॥
तब तीर्थंकरप्रकृति बाँधी, और समाधिमरण करके।
स्वर्ग अनुत्तर पाया जिसको, त्याग दिया नर बन करके॥
सूरसेन नृप श्री कान्ता माँ, हस्तिनागपुर हुए खुशी।
इन्द्र जन्म अभिषेक पर्व कर, नाम कुन्थु रख हुए सुखी॥ ४॥
राजा बने मण्डलेश्वर फिर षट्खण्डों के अधिकारी।
जातिस्मरण से आत्म ज्ञान पा, की शिवपथ की तैयारी॥
लौकान्तिक का अनुमोदन पा, चले पालकी विजया से।
तुरत सहेतुक वन में जाकर, हुए सुशोभित दीक्षा से॥ ५॥
धर्ममित्र ने पंचाश्चारी, दीक्षा का आहार दिया।
सोलह वय छद्मस्थ बिताकर, तेला वाला नियम लिया॥
तिलक वृक्ष के नीचे स्वामी, बन बैठे केवलज्ञानी।
समवसरण की सभा लगी तो, सबने सुनी दिव्यवाणी॥ ६॥
श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किए।
कर्म हरण कर मुक्ति वरण कर, मोक्ष कुन्थुप्रभु प्राप्त किए॥
कामदेव को काय-कान्ति तो, कुछ भी नहीं सुहाई थी।

चक्रेश्वर को कनक-कामिनी, कभी लुभा ना पाई थी॥ ७॥
तीर्थंकर को कर्मन-कड़ियाँ, कस न सकी चट-चट टूटीं।
त्रय पदधारी कुन्थुनाथ की, कर्म-कालिमा झट छूटी॥
कुन्थु नाम बस कर्म हरे सब, बुध ग्रह की क्या बात रही?
कनक-कामनी तज, कंचन सी, आतम पाते भक्त सही॥ ८॥
जैसा आप कहोगे स्वामी, वैसा हम क्या कर न सकें?
किन्तु अकेले तड़प रहे हम, विरह वेदना सह न सकें॥
अतः रिझाने तुम को आए, हम पर नाथ रीझ जाओ।
'सुव्रत' तो हो चुके तुम्हारे, तुम 'सुव्रत' के हो जाओ॥ ९॥

(सोरठा)

बकरा जिनका चिह्न, कुन्थुनाथ प्रभु नाम है।
करुणाकर चैतन्य, प्रभु को सतत प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

कुन्थुनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, कुन्थुनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री अरनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अन्तरंग बहिरंग की, लक्ष्मी के भगवंत।
परमपूज्य अरनाथ को, नमन रहे जयवंत॥

(शिखरणी) (लय : महावीराष्टक)

हजारों फूलों से, अधिक जिनकी गंध महके।
करोड़ों सूर्यों से, अधिक जिनका तेज चमके॥
अनन्तों जन्मों में, इस तरह हो पुण्य अर्जन।
तभी मिल पाएंगे, अरह प्रभु के देव-दर्शन॥
किया होगा कोई, गत समय में पुण्य हमने।
इसी से पाई है, मनुज भव पर्याय हमने॥
बने हैं जैनी तो, अरह जिन को वन्दन करें।
झुका के माथा भी, विनय करके अर्चन करें॥
हमारी आत्मा में, प्रकट परमात्मा तुम करो।
नहीं तो श्रद्धा के, निलय मन को पावन करो॥
हमारी नैया को, जिनवर तुम्हीं पार कर दो।
इसी से भक्ति के, वर सुमन स्वीकार कर लो॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्धगीता)

लिए श्रद्धा सरस जल हम, विनय से अब चढ़ाएंगे।
यही विश्वास है हमको, निजातम शुद्ध पाएंगे॥
जरा-सा नीर तो छिड़को, तुरत हम जाग जाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

रसायन मंत्र मणियों में, न शान्ति है तो क्यों जाएँ।
तभी चंदन चढ़ाके हम, प्रभु सम शान्ति झलकाएँ॥
जरा समता जिनामृत दो, निराकुल रूप पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

बड़े दुर्लभ मगर आसाँ, सहज नाते हमारे हैं।
हृदय में तुम हमारे हो, चरण में हम तुम्हारे हैं॥
चढ़ाकर पुंज हम तुमको, तुम्हीं में डूब जाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

हुई सुर पुष्प वृष्टि जो, न उल्टे हों गिरे नीचे।
विकारी भाव हरने को, तुम्हारे रूप पर रीझे॥
सुकोमल पुष्प सा आतम, चढ़ा हम पुष्प पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चखा हर स्वाद दुनियाँ का, मगर ना तृप्त हो पाए।
तेरी इक बूँद के प्यासे, तभी जिन तीर्थ पर आए॥
बहा दो ज्ञान की धारा, निजी नैवेद्य पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

सदा तुमको निहारें हम, हमें क्यों तुम निहारो ना।
अँधेरे में फँसे हमको, उजाला क्यों दिखाओ ना॥
तुम्हारी आरती करके, तुम्हीं सम जगमगाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

पका दो इस तरह हमको, घड़ा कोई पके जैसे।
करम की मार सब सह लें, कि चमके शुद्ध सोने से॥
चढ़ाकर धूप हम तुमको, करम-काजल जलाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

नहीं कुछ भी दिया तुमने, मगर सब कुछ तुम्हारा है।
मिलन तुमसे हमारा ही, मिलन हमसे हमारा है॥
मिटाने दूरियाँ सारी, चरण में फल चढ़ाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जमाने में उलझकर हम, तुम्हारा नाम खो बैठे।
सुलझने की दिलाशा में, भुलाकर आत्म रो बैठे॥
भुला दो नाथ भूलें तो, चढ़ा हम अर्घ्य पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

फाल्गुन शुक्ला तीज को, तजकर स्वर्ग जयंत।
मित्रसेना के गर्भ में, वसे अरह भगवंत॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस अगहन शुक्ल में, जन्मे अरह अडोल।
पिता सुदर्शन के यहाँ, भक्त बजाएँ ढोल॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी अगहन शुक्ल को, देखे मेघ विनाश।
संत अरह प्रभु को नमन, जो धारे संन्यास॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कार्तिक शुक्ल को, हरे घातिया धूल।
अरह केवली को नमन, अर्पित श्रद्धा फूल॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत अमावस कृष्ण में, मोक्ष लिए प्रभु लूट।
नमन करें अरनाथ को, पूजें नाटक कूट॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

परम पूज्य अरनाथ जो, हैं सप्तम चक्रेश।
चौदहवे रतिनाथ हैं, अष्टदशम् तीर्थेश॥
त्रिजग-ईश त्रय कर्म हर, भव-सागर के पार।
जय-जय की जयमालिका, कहें त्रियोग सँभार॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय श्री अरनाथ जिनेश्वर, आप सर्वगुण सुन्दर हैं।
पर भावों में अतः फसे ना, बन गए पूर्ण दिगम्बर हैं॥
षट्-खण्डों के रहे विजेता, फिर भी नित्य निरम्बर हैं।
इसीलिए तो चरण शरण में, झुकते धरती अम्बर हैं॥ १॥

इनके दर्शन-भर करने से, उर में निर्मलता आती।
पूजन से सब पातक कटते, पुण्य-आवली शर्माती॥
चिंतन मनन ध्यान जप-तप से, निज स्वभाव सा झलक रहा।
तभी आपके गुणगाने को, हृदय हमारा ललक रहा॥ २॥

ज्ञानी ध्यानी सुर विद्याएँ, कह न सके कवि पण्डित जो।
उनके गुण हम क्या गाएंगे, आप स्वयं में मण्डित जो॥

फिर भी जहाँ सूर्य ना जाता, वहाँ दीप क्या जलें नहीं?
बच्चे बाहें फैलाकर क्या, सागर का जल कहें नहीं?॥ ३॥
पिछले भव में धनपति राजा, तीर्थंकरप्रकृति बाँधें।
गए स्वर्ग संन्यासमरण कर, मनुज बने जब सुर त्यागें॥
गर्भ जन्म का पर्व सुदर्शन, राजा रानी पाए थे।
स्वर्ग-सुखों को त्याग-त्यागकर, देव पर्व में आए थे॥ ४॥
चौदह रत्न नवो निधि भोगी, पर देखा जब मेघ विलय।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तब, लौकान्तिक बोले जय-जय॥
राज्य दिया अरविन्द पुत्र को, स्वयं वैजयंती से जा।
लिए सहेतुक वन में दीक्षा, चौथा ज्ञान तुरत उपजा॥ ५॥
चक्रपुरी नृप अपराजित के, हुई पारणा दीक्षा की।
आम्र तरू-तल बने केवली, जगह वही थी दीक्षा की॥
बारह भरी सभाएँ जिनको, तत्त्वज्ञान अरनाथ दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, महामोक्ष प्रभु प्राप्त किए॥ ६॥
किया धर्म-पुरुषार्थ तभी तो, तीन-तीन पद अपनाये।
किया काम-पुरुषार्थ तभी तो, पुत्र रत्न निज घर आए॥
किया अर्थ-पुरुषार्थ तभी तो, चक्र रत्न खुद प्रकटाए।
किया मोक्ष-पुरुषार्थ तभी तो, सिद्धचक्र अर प्रभु पाए॥ ७॥
कामदेव का जन्म हुआ पर, काम-देव ना जन्म सका।
चक्री के उस चक्ररत्न का, जिन पर चलकर चल न सका॥
तीर्थंकर ने कर्म-चक्र की, चुन-चुन कर चटनी बाँटी।
विधि चोटी पर चोट लगाकर, चढ़े मोक्ष की प्रभु घाटी॥ ८॥
जिनका नाम अकेला सुनकर, निधियाँ रत्न चक्र दौड़ें।

उनका नाम कहो बुध ग्रह में, सीमित करके क्यों जोड़ें ?
पाप शत्रु का मान मरोड़े, राज-रसोड़े जो छोड़े।
राज-रमा घट-दासी जैसी, चक्ररत्न घट-सा छोड़े॥ ९॥
इसी तीर्थ में सुभौम चक्री, नन्दिषेण बलभद्र हुए।
पुण्डरीक छठवे नारायण, प्रतिनारायण निशुम्भ हुए॥
ऐसे श्री अरनाथ देव से, एक प्रार्थना बस यह हो।
रत्नत्रय से मुक्तिवधू से, चट मँगनी पट विवाह हो॥ १०॥
किया नमोऽस्तु यदि जिनवर को, बिन मन से बिन समझे में।
उतना फल तो अन्य जगह पर, मिल न सकेगा जीवन में॥
फिर 'सुव्रत' ने त्रियोग पूर्वक, किए नमोऽस्तु चरण भजे।
दिवस दशहरा रात दिवाली, फिर क्या ना हो मजे-मजे॥ ११॥

(सोरठा)

चरण शरण में मीन, चिह्न सदा ही शोभता।
जो हैं कमलासीन, उन्हें जगत् नित खोजता॥
वो हैं अर जिनराज, जो शुद्धातम सुख भरें।
उन्हें नमोऽस्तु आज, हम पर भी करुणा करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरहनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरहनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री मल्लिनाथ पूजन

स्थापना

(दोहा)

होकर जो आत्मस्थ भी, रहें चराचर व्याप्त।
दृष्टा हर व्यापार के, फिर भी निःसंग आप्त॥
ऐसे मल्लिनाथ प्रभु, दूजे बाल यतीश।
पुराण पुरुष परमेश को, सविनय टेकें शीश॥

(लय : जीवन है पानी की बूँद...)

मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]
द्रव्यों की थाली (हाँ-हाँ)[२], हम आज सजाए रे॥
नाथ! आप सब देखो पर, कौन आपको देख सके।
नाथ! आप सब जानो पर, कौन आपको जान सके॥
अतः आपकी खुद महिमा, हम भक्तों से तो न हुई।
सो दर्शन पूजा वाली, अन्तस्-भाव वर्गणा हुई॥
काल अनन्त व्यर्थ खोया, पर-तत्परता लौ लागी।
किन्तु आपके दर्शन से वीतरागता सी जागी॥
पूजन में आओ! (हाँ-हाँ)[२], हम भक्त बुलाएँ रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इतने जन्म लिए हमने, पर सम्यक् न जन्म सके।
इतने मरण किए हमने, लेकिन सम्यक् मर न सके॥
जन्म-मरण प्रभु के जैसे, करके शुद्धातम पाएँ।
अतः भक्ति श्रद्धा जल ले, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

जीना अरु मरना, (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं...।

खस चंदन से अतिशीतल, कुछ भी मिल ना पाएंगे।
देह ताप को किन्तु वही, और अधिक धधकाएंगे॥
अतः आप सम त्याग इन्हें, समता निज रस को पाएँ।
अतः समर्पित चंदन कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
जलना भव तपना (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

सकल विश्व हम जान रहे, पर निज से अनजान रहे।
अक्षयपुरवासी होकर, नश्वर अपना मान रहे॥
हमें भेद-विज्ञान मिले, सिद्ध क्षेत्र प्रभु सा पाएँ।
अतः समर्पित अक्षत कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
तृष्णा भव मूर्च्छा (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कैसे आप विरागी हो, कैसे पर के त्यागी हो।
बनकर बालब्रह्मचारी, मुक्तिवधू के रागी हो॥
कालजयी, हे! कामजयी, तुम पर हम भी ललचाएँ।
अतः समर्पित पुष्प करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
पर की आसक्ति (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर-रस सरस अरस हों पर, आतम सदा रसीला हो।
जले गले ना सड़े कभी, रात्रि त्याग ना इसका हो॥
रस त्यागी निज के रसिया, कैसे तुमको हम पाएँ।
अतः भेंट नैवेद्य करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
काया भव व्याधि (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

नाथ! आपकी निज ज्योति, हम भक्तों से ना होती।
सूरज चंदा की ज्योति, दीप ज्योति से क्या? होती॥
केवल तुम्हें निरख कर हम, अपने नयन सफल पाएँ।
अतः आरती दीप जला, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
मोही भव गलियाँ (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अच्छा बुरा करो कुछ भी, कुछ तो लोग कहेंगे ही।
त्याग तपस्या अतः करो, लोग विरोध करेंगे ही॥
करो साधना चुपके से, शोर आप खुद हो जाएँ।
अतः सुगंधी खेकर हम, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
कर्मों के शत्रु (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

सुख-दुख की परवाह न की,निज-कर्त्तव्य निभाए तुम।
लाख आँधियों संकट में, पथ से चिग ना पाए तुम॥
उपादान को निमित्त से, तुम सम हम भी प्रकटाएँ।

अतः भेट फल निजफल को, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
सुख-दुख भव पीड़ा (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

भक्ति नमोऽस्तु पूजन में, झुकना धर्म सिखाता है।
झुका-झुकाकर भक्तों को, स्वयं उच्च कहलाता है॥
जो झुकते वे उठते हैं, बिना झुके क्या उठ पाएँ।
अतः मोक्ष तक उठने को, भक्त अर्घ्य ले झुक जाएँ॥
दूरी-मजबूरी (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

चैत्र शुक्ल एकम् पुजी, जब तज स्वर्ग विमान।
प्रभावती के गर्भ में, वसे मल्लि भगवान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, जन्मे मल्लि जिनन्द।
कुम्भराज गृह राज्य में, शोर-बुलौआ-नन्द॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चंचल बिजली की चमक, जन्म तिथी में देख।
मल्लिप्रभु दीक्षित हुए, जिन्हें नमन सिर टेक॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण की दूज में, पाए प्रभु कैवल्य।
मल्लिप्रभु तीर्थेश को, नमन हरे अब शल्य॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पाँचें फागुन शुक्ल में, मोक्ष मल्लिप्रभु पाए।
शाश्वत संबलकूट को, हम तो शीश झुकाए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

जग में पूज्य विशेष हैं, मल्लिनाथ योगीश।
जयमाला के नाम से, मिले हमें आशीष॥
कर्म-शरण संसार दे, धर्म-शरण दे तार।
पाने शरण विशेष अब, आए प्रभु के द्वार॥

(ज्ञानोदय)

ज्यों विशाल-तन गज-झुंडों पर, एक शेर बस कर ले जय।
जैसे घोर अँधेरे को भी, लघु दीपक ही कर दे क्षय॥
नाग-पाश ज्यों मोर-कूक से, ढीले पड़कर हुए विलय।
मल्लिप्रभु त्यों मोह-मल्ल की, शल्य हरें सो बोलो जय॥ १॥
एक वैश्रवण राजा देखे, जब बरगद का पेड़ गिरा।
जब इतना मजबूत गिरा तो, अपना तो हो हाल बुरा॥
इसी दृश्य से हो वैरागी, राज रमा जग छोड़ गए।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति धर, कर सल्लेखन स्वर्ग गए॥ २॥
स्वर्ग त्याग मिथिला नगरी के, राजा कुम्भ बड़े प्यारे।

जिनकी प्रजावती रानी को, देकर स्वप्न जन्म धारे॥
गर्भ जन्म कल्याणक विधि से, मल्लिनाथ यह नाम रखा।
सौ वर्षों का कुमारकाल जब, बीता तो सब नगर सजा॥ ३॥
तभी याद आई स्वर्गों की, कहाँ त्याग का फल पावन।
और कहाँ यह लज्जादायक, बिडम्बना विवाह बन्धन॥
ऐसे विवाह की निन्दा कर, दीक्षा का उद्योग किया।
तब लौकान्तिक देवों ने आ, अनुमोदन सहयोग किया॥ ४॥
अहो! अहो! कौमार्य दशा में, नर-इन्द्रों को जो दुष्कर।
वही विषय तज चले श्वेत-वन, बैठ जयन्त पालकी पर॥
'प्रशान्तरूपायदिगम्बराय' को, धरा 'नमः सिद्धेभ्यः' कह।
हुई पारणा मिथिलानगरी, नंदिषेण राजा के गृह॥ ५॥
बस छह दिन छद्मस्थ बिताकर, अशोक तरु-तल थित होकर।
बेला कर, हर घाति-कर्म को, बने केवली तीर्थंकर॥
अट्ठाईस गणधर से शोभित, समवसरण में दिशा दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिए॥ ६॥
जनम-मरण की जहाँ तरंगें, भँवरे इच्छा की रखता।
भवसागर दुख जल से पूरित, मिथ्या चंदा से बढ़ता॥
मल्लिप्रभु ने देह रूप इस, मगरमच्छ को तज करके।
ध्यान नाव से भवसागर को, तैरा मोक्ष प्राप्त करके॥ ७॥
तब ही पद्म चक्रवर्ती अरु, नन्दिमित्र बलदेव हुए।
तब बलीन्द्र प्रतिनारायण भी, नारायण तब दत्त हुए॥
जिनका नाम मोह ग्रह हर ले, फिर क्या बात केतु ग्रह की।
अतः नमोऽस्तु मल्लिनाथ को, जो दें राह मोक्षगृह की॥ ८॥

धर्मोदय के तप-मधुवन के, आप रहे तोता-मिट्ठू।
काव्य कला के नन्दनवन के, आप रहे कोकिल किट्टू॥
चरित-मल्लिका के तुम भँवरे, पुण्य कमल सरवर हंसा।
तुम्हें पूजकर निज-भूषण हो, हम भक्तों की यह मंसा॥ ९॥
स्वर्ग मोक्ष सुख के इच्छुक जन, सब वास्तव में दुखी रहें।
मल्लिप्रभु बिन ज्ञानी ध्यानी, कौन तपस्वी सुखी रहें॥
किन्तु भक्त जो मल्लि प्रभु के, वचन सुनें चारित्र धरें।
स्वर्ग मोक्ष यूँ ही पाते वे, जीवन आत्म पवित्र करें॥ १०॥
अतः आपसे एक प्रार्थना, हम भक्तों की है स्वामी।
सोकर उठें आँख जब खोलें, तो दर्शन देना स्वामी॥
सब मंगल में पहला मंगल, जिन-दर्शन स्वीकारा है।
सर्व सिद्धि 'सुव्रत' की होगी, यदि सान्निध्य तुम्हारा है॥ ११॥

(सोरठा)

कलश चरण में चिह्न, मल्लिनाथ प्रभु नाम है।
आतम मिले अभिन्न, इससे सदा प्रणाम है॥
हे निर्मोही! आप्त, करो एक हम पर नजर।
दुख गम करो समाप्त, कालसर्प-भवयोग हर॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मल्लिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मल्लिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुए, मन की अखियाँ खोल॥

(शंभु)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जगलोचन !, हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आई टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिए, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिए।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्!, अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम हमारा जब होता तब, हम रोते पर सब हँसते।
गर सुधरा फिर जरा-मरण तो, सब रोते पर हम हँसते॥
जनम जरा वा मरण नशाने, प्रासुक जल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं ...।

मौसम या सूरज का तपना, कभी-कभी तो रुच जाए।
पर मन का संताप जीव को, सदा-सदा ही झुलसाए॥
भव-भव का संताप नशाने, यह चंदन स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ...।

कहीं-कहीं सम्मान मिले पर, कहीं-कहीं अपमान मिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, किस्मत से जिनधाम मिले॥
पद की सम्पद आपद हरने, ये तंदुल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ...।

नासा का आकार फूल सा, सौरभ पाने ललचाए।
जिससे आतम पापी बनती, काम व्यथा यों तड़फाये॥
काम, विवादों की जड़ हरने, पुष्प गुच्छ स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मरें भूख से कम प्राणी पर, खा-खा के मरते ज्यादा।
फिर भी खाने को सब दौड़ें, मरे भूख का ना दादा॥
क्षुधारोग आतङ्क हरण को, नैवेद्यक स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ...।

सूर्य हजारों किरणों वाला, महामोह तम हर न सके।
नाथ! आपकी एक किरण से, नशे वही कुछ कर न सके॥
मोह हरण को मिले उजाला, भक्ति दीप स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ...।

सोने की संगत से कपड़े, मूल्यवान यशवान हुए।
तो फिर भक्त आपके बनकर, क्या? अपने ना काम हुए॥
अष्ट कर्म कालिख हरने को, धूप गंध स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ...।

अरे! फलों से लदे पेड़ तो, धरती पर नत-मस्तक हों।
वैसे नाथ! आपको नमकर, भक्त आपके उन्नत हों॥
उन्नत होकर मोक्ष प्राप्ति को, प्रासुक फल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ...।

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

प्राणत नामक स्वर्ग त्याग जब, श्रावण कृष्णा दूज रही।
सोमा जी के गर्भ पधारे, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व गर्भकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब वैशाख कृष्ण की दशमी, नगर राजगृह जन्म लिया।
श्री सुमित्र राजा का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व जन्मकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

तज वैशाख कृष्ण दशमी को, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तपकल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥

अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
तपकल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तिथि वैशाख कृष्ण नवमी को, घाति कर्म सब नशा दिए।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किए॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस फाल्गुन कृष्ण रात में, प्रतिमायोगी कर्म नशा।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, हम पाएँ सब यही दशा॥
अष्ट कर्म का बन्धन सहना, नाथ हमारा मिट जाए।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

गुण गण के भण्डार हैं, मुनिसुव्रत भगवान्।
जयमाला के नाम हम, करते कुछ गुणगान॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

भरतक्षेत्र के मगधदेश में, रहा राजगृह धाम।
उसमें सुमित्र नामक राजा, करें राज्य के काम॥
उनकी रानी बड़ी सुशीला, सोमा जिसका नाम।
उनको सोलह सपने देकर, आए श्री भगवान्॥ १॥

बीस धनुष की ऊँची काया, मोर कण्ठ सम नील।
सभी लक्षणों से शोभित थे, सुव्रतलाल सुशील॥
कुशल राज्य के संचालन में, एक मिला संयोग।
हाथी का वैराग्य देखकर, बनें विरागी योग॥ २॥
आत्मज्ञान पा तजे परिग्रह, बने निरम्बर नाथ।
एक हजार राज-राजा ने, दीक्षा ली थी साथ॥
चार ज्ञान के धारी भगवन्, पाए केवलज्ञान।
समवसरण में हुए सुशोभित,दिए मुक्ति का ज्ञान॥ ३॥
श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, हजार मुनि के साथ।
प्रतिमायोग धार कर पाए, महा मोक्ष विख्यात॥
नाथ! आपकी नीली काया, करे मोह तम नाश।
वचन सूर्य की किरणें जग में, करतीं सदा प्रकाश॥ ४॥
आप रहे हरिवंश गगन के, निर्मल चन्दा रूप।
भव्य कुमुद को विकसित करते, दे दो हमें स्वरूप॥
नाथ! आप के तीर्थकाल में, चक्री था हरिषेण।
राम लखन रावण जन्मे थे, रामायण रूपेण॥ ५॥
कथा आपकी व्यथा नशाए, नाम करे सब काम।
फिर भी लोगों ने शनि ग्रह में, बाँध रखा प्रभु-नाम॥
मोह परिग्रह संकट बाधा, उसके होते नाश।
रोम-रोम में जिसके करते, 'सुव्रत' नाथ निवास ॥ ६॥

(दोहा)

आप गुणों के सिंधु हो, भक्ति हमारी नाँव।
हम क्या पावें पार तुम, पहुँचाओ शिव गाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

श्री नमिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

मंगलमय नमिनाथ हैं, करें सर्व उपकार।
आत्मज्ञान रस लीन हैं, भव-सागर के पार॥
जिनके चरण सरोज में, विनम्र चारों धाम।
तारण-तरण जहाज को, बारम्बार प्रणाम॥
(शंभु)

हे परम पूज्य नमिनाथ प्रभो! हे परमपूज्य जगनाथ प्रभो!
प्रभु लोक शिखर के तुम वासी, फिर भी घट-घट में वास करो॥
दुनियाँ के बन्धन टूट पड़े, जब नाम ध्यान में आता है।
दर्शन पूजन जप तप करके, हर आत्म बन्ध खुल जाता है॥
जब चरण-शरण तेरी हो तो, भव भोग शरीर रुचें कैसे।
हर पुण्य लगे सार्थक लेकिन, हम रहें आप बिन अब कैसे॥
इसलिए रचाई जिन-पूजन, बस अपनी पूर्ण मिटे दूरी।
नत माथ नमोऽस्तु करते हम, हो मनोकामना झट पूरी॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सब पूज रहे प्रभु के चरणा, जिनसे मिलता निज रूप घना।

वह आतम का शृंगार करें, वह शीघ्र हमें भव पार करें॥
अब जन्म मृत्यु का दुख हरने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, जल स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

विपरीत समय में डर न उन्हें, जिन पर करुणा प्रभु बरसाते।
कर चारु चन्द्र सम चिन्तन वो, चैतन्य चिदातम निज ध्याते॥
कारुण्य धार वह पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, शीत् स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

आशीष आपका सब चाहें, जो हर लेता संकट आहें।
चित्-पिण्ड अखण्ड प्रदान करें, दें मोक्षमहल शाश्वत राहें॥
आशीष हाथ तेरा पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुंज स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अनकूल रहें प्रतिकूल रहें, यों रहें खुशी ज्यों फूल रहें।
सम्मान मिले अपमान मिले, बस प्रभु चरणों की धूल मिले॥
वह चरण धूल प्रभु की पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुष्प स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

इन नयन कटोरों में केवल, पकवान वसे भगवान् नहीं।
भगवान् बिना निजज्ञान नहीं, निजज्ञान बिना कल्याण नहीं॥
भगवान् वसो इन नयनों में, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, चरु स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

इस पाप अँधेरे के कारण, निज आत्मज्योति आच्छादित है।
जो करे आरती दीप जला, वह पाता ज्ञान प्रकाशित है॥
वह आत्म ज्योति प्रकटाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, दीप स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

निज-निधियों पर शिव-गलियों पर, अत्यन्त ठोस है कर्म शिला।
पर धूप-कुदाल लिया जिसने, निज-वैभव उसको शीघ्र मिला॥
वह कर्म शिला चटकाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, धूप स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भगवान् यही वरदान मिले, प्रभु शीघ्र हमें तुम अपना लो।
जो मोक्षसिंधु तक फैली है, उस जिन-गंगा में नहला लो॥
जिन से निज के प्रक्षालन को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, फल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम अर्घ्य चढ़ाएँ गुण गाएँ, हम करें नमोऽस्तु जिन-सेवा।
क्या? इससे नाथ तुम्हें मिलता, पर हमें प्राप्त हो सुख मेवा॥
निज-मुक्ति भक्ति से पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, सब स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

क्वाँर कृष्ण की दूज को, तज अपराजित स्वर्ग।
आए प्रभु नमिनाथ जी, वप्पिला माँ के गर्भ॥ १॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे, नाँचे साथ॥ २॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संत जन्म तिथि में बने, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रन्थी नमिनाथ को, बारम्बार नमोऽस्तु॥ ३॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥ ४॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥ ५॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, शुद्धातम सरताज।
ऐसे प्रभु नमिनाथ को, करें नमोऽस्तु आज॥

(काव्य रोला)

करें नमोऽस्तु आज, काज केवल गुणगाना।
गुणगाने का राज, राज आतम का पाना॥
आतम पाके धाम, मोक्ष शाश्वत अपनाना।
शाश्वत नमि भगवान्, अतः सिर तुम्हें झुकाना॥

(ज्ञानोदय)

जय नमिनाथ परम अवतारी, आप अंत संसारी हो।
शुद्ध मोक्ष निज के रसिया पर, हितकारी संसारी को॥
अद्वितीय यह कला आपकी, खूब रुचे संसारी को।
चरण-शरण में रहे कहे गुण, रह न सके संसारी वो॥ १॥

पिछले भव सिद्धार्थ नाम के, राजा ने जिनदीक्षा ली।
तीर्थंकरप्रकृति बाँधी फिर, मृत्युमहोत्सव शिक्षा ली॥
अपराजित के स्वर्ग भोगकर, धरती पर अवतरित हुए।
तब मिथिला के राजा रानी, विजय वप्पिला जन्म दिए॥ २॥

गर्भ जन्म के पर्व देव कर, नामकरण नमिनाथ किए।
ढाई हजार वर्ष का भोगा, कुमारकाल फिर राज्य किए॥
पाँच हजार वर्ष का भोगा, राज्यकाल फिर कर चिन्तन।
इस प्राणी ने स्वयं फँसाया, काल कोठरी में चेतन॥ ३॥

ज्यों पिंजड़े में पक्षी दुखिया, बँधा हुआ हाथी रोता।
त्यों विषयों में मस्त जीव यह, निज अध्यात्म तत्त्व खोता॥
विष्ठा के कीड़े के जैसे, पाप-राग नित करता है।
हाय! हाय! फिर आर्त रौद्र कर, बिन रत्नत्रय मरता है॥ ४॥

तब लौकान्तिक देव सराहे, नमिनाथ के चिंतन को।
जग तज बैठ मनोहर शिविका, स्वामी चले चैत्र-वन को॥
बने दिगम्बर धरती अम्बर, गूँजे जय-जयकारों से।
दंतराज के हुई पारणा, पंचाश्चर्य नगाड़ों से॥ ५॥

जब छद्मस्थ वर्ष नव बीते, तभी बकुल तरुतल में जा।
बेला का संकल्प निभाकर, केवलज्ञान लिया उपजा॥

समवसरण में दिव्य-देशना, 'पुण्यफला' ने दे डाली।
जिससे सबने राग-रमा की, भव पर्याय भुला डाली॥ ६॥
मरण-मूलधन लेकर प्राणी, कर्जदार हो मृत्यु का।
जन्म-जन्म में कष्ट भोगता, कर्ज बढ़ाए दुर्गति का॥
किन्तु जीव रत्नत्रय धन का, जब तक अर्जन करे नहीं।
तब तक मृत्यु साहुकार का, ब्याज मूलधन चुके नहीं॥ ७॥
अतः धारकर रत्नत्रय को, स्वस्थ बनो आतम-भोगी।
तत्त्व देशना एसी देकर, नाथ! बने प्रतिमायोगी॥
श्री सम्मेदशिखर से नमिजिन, चतुर्दशी को मोक्ष गए।
मोक्ष पर्व से पुण्य कमाकर, देव स्वर्ग को लौट गए॥ ८॥
इसी तीर्थ में ग्यारहवें जयसेन चक्रवर्ती जन्मे।
चौदह रत्न नवो निधियाँ थीं, दसों भोग थे जीवन में॥
इक दिन उल्कापात देखकर, राज-पाठ वैभव छोड़े।
तप करके अहमिन्द्र बने सो, तपोधनों को सिर मोड़ें॥ ९॥
ऐसे प्रभु नमिनाथ देव ने, हर कर्मों से युद्ध किया।
अहित जीतकर मुक्ति प्रीतकर, अपना आतम शुद्ध किया॥
जिनके दिल में नमिनाथ हैं, शुद्ध बुद्ध खुद बनते वे।
उन्हें रहे क्या बुध ग्रह पीड़ा, मोक्ष महल में वसते वे॥ १०॥
लेकिन दूरी मिटी न अपनी, लक्ष्य दूर है राह बड़ी।
छोटे से हम भक्तों के दिल, फँसे न जग में फिकर खड़ी॥
वैरी दुनियाँ नित मारे पर, उसका कुछ भी असर नहीं।
'सुव्रत' पर बस यही कृपा हो, जिसकी जग को खबर नहीं॥११॥

(सोरठा)

नीलकमल है चिह्न, तीर्थंकर नमिनाथ हो।
हम पर रहो प्रसन्न, निजानुभव को साथ दो॥
हे स्वामी! जिनदेव, स्वार्थ रहित ये भक्तियाँ।
करती हैं स्वयमेव, भक्त जगत् की मुक्तियाँ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

निज निर्ग्रन्थ निवास में, जो निरखें निजधाम।
ऐसे नेमिजिनेश को, पूजें करें प्रणाम॥

(लय : माता तू दया करके...)

श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।
जब कुछ नहिं सूझा तो, हाथों को हि जोड़ चले॥
हे! नेमिनाथ जिनवर, चैतन्य विरामी हो।
रह के कण-कण में भी, प्रभु अंतर्यामी हो॥
तुम जीव दया करने, त्यागे अपनी खुशियाँ।
हम भले उजड़ जाएँ, पर सुखी रहे दुनियाँ॥

फिर राज-भोग छोड़े, राजुल भी ना भायी।
तो चेतन की खुशबू, झट मुक्ति वधू लायी॥
हे! दयामूर्ति हम पर, प्रभु एक दया कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, मन-चिदानन्द भर दो॥
श्रद्धा की केशरिया...।

(दोहा)

भक्ति सुमन ये भेंटकर, नाँच उठे मन मोर।
हृदय वसो तो हम चलें, मोक्षमहल की ओर॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अपनों ने हि जन्म दिया, अपनों ने हि मार दिया।
फिर भी अपनों से क्यों, हमने तो प्यार किया॥
अपनों का अपनापन, जल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

अपनों ने हि ईर्ष्या से, अपनों को जला दिए।
फिर भी ना राख हुए, कितने भव गवाँ दिए॥
अपनों की यह ईर्ष्या, चंदन से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अपनों ने हि घाव दिए, तो आँसू भी झलके।
हम उन्हें मित्र मानें, जो साथी नहिं पल के॥

अपनों की ये पीड़ा, अक्षत से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपनों ने जो जाल रचे, उनमें अपने ही फँसे।
काँटों से बच निकले, पर फूलों में उलझे॥
अपनों की उलझ-सुलझ, पुष्पों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अपनों की तलाश में हम, नित भूख-प्यास सहते।
हम जिनको अमृत दें, वे हमें जहर देते॥
अपनों के विष-अमृत, नैवेद्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अपनों ने ही भटका के, दर-दर की ठोकर दीं।
हम रहें अँधेरे में, अपना सब खोकर भी॥
अपनों की यह भटकन, दीपों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अपनों ने हि धोखे से, अपना सब कुछ छीना।
जीने की आश न थी, फिर भी तो पड़ा जीना॥

अपनों के ये धोखे, प्रभु धूप से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अपनों की मृग-तृष्णा, सपनों को दिखाकर के।
हमको लूटे तो हम, भागे मुँह छिपाकर के॥
अपनों के ये सपने, फल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अपनों ने हि साथ दिया, जब सुख से दिन गुजरे।
सब छोड़ गए हम को, जब भाग्य कमल उजड़े॥
फिर भी अपनों का यह, हम राग न छोड़ सके।
प्रभु सामने हैं पर हम नाता न जोड़ सके॥
प्रभु के रंग में हम भी, अब रंगने को आए।
जो है शाश्वत अपना, वह संग पाने आए॥
अपनों की यह भ्रमणा, प्रभु अर्घ्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

जब हुआ गर्भ कल्याणक था, तब रत्न-दृश्य मनमोहक था।[२]
फिर शौर्यपुरी में आन पधारे नेमि-जिससे दुनियाँ हर्षानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

(दोहा)

कार्तिक षष्ठी शुक्ल में, शिवदेवी के गर्भ।
नेमिप्रभु जी आ वसे, तजकर जयन्त स्वर्ग॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु जन्म लिए तो सुर पहुँचे, नृप समुद्रविजय के घर नाँचे।[२]
अभिषेक मेरु पै देव करें वरदानी, प्रभु पाण्डुकशिला विरामी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जनम का शोर।
समुद्रविजय के आँगने,नेमि किए किलकोर॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु देख प्राणियों का क्रन्दन, झट तजे राज राजुल बन्धन।[२]
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना-पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु ध्यान लगाकर जब बैठे, तब घातिकर्म बन्धन टूटे।[२]
फिर समवसरण में दिए देशना ज्ञानी, सबने पूजी जिनवाणी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

शुक्ला एकम् क्वांर को, घाति कर्म जयोऽस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सब कर्म हरे गिरिनारी से, फिर मिले मुक्ति की नारी से।[२]
देवों ने उत्सव करने की फिर ठानी, अब हम तो करें नमामि॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....
आठें (सातें) शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु, गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ल-अष्टम्यां (सप्तम्यां) मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

धार्मिक रथ की जो धुरी, धर्मचक्र की हाल।
जिनवर नेमि दयेश की, अब कहते जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

जिनके तपश्चरण की चर्चा, तीन लोक में गूँज रही।
जीवदया वैराग्य कथा को, सारी दुनियाँ पूज रही॥
अन्य-सभी तीर्थंकर से भी, जिनके अतिशय भिन्न रहे।
ऐसे नेमिनाथ जिनवर के, गुण गा हृदय प्रसन्न रहे॥ १॥
अतः करें गुणगान भक्त हम, आश्रय ले जयमाला का।
जो पिछले भव अपराजित थे, ऐसे प्रभु जग-पाला का॥
अपराजित कर मृत्यु महोत्सव, सोलहवे सुर जन्म लिए।
स्वर्ग त्यागकर सुप्रतिष्ठ बनकर, उल्कापातन देख लिए॥ २॥
धर वैराग्य लिए दीक्षा फिर, तीर्थंकरप्रकृति पाए।
समाधिमरण कर स्वर्ग गए फिर, स्वर्ग त्याग भू पर आए॥

शिवदेवी को सोलह सपने, दिए गर्भ कल्याणक में।
ऐरावत से चले मेरु पर, प्रभो! जन्म कल्याणक में॥ ३॥
धर्मचक्र की धुरा धरी सो, नेमिनाथ शुभ नाम पड़ा।
जिन्हें देख आनन्द बरसता, विश्व जोड़कर हाथ खड़ा॥
बचपन बीता अणुव्रत जैसा, फिर जिन पर यौवन छाया।
तभी मनोहर जलक्रीड़ा का, एक सुखद अवसर आया॥ ४॥
वहाँ सत्यभामा के ऊपर, नेमिनाथ जल उछलाए।
वस्त्र नहाने का तुम धो दो, यूँ कहकर कुछ इठलाए॥
क्या तुम काम श्याम के जैसे, कर सकते भामा बोली।
अगर नहीं तो हुक्म करो क्यों?, ये बोली बन गई गोली॥ ५॥
नेमिनाथ ने शंख फूँककर, नवयौवन की ध्वनि कर दी।
राजीमति से विवाह बन्धन, करने को मँगनी कर ली॥
तभी श्याम को हुई आशंका, कहीं कभी ना हो एसा।
नेमिनाथ जी राज्य हमारा, ले ना लें तो हो कैसा॥ ६॥
अतः उन्हें वैराग्य कराने, को षड्यन्त्र रचा डाले।
मृग पशुओं को शिकारियों को, बाड़ी में भरवा डाले॥
जूनागढ़ बारात गयी तो, नेमि उन्हीं का दुख देखे।
धर वैराग्य तजे राजुल को, विवाह बन्धन भी फेंके॥ ७॥
चले देवकुरु शिविका से ली, गिरिनारी में मुनिदीक्षा।
पीछे - पीछे राजुल पहुँची, बनी आर्यिका ली दीक्षा॥
द्वारावति के जो राजा थे, श्री वरदत्त महा न्यारे।
वहीं पारणा दीक्षा की हुई, पंचाश्चर्य हुए प्यारे॥ ८॥
छप्पन दिन छद्मस्थ बिता के, गिरिनारी पर्वत पर जा।
बने बाँस के नीचे ध्यानी, केवलज्ञान तभी उपजा॥

ज्ञान पर्व देवों ने करके, समवसरण भी सजा दिया।
ग्यारह गणधर की संसद को, नेमिनाथ ने जगा दिया॥ ९॥
भव्यजनों के नेमिनाथ ने, कहे भवांतर जैसे ही।
सभी पाण्डवों ने दीक्षा ले, धारा संयम वैसे ही॥
कुन्ती सुभद्रा और द्रौपदी, बनी आर्यिका सुर-वासी।
विहार करते शत्रुंजय पर, पाण्डव पहुँचे संन्यासी॥ १०॥
दुर्योधन के भांजे ने फिर, वहाँ घोर उपसर्ग किए।
दो पाण्डव तो स्वर्ग सिधारे, तीन मोक्ष को गमन किए॥
इधर नेमिप्रभु गिरिनारी पर, योग निरोध किए स्वामी।
कर्मनष्ट कर मोक्ष पधारे, हम चरणों में प्रणमामि॥ ११॥
ब्रह्मदत्त भी जरासंध भी, पद्म कृष्ण भी तब जन्मे।
तब ही हुआ महाभारत था, नेमिनाथ के शासन में॥
द्वन्द्व-फन्द हर्त्ता को बाँधो, गुरु दिन राहु-ग्रह में क्यों।
ऋद्धि-सिद्धि हों काम बनें सब, प्रभु की जय बस बोलो तो॥१२॥
सजा-धजा था विवाह मण्डप, नेंग और दस्तूर हुए।
सजे बराती शोभे दुल्हन, नेमि सभी से दूर हुए॥
राजुल जैसे हमें न छोड़ो, थामो नाजुक हाथों को।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, हर लो गम की रातों को॥ १३॥

(सोरठा)

चरण शरण में शंख, नेमिनाथ का चिह्न है।
मिले भक्ति के पंख, उड़कर भक्त प्रसन्न हैं॥
परम शुद्ध अध्यात्म, लोक शिखर शिवधाम है।
नेमिनाथ दो दान, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नेमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, नेमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

निर्बलता अब छोड़ कर, निर्मल भजो जिनेश।
प्रभु-पूजा वरदायिनी, वर पा बनो महेश॥

(शंभु)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! उपसर्गजयी।
हे चिंतामणि! अंतर्यामी!, हे पार्श्वनाथ! परिषह विजयी॥
जिनने अपने मानस तल पर, प्रभु! नाम किया अंकित तेरा।
वे अतिशय ऊर्जावान हुए, पा शक्ति, मुक्ति का पथ डेरा॥
तूफान घटा हो या आँधी, तो पार्श्वनाथ के भक्त कभी।
ना चंचल हों ना धैर्य तजें, हैरान नहीं हों दास सभी॥
वे कर्मजयी हों दयामई, जो पार्श्वनाथ को पाते हैं।
हम करें अर्चना कल्याणी, हो विश्वशान्ति यह ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम-मरण का क्या कहना? पर, असमय मरण कभी सोचे।
माँ के आँसू इतने बरसे, सागर पड़े बड़े छोटे॥

जल से जनम मरण हरने को, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

आपस की टकरार भयंकर, जलें महावन भी इससे।
भवाताप का क्या कहना हो?, भव-भव में जलते इससे॥
चंदन से भव-ताप मिटाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

धरा रहेगी, धरा रहेगा, हमको तो निश्चित जाना।
मुट्ठी बाँधे सब आते पर, हाथ पसारे ही जाना॥
पुंज चढ़ा अक्षयपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन बस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

काँटों से हम बचते रहते, तभी फूल ना खिल पाते।
सम्यक् ना पुरुषार्थ करें तो, आत्म शान्ति भी ना पाते॥
पुष्प चढ़ाकर काम नशाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोजन कर ज्यों मौज उड़ाते, अगर बुराई त्यों खाएँ।
देह-व्याधियाँ लूट-मार सब, तत्क्षण जग से नश जाएँ॥
ये नैवेद्य क्षुधा रुज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप जला आरति करने से, शाम-रात क्या हट सकती?
पर श्रद्धा दीपक से अपनी, शाम-रात भी टल सकती॥

अपना श्रद्धा दीप जलाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप जले खुद, पर जग महके, उसे पराये राख करें।
ऐसे ही आतम का सौरभ, कर्म कीच रज नाश करे॥
खेकर धूप कर्म-रज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

आज सँभालो कल सँभलेगा, हर मुश्किल का हल होगा।
पल मत खोना छल मत करना, मंजिल-पथ समतल होगा॥
विधिफल त्याग मोक्ष फल पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, तज प्राणत सुर धाम।
वामा माँ के गर्भ में, वसे पार्श्व भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।

विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायअर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोऽस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोऽस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

दुनियाँ में यशवान हैं, पार्श्वनाथ जिनराज।
गुण गाते हम, तुम करो, हमरे दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

संकट उपसर्गों से डरकर, जिनको जीवन दुख लगता।
पाप त्यागने से जो डरते, मोक्षमार्ग से भय लगता॥
अपनी हिम्मत हारे चुके जो, टूट चुके जो बिखर चुके।
वो पाकर पारस का सम्बल, ऋद्धि-सिद्धि पर संवर चुके॥१॥
दुख संकट उपसर्ग उन्हें अब, कभी सता ना सकेत है।
उनका जीवन कुन्दन सम हो, जो पारस को भजते हैं॥
जी हाँ! ये वो ही पारस जो, जन्म बनारस लेते हैं।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा माँ के बेटे हैं॥२॥

मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, तेईसवें तीर्थेश रहे।
आओ! उनकी कथा वाँच लें, जो हम सब के ईश रहे॥
भरतक्षेत्र के पोदनपुर में, जब राजा अरविन्द्र हुए।
विश्वभूति वा अनुन्धरी के, कमठ अनुज मरुभूति हुए॥३॥
दोनों राजा के मंत्री थे, दुर्जन कर्मठ रहा विष सा।
मरुभूति सुन्दर पत्नी का, स्वामी सज्जन अमृत सा॥
मरुभूति को मार कमठ ने, पत्नी पर अधिकार किया।
मरुभूति ने वज्रघोष के, हाथी वाला जन्म लिया॥४॥
फिर क्रमशः सुर रश्मिवेग सुर, वज्रनाभि नर-चक्रेश्वर।
ग्रैवेयिक अहमिन्द्र देव हो, फिर आनन्द मण्डलेश्वर॥
राजा ने मुनिराजा बनकर, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी।
सल्लेखन कर प्राणत सुर से, इन्द्र त्याग आए काशी॥५॥
वामा माँ के आँगन में फिर, हुआ गर्भ कल्याणक था।
सोलह सपनों का मंगल फल, अश्वसेन ने वाँचा था॥
रत्नों की वर्षा सुखकारी, हुआ जन्म कल्याणक फिर।
शचि सौधर्म इन्द्र ने प्रभु को, लिया गोद में खुश होकर॥६॥
कर अभिषेक इन्द्र ने प्रभु का, नाम रखा फिर पार्श्वकुमार।
हरे रंग के बालक पारस, यौवन-क्रीड़ा किए बिहार॥
तो देखा कि तापस नाना, पंच-अग्नि तप को मचले।
सो लकड़ी कटने के पहले, पारस समझाने निकले॥ ७॥
बोले आप 'इसे मत काटो', पर नाना जी काटे थे।
सो दो सर्प-सर्पिणी कटकर, दो हिस्सों में बांटे थे॥
जो पारस के उपदेशों को, सुनकर स्वर्ग सिधारे थे।
पद्मावति धरणेन्द्र हुए जो, शान्ति-भाव को धारे थे॥८॥

इस विध पारस तीस वर्ष की, कुमारदशा गुजारे थे।
किन्तु एक दिन भेंट देखकर, भवसुख से वैरागे थे॥
तप कल्याणक में दीक्षा ली, साथ तीन सौ थे राजे।
गुल्मखेट में धन्यराज के, ढोल पारणा के बाजे॥९॥
यूँ छद्मस्थ चार माहों के, बाद कमठ के प्राणी ने।
दस भव के रिपु शम्बर बनकर, कष्ट दिए अभिमानी ने॥
सात दिनों तक महाभयंकर, उपसर्गों को पार्श्व छुए।
पद्मावति ने छत्र लगाया, फणारूप धरणेन्द्र हुए॥१०॥
दूर हुआ उपसर्ग कमठ का, प्रभु को केवलज्ञान हुआ।
समवसरण में दिव्यध्वनि दे, पारस को निर्वाण हुआ॥
स्वर्णभद्र की कूट शिखरजी, श्रावण शुक्ल सप्तमी को।
किये मोक्ष कल्याणक उत्सव, सबने मोक्ष सप्तमी को॥११॥
तब से अब तक पारस प्रभु के, जय-जयकारे गूँज रहे।
प्रभु जैसे उपसर्ग विजेता, बनने हम सब पूज रहे॥
क्षमा धरें भव पार करें हम, पूजा का फल यह देना।
'विद्या' के 'सुव्रत' को पारस, पारसमणि सम कर देना॥१२॥

(दोहा)

पारसमणि सोना करे, पारस पारसनाथ।
सो पारस बनने करें, हम नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

श्री महावीर पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

जय महावीर-जय महावीर, शासननायक-जय महावीर।
जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले॥
''जियो और जीने दो'' सबको, समझ बूझकर अपनाएँ।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गाएँ॥
अष्ट द्रव्य की थाल सजायी, भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आए मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी॥
अर्जि हमारी मर्जि तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो॥
जय महावीर-जय महावीर!, शासननायक-जय महावीर।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

यह दुनियाँ तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल-व्याकुल तरस रहे॥
अर्पण यह जल मिले कृपा-जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।
मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों॥

अर्पण चंदन त्रिशलानन्दन, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संतारतापविनाशनाय चंदनं...।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव-गतियाँ॥
पुंज चढ़ाएँ शिव पद पाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बनें हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में वसता॥
पुष्प चढ़ाएँ काम नशाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी नमक से कभी नीर से, कभी छका-छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटे नैवेद्य चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनूँ ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली-भली॥
मोह मिटाने दीप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सम्यक् तप बिन राख हुए पर, कर्म झुलस भी ना पाए।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आए॥

जगत्-भूप को धूप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही।
हमें वही संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ाएँ हम फल भी॥
मिले मोक्ष फल अर्पण ये फल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुर धाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आए वीर महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।

शासन नायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिए दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीरजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला-१

(ज्ञानोदय)

जिनशासन की अनादिधारा, तीर्थंकर प्रभु चला रहे।
भव्य-जीव तो इस धारा में, निज को धुला रहे॥
तीर्थंकर चौबीस जिनेश्वर, समय-समय पर जन्म धरें।
वृषभनाथ से महावीर तक, जिनशासन को धन्य करें॥१॥
अंतिम प्रभु श्री वर्धमान जी, वर्तमान जिननायक हैं।
जिनके शासन तीर्थकाल में, आज तत्त्व सुख दायक हैं॥
आओ! उनकी कथा कहें जो, पंचम बालयतीश रहे।
माँ त्रिशला सिद्धार्थ राज के, श्री नंदन जगदीश रहे॥२॥
जी हाँ! ये वो ही स्वामी जो, पुत्र भरत चक्री के थे।
जीव भील का बना मरीचि, नाती वृषभनाथ के थे॥
गुरु-भक्ति से वृषभनाथ के, साथ बने मुनि दीक्षा ली।
लेकिन परिषह सह न सके सो, मिथ्यामत की शिक्षा ली॥३॥
परिव्राजक की दीक्षा लेकर, मिथ्यापथ आसीन हुए।
कल्पित आदिक तत्त्व रचाकर, जन्म-मरण लवलीन हुए॥

किन्तु सिंह के जीवन में, जब मुनियों का उपदेश सुना।
सिंह प्राप्त कर सम्यग्दर्शन, सिंहकेतु सुरदेव बना॥४॥
कनकोज्ज्वल सुर हरिषेण सुर, प्रियमित्र सुर नंद हुआ।
जो तीर्थंकर प्रकृति बाँध के, सल्लेखन कर इन्द्र हुआ॥
सोलह सपने देकर जिनके, गर्भ जन्म कल्याण हुए।
शचि ने सम्यग्दर्शन पाया, जन्मों के अभिषेक हुए॥५॥
नाम **वीर** श्री **वर्धमान** रख, देवराज के नृत्य हुए।
संजय विजय वीर दर्शन कर, मुनि जब निःसंदेह हुए॥
तो फिर **सन्मति** नामकरण कर, बाल्यकाल के खेल हुए।
संगम सुर से **महावीर** का, नाम प्राप्त कर ख्यात हुए॥६॥
तीस वर्ष के कुमारकाल को, व्यतीत कर भव भोग तजे।
नहीं सुहाई हल्दी मेंहदी, विवाह मण्डप भी न सजे॥
ज्यों वैराग्य हुआ त्यों ही तो, तप कल्याणक पर्व हुआ।
कूलग्राम के कूलराज के, खीर पारणा हर्ष हुआ॥७॥
उज्जयिनी में महारुद्र ने, महा घोर उपसर्ग किए।
हार मानकर **महावीर** वा, **महतिपूज्य** दो नाम दिए॥
साँकल बँधी चंदना ने फिर, किया वीर का ज्यों दर्शन।
बन्धन टूटे तो वीरा का, करे चंदना पड़गाहन॥८॥
विधिपूर्वक आहार दान दे, पर्व चंदना ने पाए।
बारह वय छद्मस्थ विताकर, केवलज्ञान प्रभु पाए॥
किन्तु हुई ना दिव्यदेशना, तब गौतम को ज्ञान मिला।
मुनि बन प्रथम बने गणधर जो, कुल ग्यारह का साथ मिला॥९॥
बनी चंदना प्रथम आर्यिका, समवसरण की सभा सजी।

विपुलाचल पर दिव्यध्वनि दे, समवसरण की सभा तजी॥
तीस वर्ष कैवल्यकाल फिर, योगनिरोध किए स्वामी।
पावापुर के सरवर से फिर, मोक्ष गए अंतर्यामी॥१०॥
कार्तिक कृष्ण आमवस प्रातः, प्रभु निर्वाण पधारे थे।
हुआ मोक्ष कलयाणक उत्सव, लाडू भक्त चढ़ाए थे॥
उसी शाम को गौतम गणधर, केवलज्ञान प्रकट करते।
सो संध्या में दीप जलाकर, घर-घर दीपोत्सव करते॥११॥
तब से चले वीरशासन यह, हम सबका उद्धार करे।
भव-भव तक हम ऋणी रहेंगे, हम पर प्रभु उपकार करें॥
ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि पाएँ, पर्व दशहरा दीवाली।
'विद्या' के 'सुव्रत' यह चाहें, मिले सभी को खुशहाली॥१२॥

(सोरठा)

महावीर भगवान, हम भक्तों के प्राण हैं।
करते नमोस्तु ध्यान, होते निज कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला-२

(विष्णु)

बार-बार नर जीवन पा के, व्यर्थ गवाँ डाले।
हे प्राणी! अब महावीर के, कुछ तो गुण गाले॥
भाव भक्ति से गद्‌गद् होकर, प्रभु से नेह लगा।
प्रभु-कृपा से रत्नत्रय से, अपनी देह सजा॥१॥
जन्म समय अभिषेक हुआ तो, शंकित इन्द्र हुआ।
नन्हा सा बालक जलधारा, कैसे सहे मुआ॥
वीर! ज्ञान से जान मेरु को, दबा दिए थोड़े।

रखा इन्द्र ने **वीर** नाम तब, पूजन को दौड़े॥२॥
जब से त्रिशला माता के तुम, वसे गर्भ आके।
हुआ सदा सम्पन्न तभी से, राज्य तुम्हें पाके॥
दिन दुगुणी वा रात चौ गुणी, वर्द्धित प्रजा हुई।
नाम आपका **वर्द्धमान** तब, रखकर खुशी हुई॥३॥
संजय विजय मुनि ऋद्धिधारी, जिज्ञासा लाए।
तत्त्व ज्ञान का समाधान बस, तुम्हें देख पाए॥
और खुशी से नाम आपका, **सन्मति** रख डाले।
धन्य! धन्य! हे त्रिशला नन्दन!, सबके रखवाले॥४॥
खेल-खेल में चढ़े वृक्ष पर, जब सन्मति प्यारे।
संगम देव साँप बनकर तब, सबको फुसकारे॥
सब साथी तो डर भागे पर, वीर चढ़े सिर पर।
महावीर तब नाम देव ने, रखा प्रशंसा कर॥५॥
हुआ एक उत्पाती हाथी, वश में नहीं रहा।
इसे वीर! वश करने निकले, माना नहीं कहा॥
देख वीर को नतमस्तक गज, सूँड उठा डाला।
तभी नाम **अतिवीर** आपका, जग ने रख डाला॥६॥
पाँच-पाँच नामों के धारी, शासननायक हो।
जय हो! जय हो! नाथ आपकी, सबके पालक हो॥
पंचम गति का हमें लाभ हो, एसी करो कृपा।
हमें क्षमा कर अपना लो अब, मन की हरो व्यथा॥७॥
बस इतना आशीष हमें दो, हम भी वीर बनें।
वर्द्धमान बन महावीर बन, सन्मति रूप सनें॥

बन अतिवीर करें मन वश में, नशे रात काली।
अपने भी हों दिवस दशहरा, रातें दीवाली॥८॥

(दोहा)

भक्ति सहित हमने किया, पूजन वा गुणगान।
अपनी भी जयमाल हो, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली पूजन

(दोहा)

आदिनाथ को नमन कर, भरत प्रभु को ध्याऊँ।
बाहुबली को सिर झुका, पूजा साथ रचाऊँ॥

(ज्ञानोदय)

आदि प्रवर्तक आदिनाथ ने, पथ दे जीना सिखा दिया।
चक्री भरतदेव ने चक्कर, कर्म चक्र का छुड़ा दिया॥
बाहुबली ने बाहुबली हो, कर्म शत्रु को हरा दिया।
इन्हें विराजित करके मन में, मैंने माथा झुका दिया॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रा! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

आधा जीना आधा मरना, नाथ! यही अभिशाप हरो।
पूरा जीना पूरा मरना, मुझे सिखा दो पाप हरो॥
जनम मरण का मरण करा दो, प्रासुक नीर समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

क्रोध आग जब क्षमा नीर से, बुझे तभी चित शीतल हो।
आतम बगिया महक उठे फिर, संयम का पथ मंगल हो
क्रोध आग हर क्षमा नीर दो, चंदन तुम्हें समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जड़ को चेतन चेतन को जड़, बहिरातम बनके माना।
परमातम अन्तर आतम का, अन्तर अब तक ना जाना

भेद ज्ञान अब मुझे करा दो, तंदुल पुंज समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

इन पुष्पों ने भगवन् मेरा, चैन छीन बेचैन किया।
काम रोग की व्यथा बढ़ाकर, फिर व्याकुल दिन रैन किया
जिन बनकर मैं काम नशाऊँ, जीवन पुष्प समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोग मुझे हर समय भोगते, मैं क्या भोगूँ भोगों को।
लेकिन भोगों की इच्छा से, बढ़ा रहा भव रोगों को
ज्ञानामृत दो क्षुधा नशाऊँ, ये नैवेद्य समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

सूर्य नाम सुनते ही जग में, अंधकार दादा भागें।
वैसे ही प्रभु नाम सुनें तो, मोह नींद से उठ जागें
आतम का मैं दीप जलाऊँ, प्रभु पद दीप समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कब तक मुझको धूप जलाना, तथा धूप में जलना है।
कब चिन्मय सा रूप सजा के, मुक्तिरमा से मिलना है
धूल उड़ा दो मम कर्मों की, अनुपम धूप समर्पित है।

आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जैसे फल पेड़ों से जुड़कर, बनते सरस मधुर मीठे।
वैसे मुझको जोड़े रखना, अपने चरणों से नीके
महा मोक्षफल चरण आपके, ये फल जिन्हें समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

रत्नों जैसा अर्घ्य न मेरा, सुर छन्दों मय वचन नहीं।
भाव भक्ति भी दिखा न सकता, गुण गाने का यतन नहीं
फिर भी अनर्घपद को पाने, सादर अर्घ्य समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री त्रयजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

आदि-भरत-बाहुबली, प्रथम किए कल्याण।
जिनकी महिमा गीत को, गाऊँ मैं धर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

रोटी कपड़ा मकान को जग, दुखी-दुखी मर मार रहा।
कल्पवृक्ष जब खो बैठा तो, करता हा-हाकार रहा॥
तब आदीश्वर ने शिक्षा दे, भक्तों पर उपकार किया।
कृषी करो या ऋषी बनो ये, भव्यों को उपहार दिया॥१॥
असि मसि आदिक षट्कर्मों का, दिया दिया वरदान दिया।
ब्राह्मी और सुन्दरी दोनों, कन्याओं को ज्ञान दिया॥
प्रजा व्यवस्थित करके तुमने, धारा था वैराग्य महा।

खोले धर्म द्वार इस युग में, आदिम जिनवर बने यहाँ॥२॥
मोक्षमार्ग बतलाया चलके, षट्-आवश्यक भी पाले।
इसीलिए हे पागल मनवा, जिनवर के गुण तू गा ले॥
आदिनाथ के पुत्र भरत जो, बने चक्रवर्ती पहले।
चौथा वर्ण बना के जग में, राज्यों की जय को निकले॥३॥
चक्र चला के जय पाई पर, हुआ न वापिस चक्र जहाँ।
तब गुस्सा आई चक्री को, दुश्मन मेरा कौन यहाँ॥
मेरी जिसे दासता अथवा, ये सत्ता स्वीकार नहीं।
तब पाए लघु भ्राता अपने, जिसने मानी हार नहीं॥४॥
तभी भरतजी बाहुबली को, हार दिलाना ज्यों सोचे।
जल्ल मल्ल फिर दृष्टि युद्ध में, हारे भरत चक्र फैंके॥
परिक्रमा कर चक्र रुका तब, लज्जित हुए भरत हारे।
बाहुबली फिर वैरागी बन, राज-पाट त्यागे सारे॥५॥
एक साल तक उपवासी बन, ध्यान किया उपसर्ग सहा।
लेकिन केवलज्ञान हुआ ना, हाय! हाय! यह कर्म कथा॥
भरत भ्रात ने तब जाकर के, जैसे क्षमा याचना की।
बाहुबली निर्विकल्प बने तब, अपनी पूर्ण साधना की॥६॥
केवलज्ञानी बनकर स्वामी, श्री कैलाशधाम पहुँचे।
बाहुबली जी आदिनाथ से, पहले मोक्ष धाम पहुँचे॥
केवलज्ञान शीघ्र उपजा के, भरत बने शिवपुर वासी।
आदिनाथ फिर मोक्ष पधारे, मैं तीनों का पद वासी॥७॥
तीन-तीन प्रभुओं की अर्चा, मैंने साथ रचा डाली।
इसका फल बस इतना पाऊँ, रात दिवस हो दीवाली॥

राग द्वेष औ मोह तीन ये, दोष सभी मम नाथ हरो।
रत्नत्रय से मुझे सजाकर, 'सुव्रत' के सब पाप हरो॥८॥

(दोहा)

त्रय योगों को शुद्ध कर, गाए ये गुणगान।
इसके फल से कण्ठ मम, प्रभु से हो स्वरवान॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शान्ति शान्तिधारा करें, करें शान्ति चहुँ ओर।
पुष्पांजलि से हो रहे, भक्त करल के भोर॥

(शान्तये शान्तिधारा...पुष्पांजलिं...)

श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ को, नमोऽस्तु बारम्बार।
पूजा के पहले करें, शीश झुका सत्कार॥

(ज्ञानोदय)

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेश्वर, तीन-तीन पद के धारी।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, क्रम-क्रम से जग हितकारी॥
पूजा करने भाव बनाए, द्रव्य सजाए मनहारी।
हृदय कमल पर आन विराजो, तीनों भगवन उपकारी॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रा! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जीवन की जो रही परीक्षा, नाम उसी का मरण रहा।
जनम बुढ़ापा उसके साथी, इनसे काई नहीं बचा॥
सफल परीक्षा में होने को, प्रासुक जल यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

तपकर कंचन कंचन सा हो, हार गले का बन चमके।
किन्तु नाथ! हम भवाताप से, आज तलक तो ना चमके
ताप हरें कुन्दन से चमकें, सो चंदन यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

ऊँचाई पर जाना हो तो, सूर्य ताप सहना होगा।
शाश्वत पद को पाना हो तो, सम्यक् तप करना होगा
सम्यक् तप कर शाश्वत बनने, उज्ज्वल अक्षत अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान...।

छेद काष्ठ में कर सकता पर, भ्रमर फूल में फँस मरता।
त्यों चेतन सुख वाला है पर, काम व्यथा से दुख सहता
ब्रह्मचर्य सौरभ महकाने, पुष्प पुंज यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी पेट को कभी जीभ को, कभी मनोगत इच्छा को।
पापी बन जाती है दुनियाँ, भूल आपकी शिक्षा को
क्षुधा मिटाने नैवेद्यों की, श्रेष्ठ भेंट यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

असुरक्षित दीपक ज्यों बुझते, आँधी तूफानों द्वारा।
त्यों ही तुम बिन हम भक्तों के, जीवन में है अँधयारा
उजयारा तुम सम पाने को, जगमग दीपक अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो धुँआ राख के, साथ सुगंधी भी फैले।
पर कर्मों की रज से हम तो, सदा रहे मैले-मैले
नाथ! आपकी पद रज पाने, धूप सुगंधी अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

नहीं परीक्षा से हम डरते, किन्तु कटुक फल से डरते।
मधुर-मधुर फल पाएँ खाएँ, यह इच्छा भी ना रखते
लेकर दीक्षा मुक्ती पाने, प्रासुक फल यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

दुनियाँ में जड़ वस्तु पाके, हमने उनका मूल्य किया।
किंतु आप ने इन्हें त्यागकर, निज चेतन बहुमूल्य किया॥
हम भी हों बहुमूल्य आप सम, अतः अर्घ्य यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, गर्भों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो गर्भमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, जन्मों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो जन्ममङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, दीक्षा के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः तपोमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, ज्ञानों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो ज्ञानमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, मोक्षों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

तीनों पदधारी रहे, शान्ति-कुन्थु-अरनाथ।
जयमाला के पूर्व में, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्तिनाथ की, जग के शान्ति प्रदाता की।
जय हो! जय हो! कुंथुनाथ की, सबके आश्रयदाता की॥
जय हो! जय हो! अरहनाथ की, ऋद्धि-सिद्धि सुख दाता की।
शान्तिकुन्थुअरनाथ जिनेश्वर, जय हो! भाग्य विधाता की॥१॥

कामदेव चक्री तीर्थंकर, तीन-तीन पदवी धारी।
कामदेव के रूप जन्म ले, दुनियाँ मोहित की सारी॥
जिनको देख युवतियाँ नारीं, निज शृंगार भूलती थीं।
गोदी में बच्चे उल्टे ले, भोजन पान भूलती थीं॥२॥

षट्खण्डों के अधिपति बनकर, शौर्य पराक्रम दिखा दिए।
जिससे दुश्मन राजाओं के, जग में छक्के छुड़ा दिए॥
चौदह रत्न नवोनिधि पाई, छ्यानवें हजार रानी थीं।
चक्ररत्न पा चक्रवर्ति हो, ली दीक्षा कल्याणी भी॥३॥

तीर्थंकर हो धर्मचक्र से, समवसरण को सजा दिया।
कर्मचक्र को नष्ट किया फिर, मुक्तिवधू को रिझा लिया॥
तीन लोक के उच्च शिखर पर, नाथ! विराजे हैं जाकर।
हम तो वहाँ न जा सकते सो, करें अर्चना गुण गाकर॥४॥
अब तो केवल यही प्रार्थना, शान्तिप्रभु दो शान्ति हमें।
कुन्थुनाथ जी करुणा कर दो, अरहनाथ दो मुक्ति हमें॥
है विश्वास आश भी पूरी, हमको आप निहारोगे।
आज नहीं तो कल या परसों, हम भक्तों को तारोगे॥५॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्ति-कुंथु-अर प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, शान्ति-कुन्थु-अर राय॥

(पुष्पांजलिं...)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री त्रयजिनेन्द्राय नमो नमः।

===

पंच बालयति तीर्थंकर पूजन

स्थापना (दोहा)

पाँचों बालयतीश प्रभु, वासपूज्य मल्लीश।
नेमि पार्श्व अतिवीर को, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

चौबीसों तीर्थंकर करते, पूर्ण चार पुरुषार्थों को।
किन्तु मिले हैं काल दोष से, पंच बालयति भक्तों को॥
यद्यपि यह अपवाद नियम का, पर आदर्श लगे हमको।
पाँचों बाल ब्रह्मचारी की, अतः रचाएँ पूजन को॥

(दोहा)

श्रद्धासन पर आ वसो, पाँचों बाल यतीश।
बाल ब्रह्म में रम सकें, दो ऐसा आशीष॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जन्म नदी के मरण तटों से, इच्छा सागर भर न सका।
किन्तु हुआ खारा अति खारा, जिससे अपना शौर्य थका॥
जन्म मरण दुख प्रभु सा हरने, प्रासुक जल की धार करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

कभी मिलन का राग जलाएँ, कभी वियोग भरी पीड़ा।
ऐसे में क्या शान्ति मिलेगी, मिले द्वेष की बस क्रीड़ा॥
प्रभु सम हम भी इसे त्यागने, चंदन जल की धार करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

राज-पाठ सब पड़ा रहेगा, जब यमराज पुकारेगा।
साथ निभाएगा ना बेटा, कब निज रूप निहारेगा॥
प्रभु सम आतम वैभव पाने, अखंड अक्षत पुंज धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

काम भोग से मूर्छित होकर, अपना शील जला डाला।
अहो! व्याह बन्धन अपनाकर, निज पुरुषत्व गवां डाला॥
प्रभु सम निज रमणी अब वरने, प्रभु चरणों में पुष्प धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कण-कण भक्षण करके भी यह, भूख न संयम बिन मिटती।
बना बना सब खा डाला पर, आश न निज रस की दिखती॥
प्रभु सम निज के रसास्वाद को, सादर यह नैवेद्य धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

स्वारथ के रिश्ते नातों में, भेद ज्ञान की आँख मुंदी।
सो अज्ञान अंधेरा फैला, दर-दर भटके स्वयं सुधी॥
प्रभु सम निज का दर्शन करने, करें आरती दीप धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मचन्द ने धर्मचन्द के, स्वछन्द होकर पथ रोके।
किं-कर्त्तव्य-विमूढ़ हुए हम, पाए बस केवल धोखे॥
निजानन्द हम प्रभु सम पाने, आज समर्पण धूप करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोगों के संग्रह रक्षण में, अस्त व्यस्त अभ्यस्त रहे।
इन भोगों का फल क्या होगा, मात्र भोग में मस्त रहे॥
तजें भोग के योग आप सम, मिले मोक्ष फल भेंट करें।.
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

मूल्यवान जग का यह वैभव, क्षणिक सुखी भर कर सकता।
किन्तु अनन्त सुखी बनने यह, तजने की आवश्यकता॥
दयानिधे! निज शक्ति प्रकट हो, अतः अर्घ्य यह भेंट करें॥
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

पंच बालयति नाथ के, गर्भों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो गर्भमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, जन्मों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो जन्ममङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, दीक्षा के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः तपोमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, ज्ञानों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो ज्ञानमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, मोक्षों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पंचबालयतिजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रभो, तीर्थंकर जी पाँच।
कामजयी जयमालिका, रे मन गाके नाँच॥

(ज्ञानोदय)

तीर्थंकरों की कथा कहानी, हम तुम अच्छे से जाने।
जिनके शुभ चारित्र श्रवण कर, अपनी आतम पहचाने॥
ये सारे ही तीर्थंकर जी, पूर्ण चार पुरुषार्थ किए।
लेकिन हुए पाँच कुछ ऐसे, जो बस दो पुरुषार्थ किए॥१॥
वासुपूज्य प्रभु मल्लिनाथ हैं, नेमि पार्श्व प्रभु वीरा वे।
सिद्धांतों के अपवादी पर, हमको लगते हीरा से॥
राज-पाठ न रुचे इन्हीं को, बन बैठे भव वीरा हैं।
लगी न मेंहदी चढ़ी न हल्दी, सचमुच ये तो हीरा हैं॥२॥
जगतपूज्य हैं वासुपूज्य प्रभु, पूज्य बनाएँ भक्तों को।
शुद्धातम का पथ दिखला दें, विषयों के आसक्तों को॥
मोहमल्ल की शल्य मिटा के, निज-पर मोहित हो बैठे।
भक्तों का मन मोह लिया हम, तुम पर मोहित हो बैठे॥३॥
राजुल का दिल तोड़ नेमि ने, मुक्तिवधू से राग किया।
दया अहिंसा धर्म पालने, विषयों का सुख त्याग दिया॥
भय उपसर्ग विजेता बन के, कमठ शत्रु तक तार दिए।
वज्र पुरुष पारस को हम तो, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥४॥

वर्तमान के वर्धमान हैं, शासननायक वीरा रे।
नाँव हमारी ना थामी तो, हम तो हुए अधीरा रे॥
आप बिना यह सकल विश्व तो, ब्रह्मचर्य बिन सुलग रहा।
बाल-ब्रह्मचारी साधक का, उत्सव जग से विलग रहा॥५॥
अतः आपसे यही प्रार्थना, जिसे भक्त बस कह सकता।
विश्वशान्ति को पुनः आपकी, परम-परम आवश्यकता॥
आप तथा सिद्धांत आपके, सबको पार लगाएंगे।
'सुव्रतसागर' गुरु 'विद्या' बिठा ले, निकट आपके आएंगे॥६॥

(सोरठा)

पाँचों बाल यतीश, करके नमोऽस्तु हम भजें।
पाके प्रभु आशीष, आत्म ब्रह्म से हम सजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पंचबालयति प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पंच बालयतिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

उन्हें जिनके
तन-मन नग्न हैं
मेरा नमन!

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अरिहन्त सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नन्दीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-सम्बन्धिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपंचाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पंचमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-

तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।
ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे.... मध्यप्रदेशे...जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे....मुनि-आर्यिकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अरिहन्त शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥

हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===